घट रामायण

तुलसी साहब (हाथरस वाले) की

भाग १

मुद्रक एवं प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,

इलाहाबाद

[...न् १९८१ ई०] [मूल्य १०) रु०

...ted at—Belvedere Printing Works, Allahabad, by Sheel Mohan

घट रामायण

॥ भाग १ ॥

सतगुरु तुलसी साहिब (हाथरस वाले)
की रची हुई

———:०:———

यह ग्रन्थ दो प्रमाणिक लिपियों का मिलान
करके बड़ी शुद्धता से दो भागों में
पूरा पूरा छापा गया है।
जीवन-चरित्र
सहित

प्रकाशक
बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद

[मूल्य १०)
सन् १९८० ई०
दसवीं बार]

Printed at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By Sheel Mohan.

तुलसी साहिब का जीवन-चरित्र

सतगुरु तुलसी साहिब जिनको लोग साहिबजी भी कहते थे जाति के दक्षिनी ब्राह्मन राजा पूना के युवराज यानी बड़े बेटे थे जिनका नाम उनके पिता ने श्यामराव रक्खा था। बारह बरस की उमर में उनकी मरजी के खिलाफ पिता ने उनका विवाह कर दिया पर वह जवान होने पर भी ब्रह्मचर्य में पक्के और अपनी स्त्री से अलग रहे। उनकी स्त्री जिसका नाम लक्ष्मीबाई था पूरी पतिव्रता थीं और अपने पति की सेवा दिलजान से बराबर करती थीं। आखिर में एक दिन जब कि उनके पति किसी भारी सेवा पर बड़े प्रसन्न हुए और उनसे बर माँगने को कहा तो उन्होंने अपनी सास की सीख के अनुसार यह बर माँगा कि मुझे एक पुत्र हो। साहिबजी ने कहा बहुत अच्छा और दस महीने पीछे बेटा हुआ।

साहिबजी के पिता भी बड़े भक्त थे और अब इनकी इच्छा हुई कि उनको राजगद्दी देकर आप एकान्त में रहकर मालिक की बंदगी करें परन्तु उनको हजार समझाया वह किसी तरह राजी न हुए और अपने पिता से बैराग और मुक्ति की ऐसी चरचा की कि उनको जवाब न आया, फिर भी वह इनके राजगद्दी पर बैठने की तैयारी करते रहे। जब गद्दी पर बैठने को एक दिन बाकी रहा तो साहबजी अपने पिता से मिलने बाग को थोड़े से सवारों के साथ जो उनकी निगरानी के लिए तैनात थे गये और वहाँ से आगे हवा खाने के बहाने एक तेज तुर्की घोड़े पर सवार होकर निकल गये। जब शहर-पनाह के पास पहुँचे तो मौज से ऐसी आंधी उड़ाई कि घोर अंधकार छा गया जिसकी ओट में वह घोड़ा भगा कर अपने साथियों से अलग हो गये। राजा ने यह खबर सुन कर इनकी खोज के लिये चारों ओर देश बिदेश आदमी व सवार दौड़ाये पर जब कहीं पता न लगा तो अति उदास व निराश होकर राज्य को त्याग किया और अपने छोटे कुँवर बाजीराव को गद्दी पर बैठाया।

तुलसी साहिब कितने ही बरस तक जंगलों, पहाड़ों और दूर-दूर शहरों में घूमे और हजारों आदमियों को उपदेश देकर सत्य मार्ग में लगाया और कई बरस पीछे जिला अलीगढ़ के हाथरस शहर में आकर पक्के तौर पर ठहरे और वहाँ अपना सत्संग जारी किया।

घर से निकलने के बयालीस बरस पीछे वह अपने छोटे भाई राजा बाजीराव से बिठूर (जिला कानपुर) में मिले थे जहाँ कि बाजीराव गद्दी से उतारे जाने पर सम्वत् १८७६ में भेज दिये गये थे। इसका हाल "सुरत बिलास" ग्रंथ में इस तरह लिखा है कि साहिबजी गंगा के तट पर रम रहे थे कि एक शूद्र और ब्राह्मन में झगड़ा होते देखा। ब्राह्मन गंगाजी के तट पर संध्या करता था और शूद्र नहा रहा था। शूद्र की देह से जल का छींटा ब्राह्मन पर पड़ा जिससे वह क्रोध में भर आया और उठ कर शूद्र को गाली देने और मारने लगा। साहिबजी के पूछने पर उसने सब हाल कहा और बोला कि इस शूद्र ने जल की छींट अपने बदन से उड़ाकर मुझे अपवित्र कर दिया और अब मेरे पास दूसरी धोती भी नहीं है कि फिर नहा कर पहरूँ और पूजा खतम करूँ। साहिबजी ने समझाया कि तुम्हारे ही शास्त्र के अनुसार गङ्गा और शूद्र दोनों एक ही पद से याने विष्णु के चरन से निकले हैं फिर क्यों एक को पवित्र और दूसरे को अपवित्र मानते हो! यह सुनकर ब्राह्मन लज्जित हुआ।

घाट पर जो लोग जमा थे उनमें से राजा बाजीराव के एक पण्डित ने साहिबजी को पहिचान लिया क्योंकि इनका अति सुन्दर और मोहनी रूप जिस किसी ने एक बार भी दरशन

किया उसकी आँखों में समा जाता था। उसने तुरन्त राजा को खबर भेजी कि आप के भाई आये हैं। राजा नंगे पाँव दौड़े और साहिब जी के चरनों पर विलाप करते हुए गिरे और बड़े आदर भाव से सुखपाल पर बैठाकर घर लाये और चाहा कि उनको वहीं रक्खें पर वह एक दिन वहाँ से भी चुपचाप चलते हुए।

सुरत बिलास में तुलसी साहिब के देशाटन समय के कितने ही चमत्कार लिखे हैं जैसे रोगियों को आरोग्य कर देना, मुर्दों को जिला देना, अंधों को आँख, निर्धन को धन और बाँझ को सन्तान देना इत्यादि, जिनके विस्तार की यहाँ आवश्यकता नहीं है। ऐसी कथायें महात्माओं की महिमा बढ़ाने के लिये लोग अक्सर गढ़ लेते हैं। संत यद्यपि सर्ब समरथ हैं पर वह कभी सिद्धि शक्ति नहीं दिखलाते और अपनी ऊँची गति को गुप्त रखते हैं। हमारे मन में तो सब कथाओं में यह हाल जो प्रसिद्ध है अधिक बैठता है कि एक साहूकार ने आपका बड़ा सत्कार किया और भोग लगाते समय यह बरदान माँगा कि मुझे दया से एक पुत्र बख्शा जाय। तुलसी साहिब ने अपना सोंटा उठाया और यह कह कर चलते हुए कि लड़का अपने सगुंन इष्ट से माँग, संतों की दया तो यह है कि अगर उनके दास के औलाद मौजूद भी हो तो उठा लें और अपने दास को निर्बन्ध कर दें।

तुलसी साहिब के उत्पन्न होने का सम्बत् सुरत बिलास में नहीं दिया है पर यह लिखा है कि उन्होंने अनुमान अस्सी बरस की अवस्था में जेठ सुदी २ विक्रमी सम्बत् १८९९ या १९०० में चोला छोड़ा। इससे उनके देह धारण करने का समय सम्बत् १८२० के लगभग ठहरता है। हाथरस में उनकी समाध मौजूद है और बहुत से लोग वहाँ दर्शन को जाते हैं और साल में एक बार भारी मेला होता है।

यद्यपि इनको इस संसार से गुप्त हुए ७० बरस से कम हुए हैं पर उनके अनुयाइयों ने न जाने किस मसलहत से उनके जीवन समय को ऐसी भूल भुलैयाँ में डाल रक्खा है कि लोग उसे सैकड़ों बरस समझते हैं। मुन्शी देवीप्रसाद साहिब ने भी जो अब इस मत के आचार्य कहे जाते हैं घट रामायण की भूमिका में इस भ्रम को दूर करने की कोशिश नहीं की है। हमने इस मत के कई साधुओं और गृहस्थों से तुलसी साहिब का जीवन समय पूछा तो उन्होंने एक मुँह होकर अब से साढ़े तीन सौ बरस पहले बताया जो कि गोसाइं तुलसीदास जी जक्त-प्रचलित सर्गुन रामायण के करता का समय है। तुलसी साहिब ने निस्संदेह घट रामायण के अंत में फरमाया है कि पूर्व जन्म में आपही गोसाँई तुलसीदास जी के चोले में थे और तब ही घट रामायण को रचा परन्तु चारों ओर से पंडितों भेषों और सर्व मत वालों का भारी विरोध देख कर उस ग्रंथ को गुप्त कर दिया और दूसरी सगु॑न रामायण उसकी जगह समयानुसार बना दी। इससे यह नतीजा साफ तौर पर निकलता है कि घट रामायण को तुलसी साहिब ने जब दूसरा चोला अनुमान एक सौ चालीस बरस पीछे धारन किया तब प्रकट किया न कि पहले चोले से। सवाल यह है कि कोई संत तुलसी साहिब के नाम के पिछले सत्तर पछत्तर बरस के अंदर हाथरस में उपस्थित थे या नहीं जो वहाँ सतसंग कराते थे और उपदेश देते थे, और जहाँ उनकी समाधि अब तक मौजूद है? हमको इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसे महापुरुष अवश्य थे क्योंकि हम आप उनकी समाधि का दर्शन कर आये हैं और दो प्रमानिक सतसंगी अब तक मौजूद हैं जिन्होंने अपने लड़कपन में तुलसी साहिब के दर्शन किये थे और उनमें से एक को तुलसी साहिब ने अपनी घट रामायण आप दिखलाई थी।

तुलसी साहिब के मत वाले उनकी महिमा समझकर इस बात पर बड़ा जोर देते हैं कि महाराज ने कोई गुरु धारन नहीं किया और उनके प्रमान में यह कड़ी पेश करते हैं—

"एक बिधी चित रहूँ सम्हारे। मिलै कोइ संत फिरौं तिस लारे।"

यह कड़ी तुलसी साहिब के "पूर्व-जन्म के चरित्र" में पहिली चौपाई की बीसवीं कड़ी है और उसी के दो पन्ने आगे "बरनन भेद संत मत" में पहिला सोरठा लोगों की इस बहस का खंडन करता है—

"तुलसी संत दयाल, निज निहाल मो को कियौ ॥
लियौ सरन के माहिं, जाइ जन्म फिर कर जियौ ॥"

इसमें सन्देह नहीं कि तुलसी साहिब स्वयं संत थे जिनको गुरु धारन करने की जरूरत न थी लेकिन मरजादा के लिये किसी को नाम मात्र को अवश्य गुरू बना लिया होगा जिसके लिये संत सतगुरु कबीर साहिब और समस्त संतों की नजीर मौजूद है।

तुलसी साहिब अक्सर हाथरस के बाहर एक कम्बल ओढ़े और हाथ में डंडा लिये दूर-दूर शहरों में चले जाया करते थे। जोगिया नाम के गाँव में जो हाथरस से एक मील पर है अपना सतसंग जारी किया और बहुतों को सत्य मार्ग में लगाया।

इनकी हालत अक्सर गहरे खिंचाव की रहा करती थी और ऐसे आवेश की दशा में धारा की तरह ऊँचे घाट की बानी उनके मुख से निकलती, जो निकटवर्ती सेवक उस समय पास रहा उसने जो सुना-समझा लिख लिया नहीं तो वह बानी हाथ से निकल गई। इस प्रकार के अनेक शब्द उनकी शब्दावली में हैं।

तुलसी साहिब के अनुयाई अब तक हजारों आदमी हिन्दुस्तान के शहरों में मौजूद हैं। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ घट रामायण और शब्दावली और रत्नसागर हैं।

तुलसी साहिब ने अपनी बानी में बहुत जगह बेद कतेब कुरान पुरान राम रहीम और प्रचलित मतों का खोल कर खंडन किया जिससे लोग उन्हें निंदक और द्रोही समझते हैं पर यह उनकी अनसमझता की बात है। तुलसी साहिब के पदों के अर्थ पर ध्यान देने से स्पष्ट जान पड़ता है कि उन्होंने किसी मत को झूठा नहीं ठहराया है वरन् जहाँ तक जिसकी गति है उसको साफ तौर पर बतला दिया है। उनका अभिप्राय केवल यह है कि इष्ट सबसे ऊँचे और समस्त पिंड और ब्रह्मांड के धनियों के धनी का बाँधना चाहिये और उसी की सेवा और भक्ति करनी चाहिये, निर्मल चेतन्य देश से नीचे के लोकों के धनियों की भक्ति करने से परिश्रम तो उतना ही पड़ेगा और लाभ पूरा न उठेगा, अर्थात् भक्त का काम अधूरा रह जायगा और वह आवागवन से न छूटेगा, देर सबेर जन्म मरन का चक्कर लगा रहेगा, क्योंकि ये लोक माया के घेरे में हैं चाहे वह कितनी ही सूक्ष्म माया हो।

तुलसी साहिब (हाथरस वाले की)

घट रामायण

भाग पहिला

भेद पिंड और ब्रह्मांड का

॥ सोरठा ॥

स्रुति बुँद सिंध मिलाप, आप अधर चढ़ि चाखिया ।
भाखा भोर भियान, भेद भान गुरु स्रुति लखा ॥

॥ छन्द स्रुति सिंध ॥

सत सुरति समझि सिहार साधौ । निरखि नित नैनन रहौ ॥
धुनि धधक धीर गँभीर मुरली । मरम मन मारग गहौ ॥१॥
सम सील लील अपील पेलै । खेल खुलि खुलि लखि परै ॥
नित नेम प्रेम पियार पिउ कर । सुरति सजि पल पल भरै ॥
धरि गगन डोरि अपोर[1] परखै । पकरि पट पिउ पिउ करै ॥२॥
सर साधि सुन्न सुधारि जानौ । ध्यान धरि जब थिर थुवा[2] ॥
जहँ रूप रेख न भेष काया । मन न माया तन जुवा ॥३॥
अलि अंत मूल अतूल कँवला । फूल फिरि फिरि धरि धसै ॥
तुलसि तार निहार सुरति[3] । सैल सत मत मन बसै ॥४॥

॥ छन्द २ ॥

हिये नैन सैन सुचैन सुन्दरि । साजि स्रुति पिउ पै चली ॥
गिर गवन गोह गुहारि मारग । चढ़त गढ़ गगना गली ॥१॥
जहँ ताल तट पट पार प्रीतम । परसि पद आगे अली ॥
घट घोर सोर सिहार सुनि के । सिंध सलिता जस मिली ॥२॥
जब ठाट घाट बैराट कीन्हा । मीन जल कँवला कली ॥
अली अंस सिंध सिहार अपना । खलक लखि सुपना छली ॥३॥
अस सार पार सम्हारि सूरति । समझि जग जुगजुग अली ॥
गुरु ज्ञान ध्यान प्रमान पद चिन । भटकि तुलसी भौ मिली ॥४॥

---

(१) बिना जोड़ या गाँठ के । (२) हुआ । (३) मुन्शी देवीप्रसाद जी की पुस्तक में "तार" के आगे "पार" का शब्द भी है ।

॥ छन्द ३ ॥

अलि अधर धार निहारि निज कै। निकरि सिखर चढ़ावही ॥
जहँ गगन गंगा सुरति जमुना। जतन धार बहावही ॥१॥
जहँ पदम प्रेम प्रयाग सुरसरि। धुर गुरू गति गावही ॥
जहँ संत आस बिलास बेनी। बिमल अजब अन्हावही ॥२॥
कृत कुमति काग सुभाग कलि मल। कर्म धोइ बहावही ॥
हिये हेरि हरष निहारि घर कौ। पार हंस कहावही ॥३॥
मिलि तूल मूल अतूल स्वामी। धाम अबिचल बसि रही ॥
अलि आदि अंत बिचारि पद कौ। तुलसि तब पिव की भई ॥४॥

॥ छन्द ४ ॥

अलि पार पलँग बिछाइ पल पल। ललक पिउ सुख पावही ॥
खुस खेल मेल मिलाप पिउ कर। पकरि कंठ लगावही ॥१॥
रस रीति जोति जनाइ आसिक। इस्क रस बस लै रही ॥
पति पुरुष सेज सँवार सजनी। अजब अलि सुख का कही ॥२॥
मुख बैन कहनि न सैन आवै। चैन चौज चिन्हावही ॥
अलि संत अन्त अतन्त जानै। बूझि समझ सुनावही ॥३॥
जिन चीन्हि तन मन सुरति साधी। भवन भीतर लखि लई ॥
जिन गाइ सब्द सुनाइ साखी। भेद भाषा भिनि भई ॥४॥
अलि अलष अंड न खलक खंडा। पलक पट घट घट कही ॥
(तुलसी) तोल बोल अबोल बानी। बूझि लखि बिरले लई ॥५॥

॥ छन्द ५ ॥

अलि देख लेख लखाव मधुकर। भरम भौ भटकत रही ॥
दिन तीनि तन सँग साथ जानौ। अंत आनँद फिरि नहीं ॥१॥
जग नहिन सार असार सखि री। भ्रमत बिधि बस भौ महीं ॥
धन धाम काम न कनक काया। मूलक माया लै बही ॥२॥
येहि समझि बूझि बिचारि मन में। निरखि तन सुपना सही ॥
जम जाल जबर कराल सजनी। काल कुल करतब लई ॥३॥

सब तिरथ बरत अचार अलि री। कर्म बस बन्धन भई ॥
तुलसि तरक बिचारि तन मन। संत सतगुरु अस कही ॥४॥

॥ छन्द ६ ॥

सखि समझि सूर सहूर सुनि कै। बदन बिच सुधि बुधि गई ॥
करुँ कवन भवन उपाव बिन बस। नेक मधुकर बस नहीं ॥१॥
मिलि पाँच तीनि पचीस निसदिन। गाँठि गुन बन्धन भई ॥
भइ बिबस बस नहिं दाँव लागै। दृढ़ निमख[1] नहिं आवही ॥२॥
धरि हाथ पटकि पुकारि पिव सँग। हारि जिव सँग हटि रही ॥
कहुँ ठौर मोर न जोर चालै। आली बिपति कछु का कही ॥३॥
सुनि ज्ञान ध्यान न कान मानै। बिकल तन मन बिचलई ॥
तुलसी बिरह बेहाल[1] हिये में। मौत दिन देवै दई ॥४॥

॥ छन्द ७ ॥

सखि सीख सुनि गुनि गाँठि बाँधै। ठाट ठट सतसँग करै ॥
जब रंग संग अपंग अलि री। अंग सत मत मन मरै ॥१॥
मन मीन दिल जब दीन देखै। चीन्ह मधुकर सिर धरै ॥
अलि डगर मिलि जब सुरति सरजू। कँवल दल चल पद परै ॥२॥
थिर थोव ठुमकि टिकाव नैना। नीर थिर जिमि थम थिरै ॥
यहि भाँति साथ सुधारि मन को। पलक गिरि गगना भरै ॥३॥
लखि द्वार दृढ़ दरबार दरसै। परसि पुनि पद पिउ घरै ॥
गुरु गैल मेल मिलाप तुलसी। मन्त्र बिषधर[2] बसि करै ॥४॥

॥ छन्द ८ ॥

सखि भेद भाव लखाव लै गुरु। मरम केहि मारग मिलै ॥
जेहि जतन पतन पियास पलपल। पकरि मन केहि बिधि चलै॥१॥
गुन गोह गति मति गजब गैला। सिखरि साधन कस पलै ॥
सखि सुरति मंज समान संजम। मैल मन सँग दुख खलै ॥२॥
सुनि सुलभ लखन लखाव सजनी। दुलभ[3] दृढ़ कलिमल दलै।
मोहिं दीन लीन जो चीन्ह चेरी। तपन बिच तन मन जलै ॥३॥

---

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक में कड़ी २ में "दृढ़ निमख" की जगह "उड़नि मख", और कड़ी ४ में "बेहाल" की जगह "बिकल बेतरह" है। (२) साँप। (३) दुर्लभ।

सखि चरन सरन निवास निसदिन । दुख दवा मोहिं अब मिलै ॥
गुरु सरन मन्त्र मिलाप तुलसी । जबर सँग जुलमी टलै ॥४॥

॥ छन्द ९ ॥

जब बल बिकल दिल देखि बिरहिन । गुरु मिलन मारग दई ॥
सखि गगन गुरु पद पार सतगुरु । सुरति अंस जो आवई ॥१॥
सुरति अंस जो जीव घर गुरु । गगन बस कंजा मई ॥
अलि गगन धार सवार आई । ऐन बस गोगुन रही ॥२॥
सखि ऐन सूरति पैन पावै । नील चढ़ि निरमल भई ॥
जब दीप सीप सुधारि सजि कै । पछिम पट पद में गई ॥
गुरु गगन कंज मिलाप करि कै । ताल तज सुन धुनि लई ॥३॥
सुनि सब्द से लखि सब्द न्यारा । अलबद जद क्या कही ॥
जेहि पार सतगुरु धाम सजनी । सुरति साजि भजि मिलि रही ॥४॥
अस अलल अंड अकार डारै । उलटि घर अपने गई ॥
येहि भाँति सतगुरु साथ भेंटे । कर अली आनँद लई ॥५॥
दुख दाउ कर्म निवास निस दिन । धाम पिया दरसत वहीं ॥
सतगुरु दया दिल दीन तुलसी । लखत भै निरभै भई ॥६॥

॥ छन्द १० ॥

अलि आदि अजर दयाल सतगुरु । मर्म कहौं कहँ लगि कहूँ ॥
अस कुटिल खोट मलीन बुधि मैं । चित छली मनमत रहूँ ॥१॥
धर धोइ सतगुरु सरस साबुन । ज्ञान सिल जल मल बह्यो ॥
सखि मैल मन जस चिकट कपरा । उजल हिये अलि अस भयो॥२॥
जब आदि अटल अनादि रँग में । चटक रँग सतगुरु दयो ॥
कहुँ कौन सिफति[1] सुनाइ सजनी । अचल सलिता सिंध लह्यो॥३॥
सिंध सब्द सतगुरु सुरति सलिता । अलि मिलन अस बिधि भयो ॥
सिंध बुन्द तन मन बन बिराटा । बूझ बिन बादै बह्यो ॥४॥
जब उलटि घर अलि आदि चीन्हे । दीन दिल सतगुरु लयो ॥
अलि आदि अंत समाद समझो । बरनि बिधि जस जस कह्यो ॥५॥

---

(१) गुन ।

सखि संत सतगुरु बरनि बरनौं । भाखि समझि सुनावही ॥
गुरु चारि तन अस्थान अलि सुनि । समझि भेद लखावही ॥६॥
सखि प्रथम गुरु सुनि कँवल कंजा । सहस दल पल पावही ॥
सखि दूसर गुरु गढ़ गगन ऊपर । कँवल दुइदल गावही ॥
अलि तीनि गुरु तन माहिं पेखौ । चौकँवल स्रुति लावही ॥७॥
सतलोक चौथे चार सतगुरु । अगम सिंध कहावही ॥
जहँ सुरति सब्द मिलाप सजनी । संत वोहि घर जावही ॥८॥
सखि मूल संत दयाल सतगुरु । पिउ निहाली मोहिं करी ॥
सत सुरति सिंध सुधारि तुलसी । सार पद जद लखि परी ॥६॥

॥ छन्द ११ ॥

लख अगम भेद अलोक अलि री । संत सतगुरु मोहिं कह्यौ ॥
तिहुँ लोक से री अलोक न्यारा । पार मारग मोहिं दयौ ॥१॥
सिंध सब्द सतगुरु किरनि चेला । सुरति सब्द मिलावही ॥
सतलोक सिंध सम्हार अलि लख । मिलन समझ सुनावही ॥२॥
सखि सिंध बुन्द मिलाप सतगुरु । किरनि सुरज कहावही ॥
सखि समुंद जल जस भरत बदरा । भूमि बरस बहावही ॥३॥
अलि सिमटि नीर समीर सलिता । सिंध समझि समावही ॥
सखि सिंध बुन्द जो सिष्य सतगुरु । गवन गत मत गावही ॥४॥
सखि जलहि जल बल एक करिकै । भूमि भर्म नसावही ॥
चित चीन्ह जैसे खेल चौपड़ । जुग नरद घर आवही ॥५॥
जिमि किरनि भास निवास रबि में । गगन मर्म मिलावही ॥
अलि गगन नास अकास बिनसै । रबि रहन नहिं पावही ॥६॥
अलि सिंध सूरज ब्रह्म कहि नद[1] । किरनि जीव कहावही ॥
सब ठाट बाट बिराट बिनसै । सुरज कहँ होइ रहावही ॥७॥
सखि सुरज ब्रह्म बिनास किरनी । जब अकास नसाइये ॥
सखि सुरज कहौ केहि ठाम रहि । सोइ समझ खोज लगाइये ॥८॥

(१) नदी ।

सोइ धाम ठाम ठिकान सजनी । घर समझ जहँ जाइये ॥
नहिं और आस बिनास सबको । कोइ रहन नहिं पाइये ॥९॥
सखि नीर छीर मिलाप समुन्दर । बदर फिरि भरि लावही ॥
जल बरसि नद मिलि समुंद आवै । जाइ पुनि फिरि आवही ॥१०॥
अस जीव आवागवन माहीं । ब्रह्म जीव कहावही ॥
बस कर्म काल बिनास निस दिन । अगम घर नहिं पावही ॥११॥
अलि समुन्द आदि बुन्याद कह सोइ । सोत केहि घर गावही ॥
करि खोजि गेज बिचारि मन में । गैल गुरु सँग पावही ॥१२॥
सखि संत चरन निवास चेरी । अधर समझ सुनावही ॥
लखि सिंध बुन्द से अगम आगे । देखि समझि समावही ॥
सोइ समझ सतगुरु सार सजि के । लेख लखन लखावही ॥१३॥
जिमि धार मिलि जल मीन चढ़ि के । अधर घर धसि धावही ॥
अलि अमर लोक निवास करिके । सुख अचल जुग पावही ॥१४॥
गुरु कंज सतगुरु मंज मिलि के । अंज अमल पिलावही ॥
सज सुरति निरति सम्हार मिलि के । पिलि पुरुष पिय पावही ॥१५॥
एरी अगम दीनदयाल सतगुरु । हाल हरष निहारही ॥
तुलसिदास बिलास कहि अस । संत अज अरथावही ॥१६॥

॥ दोहा ॥

तुलसी अगम निवास, सुरति बास बस घर किया ।
पिया परम रस मूल, सो अतूल अंदर हिया ॥ १ ॥
फूली बन फुलवारि, भीतर घट के कहि कही ।
खग मृग सरवर ताल, गुरु निहाल करि लखि लई ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

तन मन ब्रह्मंड पसार, अंड अंड नौखंड लौ ।
सो घट लखन मँझार, करत सैल ब्रह्मंड की ॥ १ ॥
सतगुरु गगन गुहार, गगन मगन स्नुति मिलि रही ।
मन्दिर मगन निहार, कंज भान भिन के कही ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

भास भवन घट में लखी, सलिल कँवल के माइँ ।
पदम पार बेनी बसी, लसी अधर चढ़ि धाइ ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तोल निहार, गुरु अगम पद पदम हीं ।
कर दृग ऐन अधार, पार परस पट भवन में ॥

॥ शब्द चरचरी ॥

तुलसिदास भास भवन, देखा घट माहीं ।
लाई स्रुति सलिल कँवल, पदमन पर जाई ॥ टेक ॥
सतगुरु गिरि गगन मगन, मंदिर मानौ अजूब ।
कंजा भजि झलक भान, कोटिन छबि छाई ॥ १ ॥
बेनी मंजन अनूप, रहिनी अन्दर अरूप ।
चंदा रबि रैनि दिवस, तारे नभ नाहीं ॥ २ ॥
बरनन लखि अलख ऐन, स्याम सिखर निकर कंद ।
निरता स्रुति समझि सूर, पंकज अपनाई ॥ ३ ॥
अण्डा अंबुज अतूल, बेलि बृच्छ अधर मूल ।
फूला फल बन निवास, ललित लता छाई ॥ ४ ॥
भंवर भृंग लसि सुगंध, उरझै रस बस बिलास ।
आनंद सीतल समीर[1], सरवर तट माईं ॥ ५ ॥
जहँ जहँ दृग देखि जात, खगपति[2] कृति नभ उड़ात ।
बन बन मृग चरत जात, कोकिल करकाई ॥ ६ ॥
धरि कै धस धरन डोर, दृढ़कै चढ़ि कड़क कोक ।
धधकत धसि धधक नीर, फूटा पुल जाई ॥ ७ ॥
भाखा भीतर बयान, सज्जन सुनि समझि साथ ।
अद्‌बुद[3] अज अजर बात, संतन लखवाई ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

भान भवन घट बास, लखे अकास अन्दर गई ।
लीला गिरि चित चास, दीपक मंदिर मरम जस ॥

---

(१) वायु । (२) गरुड़ । (३) अद्‌भुत ।

॥ दोहा ॥

लखि प्रकास पद तेज, सेज गवन गढ़ गगन में ।
पति प्रिय प्रेम बिलास, तुलसिदास दस गिरा में ॥

॥ सोरठा ॥

मैं मति ऐन अयान, गुरु बयान मो को कह्यौ ।
लह्यौ गगन सोइ जान, सतगुरु मंजन पदम हीं ॥

॥ सोरठा ॥

सतगुरु अगम अपार, सार समझि तुलसी कियो ।
दया दीन निरधार, मोहिं निकार बाहिर लियो ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु संत दयाल, करि निहाल मो को दियो ।
सूरति सिन्ध सुधार, सार पार जद लखि पर्‌यो ॥

॥ सोरठा ॥

संत चरन पद धूर, मूर मरम मो को दई ।
भई निरति स्त्रुति सूर, लइ समान मन चूर करि ॥ १ ॥
मैं मति मान अपूर, क्रूर कुटिल न्यारे किये ।
हिये तिमर तन दूर, तूर तमक तन की गई ॥ २ ॥
मो मन सुरति अयान, जानि सुरति सत रीति ले ।
गहि कर संत सुजान, मान मनी मद छाँड़ि के ॥ ३ ॥
मैं मति सत सम नाहिं, पाइ पकरि लारै लई ।
सतगुरु दीनदयाल, जाल काट न्यारी करी ॥ ४ ॥
सतगुरु चरन निवास, बिमल बास बिधि लखि परी ।
धरी जो तुलसीदास, भास चमकि चढ़ि चाँप धरि ॥ ५ ॥
सतगुरु परम उदार, दल दरिद्र सब दूरि करि ।
संपति सुरति बिचार, निधि निहार सब्दै लखा ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

परथम बन्दौं सतगुरु स्वामी । तुलसी चरन सरनि रति मानी ॥
पुनि बन्दौं संतन सरनाई । जिन पुनि सुरत निरत दरसाई ॥
चरन सरन संतन बलिहारी । सुरति दीन्ही लखन सिहारी ॥

सरन सूर सूरति समझाई । सतगुरु मूर मरम लख पाई ॥
मैं मतिहीन दीन दिल दीन्हा । संत सरन सतगुरु को चीन्हा ॥
सतगुरु अगम सिंध सुखदाई । जिन सत राह रीति दरसाई ॥
पुनि पुनि चरन कँवल सिर नाऊँ । दीन होइ संतन गति गाऊँ ॥
दीन जानि दीन्ही मोहिं आँखी । मैं पुनि चरन सरन गहि भाखी ॥
मैं तौ चरन भाव चित चेरा । मोहिं अति अधम जानि कै हेरा ॥
मैं तौ प्रति प्रति दास तुम्हारा । संत बिना कोइ पावै न पारा ॥
संत दयाल कृपा सुखदाई । तुम्हरी सरन अधम तरि जाई ॥
आदि न अंत संत बिन कोई । तुलसी तुच्छ सरन में सोई ॥
जो कछु करहिं करहिं सोइ संता । सत बिना नहिं पावै पंथा ॥
मोरे इष्ट संत स्तुति सारा । सतगुरु संत परम पद पारा ॥
सतगुरु सत्तपुरुष अबिनासी । राह दीन लखि काटी फाँसी ॥
कँवलकंज सतगुरु पद बासी । सूरति कीन दीन निज दासी ॥
सूरति निरत आदि अपनाई । सतगुरु चरन सरन लौ लाई ॥
बार बार सतगुरु बलिहारी । तुलसी अधम अघ नाहिं बिचारी ॥
बन्दौं सब चर अचर समाना । जानौ तुलसी दास निदाना ॥
मैं किंकर पर दया बिचारा । अनहित प्रिये करौ हित सारा ॥
सब के चरन बन्दि सिर नाई । प्रिये लार लै प्रीति जनाई ॥
तुम प्रति भूल बंद अस गाई । बार बार चरनन सिर नाई ॥
पुनि बन्दौं सतगुरु सत भावा । जिनसे बस्तु अगोचर पावा ॥
सतगुरु अगम अरूप अकाया । जिनकी गति मति संतन पाया ॥
सतगुरु की कस करहुँ बखानी । सूरति दीन्ही अगम निदानी ॥
लख लख अलख सुरति अलगानी । संतकृपा सतगुरु सहदानी ॥
सूरति सैल पेल रस राती । सतगुरु कंज पदम मत माती ॥
तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिं जानै । सतगुरु चरन सरन रत मानै ॥
सूरति सतगुरु दीन्ह जनाई । नित नित चढ़ै गगन पर धाई ॥
सैल करै ब्रह्मंड निहारा । देखै आदि अंत पद सारा ॥

निरखा आदि अंत मधि माहीं । सोइ सोइ तुलसी भाखि सुनाई ॥
पिंड माहिं ब्रह्मंड समाना । तुलसी देखा अगम ठिकाना ॥
पिंड ब्रह्मंड में आदि अगाधा । पेली सुरति अलख लख साधा ॥
पिंड ब्रह्मंड अगम लख पाया । तुलसी निरखि अगाध सुनाया[1] ॥
पिंड माहिं ब्रह्मंड दिखाना[1] । ता की तुलसी करी बखाना ॥

॥ सोरठा ॥

पिंड माहिं ब्रह्मंड, देखा निज घट जोइ कै ॥
गुरु पद पदम प्रकास, सत प्रयाग असनान करि ॥

॥ दोहा ॥

बूझै कोइ कोइ संत, आदि अंत जा ने लखी ।
परचै परम प्रकास, जिन अकास अम्बर चखी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तोल तरास, तत बिबेक अन्दर कही ।
बूझेंगे निज दास, जिन घट परचे पाइया ॥ १ ॥
पानी पवन निवास, कँवल बास बिधि सब कही ।
जीव काल और स्वाँस, और अकास उतपति भई ॥ २ ॥
भीतर देखि प्रकास, सब ब्रह्मंड बिधि यों कही ।
रावन राम संबाद, आदि अंत निज जोइ कै ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

जो कोइ घट का परचा पावै । कँवल भेद ता को दरसावै ॥
भिन्न भिन्न कँवलन बिधि गाई । स्वाँसा भिन्न बिधी दरसाई ॥
निज निज तत्त कहेऊ मैं जानी । परखेंगे कोइ संत सुजानी ॥
मैं गति नीच कीच कर सानी । कहत लजाऊँ अगम गति जानी ॥
जो अपनी गति कहहुँ बिचारी । तौ मन मोट होत अधिकारी ॥
मैं किंकर संतन कर दासा । घट घट देखा तत्त निवासा ॥
ता की गति ग्रन्थन में गाई । बूझै जिन सत संगति पाई ॥
सूरति सार सब्द जिन पाया । दस गृह सैल जिन करी अकाया ॥

---

[1] मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "अगाध सुनाया" की जगह "परख गते गाया" और आगे की कड़ी में "दिखाना" की जगह "समाना" है।

॥ सोरठा ॥

जिन मानी परतीत, अधर रीति जा ने लखी ।
सब गति कहहुँ अजीत, सत्त बचन परमान कै ॥ १ ॥
तुलसी सब्द सम्हार, वार पार सगरी लखी ।
पकी चखी स्नुति सार, लार सब्द सूरति गई ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु पुर पद पार, ये अगार अदबुद कही ।
भौ बुधि भेष मँझार, सार लार सूझै नहीं ॥

॥ छन्द ॥

गुरु पद कंज लखाइ घट परचे पाई । सुरति समानी सिंध मई[1] ॥
देखा वह द्वारा अगम पसारा । दस दिस फोड़ अकास गई ॥१॥
नाम निअच्छर छर नहिं अच्छर । देख अगाध अनाद लई ॥
घट भीतर जाना घट परमाना । जेइ जेइ संत अगार कही ॥२॥
जिनकी रज पावन राम औ रावन । निःअच्छर सत सार सही ॥
पंडित और ज्ञानी यह नहिं जानी । भेष भेद गति नाहिं लई ॥३॥
सब जग संसारा काल की जारा । सकल पसारा भेष मई ॥
रागी बैरागी भौ रस त्यागी । साँगी पाँगी भरम बही ॥४॥
ध्यानी बिज्ञानी बन बस जानी । संत पंथ मत राह नहीं ॥
जोगी सन्यासी काल की फाँसी । परमहंस परमान नहीं ॥५॥
निज गावै बेदा जानै न भेदा । सास्त्र संध जिन राह लई ।
संतन गति न्यारी सुनौ बिचारी । चौथे पद के पार कही ॥६॥
कोइ करिहै संका महा मति रंका । सतसंगति सम सूझ नहीं ॥
तुलसी मति-हीना पायौ चीन्हा । संत कृपा घट घाट लई ॥७॥

॥ सोरठा ॥

पानी पवन निवास, कँवल बास बिधि सब कही ।
सब्द सुरति कर बास, वै निरास अच्छर रहत ॥ १ ॥

(1) एक लिपि में इस छन्द की पहिली कड़ी के दूसरे टुकड़े का पाठ ऐसे है—"सब सुखदाई सुरति समानी सिंध मई ।"

कह्यो ग्रन्थ घट सार, गुरु परचै निज कँवल में ।
जिन जिन पाय निवास, सो लखिहैं ये भेद सब ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

अब ब्रह्मंड का भाखौं लेखा । भिन्न भिन्न घट भीतर देखा ॥
पाँच तत्त का कहौं बिचारा । अगिनि अकास नीर निरधारा ॥
पृथ्वी पवन सकल कर भेदा । पिंड ब्रह्मंड का रच्यो निषेदा ॥
लखि अकास बाई[1] सँग आई । दोइ मिलि निज अगिनी उपजाई ॥
अब पानी का सुनो बिचारा । ये चारो मिलि मही अकारा ॥
ऐसे पाँच तत्त उपराजा । निज तन कीन्ह देह कर साजा ॥
पानी बुंद सृष्टि उपजाई । ता में चेतन सत्त समाई ॥
अब पानी का भाखौं लेखा । भिन्न भिन्न घट भीतर देखा ॥
ता की बिधि बिधि कहौं बिचारा । छत्तिस नीर पचासी धारा ॥
जोइ जोइ नीर नाम बतलाऊँ । नीर छतीसो बरनि सुनाऊँ ॥
बिधि बिधि नाम नीर समझाऊँ । नाम नीर भिन भिन दरसाऊँ ॥

॥ नीर के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

जल अजीत परथम करि गाऊँ । करता जल दूसर कर नाऊँ ॥
और अनूप तीसर जल कीन्हा । चौथा मुक्ति नीर को चीन्हा ॥
नीर पाँच पुरइनि परमाना । अंबुज षष्टम नीर बखाना ॥
नीर सात बिषया झर होई । नीर आठ अटला सुर सोई ॥
नवाँ नीर नाटक दुख भेदा । दसवाँ नीर दसौ मन छेदा ॥
एकादस नीर काल को जाना । द्वादस नीर जिव करै पयाना ॥
तेरवाँ नीर पुरुष कौ ध्याना । जो बूझै घट परचै जाना ॥
जीव नीर चौधा मैं भूला । पद्रह नीर भीर सहै सूला ॥
सोला नीर कनक कर संगी । सत्रा नीर रूप रस रंगी[2] ॥
अठरा नीर बोल दे नाऊँ । उन्निस नीर कुसुम रँग राऊ ॥

---

(१) वायु । (२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "रस रंगी" की जगह "परसंगी" है ।

बिसवाँ नीर कलंगी गाई । निज घट भीतर परचा पाई ॥
इकिस नीर सुख सागर धामा । भँवरकंज उरझा तेहि ठामा ॥
बाइस नीर मूल घट[1] राजा । तेइस नीर निशसू बाजा ॥
नीर चौबिसवाँ चतुर सुजाना । पच्चिस नीर मेघ परमाना ॥
छब्बिस नीर कहौं मैं काला । सताइस नीर धनासुर नाला ॥
अठाइस नीर रूप ह्वै आना । उन्तिस नीर अभया दृग[2] दाना ॥
तिसवाँ नीर आहि बल भारी । इकतिस नीर आहि संसारी ॥
बतिस नीर निरगुन है सीठा । तैंतिस आलस नीर है मीठा ॥
चौंतिस नीर सरोसिल नाऊँ । पृथ्वी पैंतिस नीर बताऊँ ॥
छत्तिस नीर कामिनी बासा । ब्रह्मा बिस्नु का भोग बिलासा ॥
जीव जंतु जल जीव निवासा । ये सब परे काल की फाँसा ॥
छत्तिस नीर नाम निरधारा । सो कोइ साधू करै बिचारा ॥
आगे कहौं पचासी पवना । ता कर नाम भेद गुन बरना ॥
भिनि भिनि नाम बिधी बतलाऊँ । पवन पिचासी बरनि सुनाऊँ ॥
पिंड में पवन पचासी बासा । सो निज भाखौं भेद खुलासा ॥

॥ पवन के नाम ॥

१	रजलाय	पवन	७	स्त्रुति अंध	पवन
२	केदार	,,	८	नल पती	,,
३	बिलंभ	,,	९	ब्रह राज	,,
४	समीर	,,	१०	मंदोष	,,
५	पुरभो १	,,	११	सकल तेज	,,
६	कालूल	,,	१२	मन सोत	,,

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "घट" की जगह "घर" है। (२) यह शब्द हमारी समझ में "दुर्ग" होना चाहिये यानी जहाँ कोई पहुँच नहीं सकता; कठिन। "दानी" नाम काल और उसके नायब धर्मराय का है जो जीव को बिना सतगुरु के बखशे हुए "निज नाम" का परवाना दिखाये अपनी हद के बाहर नहीं जाने देता।

१३ जगजोत पवन
१४ उपजीत ,,
१५ जगजीत ,,
१६ पर राज ,,
१७ बल कुम्भ ,,
१८ पत राज ,,
१९ बल भेद ,,
२० बारुन ,,
२१ कुम्भेर ,,
२२ जगजाय[1] ,,
२३ बेधुन्ध ,,
२४ सकलंध ,,
२५ सल सोख ,,
२६ सुख रोग ,,
२७ ज्ञान कुम्भ ,,
२८ मैना ऊँघ ,,
२९ त्रिकोध ,,
३० किवलास ,,
३१ करनास ,,
३२ रस नाग ,,
३३ तन जीत ,,
३४ सकसीत ,,
३५ बेलोक ,,
३६ मन मोष ,,
३७ बेरूप ,,
३८ सतसूक पवन
३९ बीज मन्द ,,
४० बीज बन्द ,,
४१ अजसार ,,
४२ नितनाल ,,
४३ शब्दाल ,,
४४ गिरनाल ,,
४५ सुषपाल ,,
४६ रूपान ,,
४७ बिधान ,,
४८ सुभपती ,,
४९ छेरती ,,
५० उतरंत ,,
५१ तितरंत ,,
५२ पुरवो ,,
५३ सरभो ,,
५४ उबमीत ,,
५५ दरदीत ,,
५६ उपमार ,,
५७ जभियार ,,
५८ अतरीत ,,
५९ ताईत ,,
६० सुषमंद ,,
६१ असमंद ,,
६२ सीराद ,,

[1] मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "जगजाय" की जगह "इन्द्रजीत" है।

६३ लैयाद	पवन	७५ अवधूत	पवन
६४ करिहाट	,,	७६ आकाश	,,
६५ करुनाट	,,	७७ जगबास	,,
६६ बैराग	,,	७८ सुनसूत	,,
६७ लैजार	,,	७९ मनभूत	,,
६८ लैलार	,,	८० निरधार	,,
६९ नदसूर	,,	८१ सतसार	,,
७० पदमूर	,,	८२ आसोग	,,
७१ करकीत	,,	८३ तन भोग	,,
७२ धरजीत	,,	८४ जग जोग	,,
७३ मनमास	,,	८५ मन रोग	,,
७४ सरसूत	,,		

॥ चौपाई ॥

पवन पचासी भाखि सुनाई। कोइ साधू घट भीतर पाई ॥
घट में पवन पचासी जाना। निरखा नैन सैन धरि ध्याना ॥
साध आदि कोइ करै बिबेका। सोइ निज सार पवन का लेखा ॥
तुलसी जिन जिन नैन निहारा। पवन पचासी बरनि सिहारा ॥
जिन जिन घट की सैल सँवारा। पवन भवन सोइ गवन गुहारा ॥
आगे सुनहु गगन का लेखा। सोला गगन पिंड में देखा ॥
जिन जिन सैल सुरति से कीन्हा। सोला गगन भाखि तेहि दीन्हा॥
जो सोला का भेद बतावै। सोइ सज्जन सत साध कहावै ॥
भिन्न भिन्न सोला बिधि भाखौं। गगन नाम निज एक न राखौं ॥
बिधि बिधि नाम कहौं समझाई। चित दे सुनौ गगन कर नाई ॥

॥ गगन के नाम। चौपाई ॥

परथम गगन निसाधर मोषा। दूसर गगन पृथी पद पोषा ॥
तीसर गगन बिरछि सुर सोषा। चौथा गगन दिलंभी गोषा ॥
पंचम गगन हिरा पद स्यामा। षष्टम गगन निरंजन नामा ॥

सप्तम गगन पुलंधर चीन्हा । अष्टम गगन सफानल कीन्हा ॥
कदलीकंद नवीं कर नामा । दसवीं गगन जमरस के ठामा ॥
एकादस गगन हरि हिरदे नामा । द्वादस गगन अधर परमाना ॥
तेरा गगन कलंगी रूपा । चौधा गगन है धुंध सरूपा ॥
पंद्रा गगन मुक्ति कर नामा । सोला गगन गुप्त निज धामा[१] ॥
इतने गगन काया के माईं । सज्जन साध खोज कोइ पाई ॥
सोला का कोइ भेद बतावै । सोइ सोइ गगन गिरा गति गावै॥
तुलसी निरखि कहा निज लेखा । बूझि साध कोइ करै बिबेका ॥
घट भीतर सब गगन बताया । भिनि भिनि नाम गगन गति गाया॥
इतने की कोइ जानै संधा । सो नहिं परै काल के फंदा ॥
आगे भेद जो कहौं अनूपा । भँवर गुफा में जोति सरूपा ॥
भँवर गुफा छै भाखि सुनाऊँ । जाकौ भिनि भिनि भेद बताऊँ ॥

॥ भँवर गुफा के नाम ॥

परथम बेहद नाम सुनइया । भँवर गुफा बिच बास करइया ॥
दूसर नाम निरखि निरधारी । तीसर नाम मुक्ति पद प्यारी॥
चौथा नाम उनमुनी स्यामा । सोइ सब जोगिन का बिसरामा॥
पंचम नाम हरी हद सूना । छठवाँ चदर अधर पर धूना[२] ॥
छई छर भँवर गुफा दरसाई । तुलसी नैन नजरि में आई ॥
आगे भाखौं भेद निहारा । छै त्रिकुटी घट माहिं सिहारा ॥
जा कौ नाम ठाम दरसाऊँ । भिनि भिनि भाव भेद समझाऊँ॥

॥ त्रिकुटी के नाम । चौपाई ॥

प्रथम कहौं रुकमन्दर[२] नाऊँ । काल कौ चक्र फिरै तेहि ठाऊँ ॥
दूसर बली बिजै बल सोई । षटदल कँवल फूल जहँ होई ॥
तीसर नाम मुकर मनि[२] जोई । मन बुधि निद्रा से सुख सोई ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में कड़ी ८ में "गुप्त निज" की जगह "मुक्ति कर" छपा है जो कि ठीक नहीं हो सकता क्योंकि यही नाम पद्रहवें गगन का है)। (२) भँवर गुफा के चौपाई की कड़ो ४ में "पर धूना" की जगह "रंग धूना" दिया है। इसी तरह त्रिकुटी के नाम को चौपाई को पहिलो कड़ी में पहिलो त्रिकुटो का नाम "रुकमादे" और तीसरी कड़ी में तीसरी त्रिकुटी का "मुक्तिमन" लिखा है।

चौथा नाम सब्दनी होई। नौ नाड़ी सुपने दे सोई॥
पंचम नाम गोमती गाऊँ। अठदल कँवल फूल तेहि ठाऊँ॥
हंस मुखी छठवीं कर नामा। हंस बिहंग बसै तेहि ठामा॥

॥ दोहा ॥

छै त्रिकुटी बिधि बिध कही, दृग निज नैन निहार।
तुलसिदास घट भीतरे, देखि कही सब सार॥

॥ चौपाई ॥

त्रिकुटी छई नाम निज गाया। तुलसी भिन भिन भेद लखाया॥
जोगी जीत रीत कोइ जानै। त्रिकुटी चढ़ै भेद पहिचानै॥
आगे सतमत द्वार लखाऊँ। सुकिरत सेत द्वार दरसाऊँ॥
जौन दिसा सुकिरत है भाई। तौन दिसा सत द्वार लखाई॥
अष्ट कँवल दल दरपन माईं। नाभि सेत नल मध के ठाईं॥
नल नागिनि करि बैठी भेषा। जीव भखन वो करै अनेका॥
पुनि सरवर तेहि पास बिराजै। ता पर बैठि सभा बहु गाजै॥
तेहिं सरवर जल नीर अपारा। जीव उतरि कोइ जाइ न पारा॥
कौन दिसा नागिनि रस रूखा। कौन दिसा सरवर रहै सूखा॥
अभि अंतर सुकिरत सत बासा। करिया कँवल में काल निवासा॥
अष्ट कँवल नागिनि रस रूखा। सरवर बिरह कँवल में सूखा॥
यह सत रीति द्वार दरसाई। अब मैं कहौं सुनो तुम भाई॥
आगे तरवर भेद अपारा। चारि बिरछ पर सुरति सम्हारा॥
जीव पैठि सोइ मारग पावै। गगन कँवल भीतर चलि आवै॥
उलटै चक्र सुन्न में धावै। सिध साधक जहँ ध्यान लगावै॥
बिरछ चारि सोइ कहौं बुझाई। जाकर नाम ठाम गति गाई॥
जहँवाँ कागभसुण्ड कहु काला। बट पीपर पाकरी रसाला॥
कागभसुण्ड काया के माईं। तन मन बिरछ संत समझाई॥
बिरछा ऊपर ताल बिराजै। निरखत काल कला सब भाजै॥

॥ सोरठा ॥

बिरछा ऊपर ताल, जहाँ काल करकै नहीं।
तुलसी संत दयाल, दिया भेद भिनि भिनि लखा॥

॥ कहेरा ॥

सखी री बिरछ पै ताला, जहँ करकै न काल।
बिरछा के जड़ नहिं पाती, वा की ढुरि ढुरि[1] डाल ॥टेक॥
सर में सुरति न्हवावई, कागा किये हैं मराल।
संतों पंथ पिया पाये, गुरु भये हैं दयाल ॥ १ ॥
अठमें अटारी माहीं, परे सुनि पिया हाल।
हरखा बंक सुर नाला, चढ़ी चट चट चाल ॥ २ ॥
सुरति गगन घन छाई, पिया परे परे ख्याल।
तुलसी तरक तत तारी, भारी काटी भ्रम जाल ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥

कहों अब बिधि बरतंत, संत कहनि मन मत गही।
लही जो तुलसी अंत, ज्ञान चक्र चित चेति कै ॥

॥ चौपाई ॥

अब सोई बिधि बरतंत सुनाऊँ। राह रीति मन मत दरसाऊँ ॥
मन मत चक्र घेर के मारा। ज्ञान चक्र जब जीव सम्हारा ॥
काल मारि मुख फेरि चलावै। काल भागि त्रिकुटी में आवै ॥
जीव सब्द गहि खेदि चलाई। अधर कँवल बिच काल छिपाई ॥
भर्म चक्र जब काल चलावा। भरमित जीव भरम जब आवा ॥
संसय सोग जीव उपजाई। साहेब सब्द बिसरि गयो भाई ॥
भगिया जीव गगन मग माहीं। यहँ कोइ काल गहैगो नाहीं ॥
जीव वहाँ से निसरि पराई। नाल बंक में जाइ समाई ॥
बंकै नाल काल गति लइया। जीव भागि आगे चलि गइया ॥
परम कँवल में जीव छिपाना। वहाँ काल जो जाइ समाना ॥
सोला गगन जीव फिरि आई। तहाँ काल पुनि खेदत धाई ॥

॥ सोरठा ॥

सोला गगन मँझार, जीव काल खेदत फिरै।
बूझै बूझनहार, घट निहारि अंदर लखै ॥

॥ चौपाई ॥

वहाँ जीव कोइ बचन न पावै। रहस नाल जिव पैठि समावै ॥

---

(१) झुकी हुई।

वह कहुँ काल सुनन जब पावै। समाधान होइ काल सिधावै ॥
रहस नाल से भागि पराई। भँवर गुफा में जाइ छिपाई ॥
आपै काल ध्यान धर कीन्हा। अपनी सुरति गुफा में दीन्हा ॥
सूरति जीव काल पर आवै। काल आप पर ध्यान लगावै ॥
अपनी सुरति गुफा में लावै। भीतर सूरति जीव समावै ॥
अपना घर बिधि काल न पावै। पीछे काल तहाँ लगि धावै ॥
तब लग काल जीव को घेरा। घर सुधि बिन जो फिरै अनेरा ॥
धनि वे जीव आप को जानी। उलटि काल को बाँधै तानी ॥
जानै जीव जो नाम सहाई। नाम निअच्छर जाइ समाई ॥
पुरुष नाम जीव लखि पावै। जीव नाम लखि ब्रह्म कहावै ॥
नाम छाँड़ि जग जीव कहाये। भरम भरम भौसागर आये ॥
अभि अंतर जिव पैठै जाई। राई के दस भाग समाई ॥
अंतर काल बड़ा मग लागा। एक राई का दसवाँ भागा ॥
अंतर बड़ा जीव को सोका। काल की आँखी तीनों लोका ॥
जीव की आँखि पुरुष को देखा। काल दृष्टि जब होय बिसेषा ॥
आँखी जीव चकोर समाना। पाँचो करै दृष्टि जस बाना ॥
धरती दृष्टि प्रकिरती उद्रा। दृष्टि अकास करै नर मुद्रा ॥
तत्त पाँच पाचौ हैं नारी। बचै नाम निज सुरति बिचारी ॥

॥ दोहा ॥

काल करै जिव हानि, तुलसीदास तत सम रहौ।
घट रामायन सार[1], मथि काया बिच घट कह्यो ॥

॥ सोरठा ॥

भिनि भिनि कहौं बखान, आदि अंत घट भेद बिधि ॥
तुलसी तनहिं बिचार, घट निरखो निज नैन से ॥

॥ चौपाई ॥

आगे घट का भेद बखाना। बत्तिस नाल घट भीतर जाना ॥
नाल भेद बिधि कहौं बुझाई। जिन जानी घट परचे पाई ॥

॥ नाल के नाम। चौपाई ॥

प्रथम नाल की बिधी बताऊँ। अभया तेज ताहि कर नाऊँ ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "सार" की जगह "माहिं" है

दूसर रहस नाल जो गावा। चौदल कँवल फूल तेहि ठावाँ ॥
कँवल चार दल भँवर उड़ाना। चढ़ि अकास बिधि जाइ समाना॥
कनक नाल तीसर कर नामा। चौंसठ जोगिनि बसै तेहि ठामा॥
चौथी नाल बिकट थिर थाना। कोठा नाल बहत्तर जाना ॥
धुन्धर नाल पाँचवीं होई। काल सिंहासन बैठा सोई ॥
छठवीं नाल रूपरम नामा। निरगुन रूप बसै तेहि ठामा ॥
नाल सातवीं सेत बताई। मन की कला बसै तेहि माई ॥
नाल आठ अभया मत नाऊँ। कामिनि चारि बसै तेहि ठाऊँ ॥
नाल मुकरमा नौवीं नामा। द्वादस दूत बसै तेहि ठामा ॥
हरि संग्रह दसवीं दरसाई। लछमन राम बसै जेहि माई ॥
मुक्तामनि एकादस सोई। कलसर दूत बैठ बल जोई ॥
द्वादस नाल पोहप पट माई। नभ नल द्वार सब्द गोहराई ॥
तेरहीं नाल निकट नट नौली। बचन बिदेह बाक बिन बोली ॥
चतुरदसि नाल नटवर नामा। मेघा छपन कोटि बिसरामा ॥
पंद्रा गगन नाल निरबानी। झरि झरि चुवै कूप से पानी ॥
सोला सुखमनि नाल कहाई। सुकिरत सेत बसै तेहि ठाई ॥
सत्रह नाल अनूप अचीन्हा। अंडा बिदित बिस्व रचि लीन्हा ॥
अठारा नाल बिमल सुर जानी। तैंतिस कोटि देव दरबानी ॥
उन्निस नाल भँवर मन्दाकी। अंडा कुम्भ रहै मन छाकी ॥
बिसवीं नाल अजोरक माली। सूरत सब्द सेत चढ़ि चाली ॥
इक्किस नाल हंसदे नाऊँ। मुक्ता मानसरोवर ठाऊँ ॥
बाइस नाल सत अंकित[1] होई। बन असोक सीता जहँ होई ॥
तेइस नाल नगर एक बाटा। जहँ को जम रोकै नहिं घाटा ॥
चौबिस बिषम नाल निज धामा। गंजै भँवर कंज के ठामा ॥
पच्चिस नाल पदम सुर सोई। पचरँग रूप जहाँ नहिं होई ॥
छबिस नाल गढ़ गोधर नाई। अटक पार चढ़ फटक समाई ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "अंकित" की जगह "सुकृत" है।

सताइस नाल त्रिकुट पर लंका । जहँ रावन बसै ब्रह्म निसंका ॥
अठाइस सेत द्वार दुरबीना । समुन्दर सात पार कोइ चीन्हा ॥
उंतिस नाल सिखर पर सैला । अच्छर अंदर अगम दुहेला ॥
तिसवीं नाल अधर रस रोकी । जहाँ निरंजन बैठे चौकी ॥
इकतिस सुरति कँवल अस्थाना । कोइ सज्जन सत साध बखाना ॥
बत्तिस नाल सब्द सुन माईं । मुकर द्वार चढ़ि छूटै झाईं ॥
बत्तिस नाली बरन अनूपा । सुर नर मुनि नहिं पाव भूपा ॥
ये सब नाल चाल दरसाई । सो सब देखे घट के माईं ॥
जिनके नाम ठाम गुन बरना । कहै तुलसी संतन के सरना ॥
बत्तिस नाल बरनि समझाई । वा की मुनि हर एक रहाई ॥
बंक नाल है वा को नाँवा । तीनों भवन भेद नहिं पावा ॥
घट में बत्तिस नाल बखाना । काया सोध साध कोइ जाना ॥

॥ दोहा ॥

बत्तिस नाल निहारि कै, तुलसी कहा बिचारि ।
घट घट अंदर देखि कै, साध करै निरवार ॥

॥ चौपाई ॥

सत्त बचन साधू परमाना । भीतर भेद सत्त पहिचाना ॥
काया खोज नहीं जिन पाया । जाके सदा हिये तम छाया ॥
काया खोज किया नहिं भाई । सुकदेव रहे भूल के माईं ॥
ब्यास जनक नारद नहिं पाई । कथि पुरान आतम गति गाई ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानी भूले भर्म में, परम हंस ब्रह्म चार ।
सास्तर संध बिचारिया, बहे कर्म की धार ॥

॥ सुन्न भेद । चौपाई ॥

आगे कहों सुन्न बिस्वासा । बिना सुन्न गये जीव निरासा ॥
अब निज कहों सुन्न में स्वाँसा । बिना सुन्न जिव काल निवासा ॥
सुन्न दिसा बिधि कहों बुझाई । बूझै साध सुन्न जिन पाई ॥
बिरला सुन्न भेद को पावै । सुन्न दीप सोइ सब्द कहावै ॥
सुन्न की सोत धुन्न में लागी । धुन की सोत गगन में जागी ॥

गगन के ऊपर पवन रहाई । निरगुन पवन भवन के माईं ॥
निरखि कँवल साधै कोइ साधू । मिटि जाइ काल कष्ट की ब्याधू॥
मूल कँवल के ऊपर देखो । घट से सत्त सब्द ले पेखो ॥
अष्ट कँवल ओंकार का बासा । सो निज बूझो काल तमासा ॥
षोड़स कँवल को ध्यान लगावै । जोगी करै भेद सोइ पावै ॥
पवन जोग जोगी गति गाई । त्रिकुटी निज धुनि कँवल कहाई॥
मन थिर होइ सुरति ठहरावै । त्रिकुटी कँवल पवन ले आवै ॥
देखै अवर पवन हिये माईं । चमकै जोति दृष्टि में आई ॥
जीव पवन जब चलै अघाई । सेत पवन से मारि चलाई ॥
करिया पवन भई बलहीना । नाखौ पवन जीव जब चीन्हा ॥
नाखौ पवन भरोसा मोरा । सेत कँवल से बाँधौ डोरा ॥
सेत कँवल सुकिरत की होई । सत मत द्वार जानिये सोई ॥
सत्त सुकृत की एकै बानी । ताकी गति बिरले पहिचानी ॥
कदली सब्द लाभ जिन देखा । मुक्ति अमी तहँ पियै अलेखा ॥
जहाँ निरंजन बसै निदाना । सहस कँवल जोगी बिधि जाना॥
द्वादस आगे इम्रत बासा । निगुरा नर सो मरै पियासा ॥
सगुरा होइ सोई निज पावै । भर भर मुख इम्रत भल खावै ॥
पीवै अमी लोक को जाई । घट भीतर जिन खोज लगाई ॥
पाँजी खोज हाथ अनुसरई । सो जिव सहजै से भौ तरई ॥
झिलिमिलि झरै सुन्न के माहीं । गंगा जमुना सरसुति राहीं ॥
गङ्गा जमुना सरसुति होई । तिरबेनी संगम है सोई ॥
त्रिकुटी संगम बेनी घाटा । बसै जीव सत पावै बाटा ॥
बंक नाल होइ गंगा जाई । जमुना सुन्न गुफा से धाई ॥
सरसुति सेत कँवल से आई । मन जोगी बिधि बास कराई ॥
गंगा गहै करै असनाना । जमुना दूरि मुक्ति कर थाना ॥
तीनों नदी तीनि हैं धारा । आप आप में देखि निहारा ॥
यह तीनों हैं अगम अपारा । बिरले साधू उतरैं पारा ॥

तिन में रहै त्रिभवनी घाटा । ब्रह्मा बिस्नु न पावैं बाटा ॥
संकर जोगी सिद्ध अनूपा । उनहूँ न पायौ आपन रूपा ॥
निराकार अभि अंतर भाई । ता का भेद कहूँ समझाई ॥
सुरति निरति करि खोजै आपू । सुन्न सिखिर चढ़ि खैंचै चाँपू[1] ॥
महि ऊपर ब्रह्मंड की तारी । द्वै[2] पट भीतर सुरति सम्हारी ॥
दहिने बाँयें सिला पहारा । जहँ की बाट न कोइ निहारा ॥
जहँ सत द्वार बैठ सत यारा । अगम अगाध अजर का द्वारा ॥
इम्रत पीवै जीव बिचारा । जा से कटै काल की जारा ॥

॥ दोहा ॥

जोग बिधी बेनी कही, सुन्न जोग बिधि गाइ ।
काल कला परचंड यौं, ठग ठग सब को खाइ ॥

॥ चौपाई ॥

अब बेनी संतन की गाऊँ । या से भिन्न भेद दरसाऊँ ॥
संतन की बेनी बिधि न्यारी । तुलसी भाखी देख निहारी ॥
अगम द्वार बेनी असनाना । सो बेनी संतन की जाना ॥
मंजै जोइ अगम गति जानी । वह प्रयाग सब संत बखानी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी अगम अपार, जहँ बेनी मंजन कियौ ।
सतगुरु पदम प्रयाग, करि अगाध गति जिन कही ॥

॥ चौपाई ॥

अब तेहि राह रीति दरसाऊँ । भिनि भिनि पंथ मता गति गाऊँ ॥
सरगुन से निरगुन बिधि बानी । भिनि भिनि राह रीति सब छानी ॥
परथम दृग दुरबीन लगावै । मन चित सुरति ताहि पर छावै ॥
देखै ता के बीच मँझारा । जगमग जोति होत उजियारा ॥
निरखा निरगुन पुरुष निहारा । जहवाँ सुनै सब्द झनकारा ॥
सेत दीप जिव पहुँचै पारा । कोटिन काल भये जरि छारा ॥

(१) धनुष । (२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक के पाठ में "दे" है ।

॥ दोहा ॥

निरगुन ज्ञान बिचारिया, सुरति राखिये पास ।
तुलसीदास जहँ बास कर, जीव न जाइ निरास ॥

॥ दोहा ॥

घट रामायन सार, यह घट माहिं घटाइया ।
घट का मथन बिचार, भिन्न भिन्न करि डारिया ॥

॥ सोरठा ॥

निरगुन निरखि निहारि, ता से गुरुपद भिन्न है ।
चौथे पद जद जाइ[1], पद प्रयाग सतगुरु लखै ॥

॥ दोहा ॥

तीन लोक के माहिं, निरगुन सरगुन रचि रह्यौ ॥
सतगुरु इनके पार, सो तुलसी घट लखि परचौ ॥

॥ छन्द ५ ॥

घट भीतर जानी आदि बखानी । सुरति समानी सब्द मई ॥
देखा निज नैना कहौं मुख बैना । सत्त नाम का मर्म यही ॥१॥
नहिं राम अरु रावन यह गति पावन । अगुन सगुन गुन नाहिं कही ॥
कहि अकथ कहानी अगम की बानी । बेद भेद गति नाहिं लई ॥२॥
सुर नर मुनि ज्ञानी उनहुँ न जानी । पँडित भेष सब कहैं कहीं ॥
तुलसी मत भारी यह गति न्यारी । बूझैंगे कोइ संत सही ॥३॥

॥ सोरठा ॥

आदि अंत का भेद, तुलसी तन भीतर लखा ।
सुरति सब्द परकास[2], ज्यों अकास सर सैल करि[2] ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु भेद कहौं अनुसारा । लेकर ज्ञान बान भ्रम जारा ।
ज्ञान रतन की आँखी होई । जब जम जाल देखिये सोई ।
सत मत गत अभि अंतर देखै । तत मत अष्ट कँवल में पेखै ।
सुरति सुहागिन होइ अगमानी । तुरतै मिली सत्त की बानी[3] ।
अरध उरध बिच बैठे माधो । तत उनमुनी लगाइ समाधो ।

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "जद जाइ" की जगह "मझार" है । (२) मुं० दे० प्र० के पाठ में "परकास" की जगह "उम्मेद" व "ज्यों" की जगह "जो" छपा है । (३) दूसरा पाठ यों है—"धीरज तत्त सत्त की बानी ।"

तारी उलटि तत्त में लावै । रहस नाल मधि जाइ समावै ॥
तुलसी मुद्रा जोग समाधा । आगे भाखौं भेद अगाधा ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी तन के माहिं, पंथ भेद साधू सही ॥
तत मत तोल अँकाइ, अधर जाइ जिन जिन कही ॥

॥ चौपाई ॥

ये सब काल जाल रस रीती । भौकृत खान जानि जम प्रीती ॥
गगन के मँडल काल अस्थाना । पाँच भूत बिधि जाइ समाना ॥
पाँच पचीस तीन मन मैला । सब जानौ वा को निज खेला ॥
काल जाल जग खाइ बढ़ाया । रिखो मुनी कोइ भेद न पाया ॥
उलटा चलै गगन को धाई । ता से काल रहै मुरझाई ॥
सतगुरु साहिब संत लखावैं । तब घट भीतर परचा पावैं ॥
जो जेइ मूल भेद दरसावै । तब घट में अबिनासी पावै ॥
सतसँग भक्ति हृदे बिच आवै । जब सतद्वार अगम लखि पावै ॥
हिरदै सत्त रहै लौ लाई । सब्द द्वार चढ़ि काल गिराई ॥
मुक्ति ज्ञान पावै अबिनासी । अगम ज्ञान संग मूल निवासी ॥
यह कोइ बिरला साधू पावै । अबिनासी गति अगम लखावै ॥
सतगुरु कृपासिंध कोइ जागै । आवा गवन भर्म भौ भागै ॥
कीन्हो अगम नाम स्रुति सैला । चीन्हा अगम निगम तिन खेला ॥
अधर सिखर पर तंबू तानै । जहँ से देखै सकल जहानै ॥
ब्रह्मंड द्वार एक है नाका । गहि दुरबीन सुरति से ताका ॥
मकर तार पावै वह द्वारा । ता पर सुरति होय असवारा ॥
सुरति जात लागै नहिं बारा । चली सुरति भइ नाम अधारा ॥
तब पहुँचै इक्किसवें द्वारा । सुन्न से परे सब्द है न्यारा ॥
सुरति सब्द में जाइ समानी । निर सब्दी गति अगम लखानी ॥
जहँ नहिं पहुँचै मुक्ति पसारा । सोइ है आदि पुरुष दरबारा ॥
मुनि अचारि पावै नहिं कोई । सब भौ भर्म रहा जग सोई ॥

भँवर गुफा मारग चढ़ि देखा । जहँ जिव सत्त सुरत का लेखा[1] ॥
सुन्न सुन्न सब करत बखाना । सुन्न भेद कोइ बिरले जाना ॥
कहों बिस्तार सुन्न की जोई । ज्यों गूलर फल कीट समोई ॥
फल जेते तेते ब्रह्मंडा । दीप दीप फल फल नौ खंडा ॥
सुन्न अंड की करी बखाना । कहै तुलसी कोइ साधू जाना ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सुन्न निवास, सब्द बास जिन घर किया ।
जिमि गूलर फल तासु[2] , जग भिनि भिनि जेहि लखि परा ॥

॥ छन्द ॥

भये सुन्न निवासी सब सुख रासी । सुरति बिलासी सब्द भई ॥
अनहद हद पारा अगम अपारा । अमी सिंधु स्नुति जाइ लई ॥१॥
देखा उँजियारा घट घट प्यारा । निरखि निहारा पार कही ॥
तुलसी तुल जावै दस दिस पावै । सिंध फोड़ि असमान गई ॥२॥

॥ दोहा ॥

सुन्न महल अजपा जपै, समुँद सिखरि के पार ।
टूटी गगन गिरा भई, सत्त सब्द झनकार ॥
त्रिकुटी टाटी टूटि कै, सुन्न अंड भिनि बास ।
घट भीतर परिचय भई, देखा अजर निवास ॥

॥ कँवल भेद । चौपाई ॥

घट में सोधि कँवल जिन गाई । लखै कँवल बिरला कोइ भाई ।
अंकुर उतपति कँवल मँझारा । सत्त नाम पद तिनके पारा ।
ऊँच नीच परबत बिच बाटा । काल जहाँ रोकै नहिं घाटा ।
ता के दहिने मारग पाई । दामिनि पाँच छेकि नियराई ।
देवै दानी दान चुकाही । पावै जीव अगम की राही ।
दानी कहै जीव सुनि बाता । बिना दान करिहौं मैं घाता ।
जब जिव कहै समझ सुन भाई । करौ घात केहि कारन जाई ।

(१) मु॰ दे॰ प्र॰ की पुस्तक में पाठ इस तरह है—"जहाँ जीव सत पुरुष को पेखा" औ
(२) सोरठा में "तासु" की जगह "नास" है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

अंतर गुफा तहाँ चलि जाऊँ । जहँ साहिब के दरसन पाऊँ ॥
पाँचौ नाम जीव जब भाखा । छठवाँ नाम गुप्त करि राखा ॥
पाँचौ नाम काल के जानौ । तब दानी मन संका आनौ ॥
निरगुन निराकार निरबानी । धर्मराय यों पाँच बखानी ॥
जीव नाम निज कहै बिचारी । जानि बूझि दानी झख मारी ॥
जाव जीव यह राह तुम्हारी । हम नहिं रोकैं बात बिचारी ॥
बोल पाँच हमहूँ सुनि पाई । हम नहिं निकट तुम्हारे आई ॥
पाँचौ चोर रहे अलगाई । होइ निरभै जिव आगे जाई ॥
आगे सात सुमेर उँचाई । नौ नाटक तापर रहैं भाई ॥
नौ नाटक पूछन चले आगे । कहौ जीव केहि मारग लागे ॥
हम यहि घाट बाट रखवारी । यहाँ न अदली चलै तुम्हारी ॥
कहै जीव दुग[1] दानी भाई । हम चलि जाइ नाम चित लाई ॥
दानी दान चुकावौ आई । जब यहि बाट निभन तुम पाई ॥
केहि कर अंस कहाँ तुम जाई । बात आपनी कहौ बुझाई ॥
कहै जीव सतलोक निवासा । मैं चल जावँ पुरुष के पासा ॥
दानी कहै दूरि है भाई । अगम पंथ कैसे निभ जाई ॥
कौन नाम मारग को जाई । कौन नाम से उबरै आई ॥
इतना भेद कहौ समझावा । बाट जीव जब घर की पावा ॥

॥ जीव बचन । चौपाई ॥

दानी सुनु बिधि बात हमारी । हम चलि जाइँ पुरुष दरबारी ॥
सुरति निरति लै लोक सिधाऊँ । आदि नाम लै काल गिराऊँ ॥
सत्त नाम लै जीव उबारी । अस चल जाउँ पुरुष दरबारी ॥
इतना बचन कही दिल सूना । बहुत त्रास लै मन में गूना ॥
तुम मारग जावो जिव अपने । हम तुमको रोकैं नहिं सुपने ॥
चले जीव आगे पग दीन्हा । करिया सरवर मारग लीन्हा ॥
तहँ तौ पंछी एक रहाई । निस बासर वो बैठ उँचाई ॥

---

(१) दुर्ग । (देखो नोट पृष्ठ १४)

तेहि मारग जिव चला अघाई। चोंचि पसार खान को चाही ॥
मुख पंछी बहु भाँति पसारा। जिवरा तो को करौं अहारा ॥
अपना नाम कहौ टकसारा[1]। तब चलि जैहौ वहि दरबारा ॥
नहिं हम से तुम बचने पैहौ। तो को जिवरा धर धर खैहौं ॥
जिवरा सुरति नाम से लाया। करिया मारि पाँव तर नाया ॥
जीव चला झरने के पारा। दस दिस देखि परा उँजियारा ॥
अमी द्वार इमरत कर बासा। मिटा जीव का संसय सासा ॥
अधर जीव इमरत को पीवै। सब्द बूंद इमरत जुग जीवै ॥
बस्तु पाइ साधै कोइ साधू। चाखै इमरत सुरति समाधू ॥
चटि चटि सूरति चढ़ी अटारी। इमरत अजर नाम की लारी ॥
साहिब अजर सब्द घर पावै। आवागवन बहुरि नहिं आवै ॥
डोरी पुरुष अकास अकेला। किया सुरति घट भीतर मेला ॥
इमरत कँवल भरा भंडारा। पीवै जिव सो उतरै पारा ॥
नाम अगाध कहों समझाई। सूरति सब्द अगाध सुनाई ॥
जो जिव चाहै अगम निवासा। सूरति करै सब्द में बासा ॥
जिन जिन सूरति सब्द सँवारा। सो चलि गये अगम पद पारा ॥
पावै भेद बस्तु लखि पावै। सो सतलोक सोक नसि जावै ॥
सुरति सब्द में भई अधीना। ताकर भेद काल नहिं चीन्हा ॥
सत्त नाम से काल नसाना। कोइ साधू काया मथि जाना ॥
काया दरपन सुरति समानी। सो साधू साहिब सम जानी ॥

॥ साखी ॥

कँवला काल निरंजना, तिन बस कीन्हा घाट।
भिन्न भिन्न दरसाइ कै, सतगुरु दीन्ही बाट ॥

॥ दोहा ॥

जीव चला घर आपने, काल छेकि जम जार ॥
नाम सुरति जब लख परा, भागे ठग बटमार ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "टुक सारा" है।

सुरत सब्द मिल लोक में, चढ़ि सतनाम जहाज।
तुलसीदास पिया मिले, कीन्हा सेज बिलास[1] ॥

॥ छन्द ॥

तुलसी लख जागे काल से भागे। लख ठग[2] दानी दूर किये ॥
इमरत रस चाखा सो सब भाखा। जीव अघाइ अनाद पिये ॥१॥
सतनामहि जाना पद पहिचाना। सुरति सब्द जो जाइ लिये ॥
जिन जो स्रुति सैना देखा नैना। अगम अपने पौ पाइ पिये ॥२॥
हिये खुल गइ आँखो सब बिधि भाखो। काल बरन बिधि बूझि[3] कही ॥३॥

॥ सोरठा ॥

बानी काल बिचार, तीनि बरन तोली सबै।
कहों बरन निरधार, सो कोइ साधू परखिहै ॥

॥ चौपाई ॥

काल बैन बिधि भाखि सुनाई। ता की अब मैं करों लखाई ॥
बानी तीनि तीनि बिधि जानी। कँवल मध्य में कहों बखानी ॥
कौन बरन वे कँवल रहाई। जाकी बिधि बिधि कहौं बुझाई ॥
कोने बरन निरंजन देवा। तिन का बरन बताओं भेवा ॥
करिया बरन काल को भाई। सेत रक्त वे कँवल रहाई ॥
सुन्नि के बरन निरंजन देवा। तिन कर कहों निरख सब भेवा ॥
अब बानी का कहौं बिचारा। बूझै साध करै निरवारा ॥
बानी कौन निरंजन होई। बानी कौन काल की सोई ॥
बानी कौन कँवल की लीन्हा। सो सब निरखि बताओं चीन्हा ॥
बानी अधर निरंजन सोई। बानी क्रोध काल की होई ॥
बानी मेल कँवल कर लीन्हा। येहि बिधि से तीनो हम चीन्हा ॥

॥ साखी ॥

निरगुन सरगुन लखि परै, काया काल बिचार ॥
आदि पुरुष सत लोक में, सो घर अधर हमार ॥ १ ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह दोहा बिल्कुल निराला है—
सूरति शब्द मिलि लोक में, चढ़ी नाम की लार। निज घर अपना पाइ कै, तुलसी कहै बिचार।
(२) दुर्ग। (देखो नोट पृष्ठ ४१)। (३) मुं० दे० प्र० के पाठ में 'बूझि' की जगह 'भूल' है।

घट घट में सब लखि परा, भिनि भिनि अगम पसार।
तन बिच सोला द्वार की, तुलसी कहत पुकार ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

सोला द्वार भेद कहौं भाखी । जा की बरन बिधी कहूँ साखी ॥
प्रथम द्वार का भेद बताऊँ । जा की बिधि बरतंत सुनाऊँ ॥
प्रथम मूल दीप गति गाऊँ । जा की नाम ठाम समझाऊँ ॥
सतगुरु गुप्त भेद लखवावै । सोला द्वार भेद जब पावै ॥

॥ द्वार भेद ॥

परथम सहस कँवल में द्वारा । दूसर अकह कँवल के पारा ॥
तीसर द्वार गगन के नीचे । चौथा द्वार अधर के बीचे ॥
जहँवाँ बैठा कंदर[1] काला । जिनहिं बिछाया जग जम जाला ॥
पंचम द्वार दसौ दिस बाहिर । मन रस बैठा जग में जाहिर ॥
भँवर गुफा बिच छठवाँ द्वारा । कँवल भँवर तहँ बसै नियारा ॥
सतवाँ द्वार दसो के दहिना । पाँचो भूत सूत बिन सैना ॥
अठवाँ मूल चक्र के माहीं । बैठा मूल मोह रस राहीं ॥
नौवाँ द्वार ताल में होई । स्वाँसा पवन चलावै सोई ॥
ये नौ द्वार काल के जाना । दसवाँ द्वारा अधर बखाना ॥
द्वारा चारि गुप्त गुहराई । जानै साध संत जिन पाई ॥
ऐसे चौधा भेद पुकारा । पन्द्रा द्वार सत्त के पारा ॥
सोला खिरकी अगम निसानी । जा में सत साहिब की बानी ॥
ता के परे द्वार नहिं देसा । जहँ इक साहिब नाम न भेसा ॥
संत सैल वह अगम निसानी । बसै संत वोहि धाम अनामी ॥
काया मद्धे काल बिचारो । निरंकार से पुरुष नियारो ॥
वा का भेद साध कोइ पावै । अगम निगम सोइ संध लखावै ॥
जोगी रमक राह नहिं जाना । जोग ज्ञान मत भेद भुलाना ॥
प्रानायाम जोग कोइ कीन्हा । लोइ कोइ कँवल उलट कर लीन्हा ॥
कोइ अष्टांग जोग जस कीन्हा । परम जोग रस रहे अधीना ॥

---

(१) गुफा ।

यह सब जोगी जोग कराया । कठिन काल सब घर घर खाया ॥
जोगी राह रीत दरसाऊँ । भिनि भिनि जोग बिधी बिधि गाऊँ ॥
जोग सब्द बिधि कहौं बखानी । बूझै जोग कीन्ह सोइ जानी ॥

॥ कहेरा ॥

जोगी राह रमक तन तारी, करत जोग जुग चारी हो ।
ज्ञान जोग मिसिरित[1] मन मैला, चढ़ि अकास नित खेला हो ॥१॥
अब तेहि राह रीति दरसाऊँ, बिधि भिनि भिनि गति गाऊँ हो ।
बस तन मन रस निरमल होई, इंद्री इस्क खुद खोई हो ॥२॥
ता पर तीन तलब पचबीसा, खड़ग ज्ञान दल पीसा हो ।
उनके निकट नेक नहिं जावै, थिर होइ पवन चढ़ावै हो ॥३॥
दोदा फूल भूल दिन राती, त्रिकुटी चढ़ि येहि भाँती हो ।
बिधि बायें[2] पिंगला गति केरी, इँगला दहिने फेरी हो ॥४॥
चंद सूर दम दम बस आवा, सुखमनि चटक चढ़ावा हो ।
बंक नाल पल पल नल खोली, अति अजपा नहिं बोली हो ॥५॥
ओहँग तत सोहँग मत जानी, पवन सब्द सँध आनी हो ।
थिर मन मेरडंड चढ़ तारी, झलक जोति उँजियारी हो ॥६॥
तत अकास आतम बिधि जानी, लख चर अचर बखानी हो ।
अंडा तत्त द्वार दरसानी, जोग ज्ञान गति बानी हो ॥७॥
यह सब काल खेल भरमाये, सास्तर बेद भुलाये हो ।
यह सब जोगि जोग बस कीन्हा, काल राह रस पीना हो ॥८॥
वे दयाल बिधि भेद अपारा, संत चीन्ह भये न्यारा हो ।
जोग ज्ञान पंडित सुनि मानै, सास्तर पढ़त पुरानै हो ॥९॥
जैसे नीर घड़ा जल माईं, रबि प्रतिबिंब दिखाई हो ।
जब लग घड़ा अकास समाना, तब लग तत दरसाना हो ॥१०॥
फूटा घड़ा अकास नसाना, रबि सूरज बिनसाना हो ।
तत भयौ नास भास भइ जोती, अंध कूप हिये होती हो ॥११॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "मिसिरित" की जगह "निसिरित" और (२) 'बिधि बायें" की जगह "विधिवा यह" है जो अशुद्ध जान पड़ता है ।

अंध अकास भास नहिं पावै, भूल भटक मन आवै हो ।
घट बिनसै तन देंही पावै, पुनि भव माहिं समावै हो ॥१२॥
ज्ञान जोग ब्रत संजम कीन्हा, तीनि ज्ञान गति चीन्हा हो ।
अंत काल जम जाल फँसाना, बहु बिधि काल चबाना हो ॥१३॥
तुलसी जोग जुगति कहि भारी, संत अगम गति न्यारी हो ।
संत राह रस अगम ठिकाना, जोगी भेद न जाना हो ॥१४॥

॥ सोरठा ॥

जोगी जुगति बिचार, संत भेद न्यारा कहै ।
अगम अगत गति पार, जोग ज्ञान पहुँचै नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

दूजा जोग कँवल षट गाऊँ । बसै तासु पर भेद बताऊँ ॥
चढ़ै चक्र षट जोगी गावै । तुलसी सब्द माहिं समभावै ॥
काया माहिं कँवल का बासा । कँवल कँवल कहूँ भूमि निवासा ॥

॥ कहेरा ॥

काया कलस कँवल बिधि भाखी, परख लखी हिये आँखी हो ।
भिनि भिनि जोग कँवल बिधि गाई, खुल षट भेद बताई हो ॥१॥
गुदा कर कँवल कहों दल चारी, गनपति बास बिचारी हो ।
छै पखड़ी दल कँवल कहाई, बसै ब्रह्मा तेहि ठाँई हो ॥२॥
अष्ट कँवल दल नाम बसेरा, बसै बिस्नु तेहि तीरा हो ।
दल बारा बिधि सिधि हिये माहीं, सिव कैलास कहाई हो ॥३॥
सोला कंठ कँवल बिधि जानी, जगदंबा जग रानी हो ।
सहस कँवल दल दीद निरंजन, घाट रोकि गल गंजन हो ॥४॥
ये सब काल जोग रस माया, सिध जोगी सब खाया हो ।
मुद्रा पाँच अवस्था चारी, तीनि ज्ञान गति धारी हो ॥५॥
जोगी काल कलेवर कीन्हा, तप संजम ब्रत धारी हो ।
कष्ट भोग फल काया पाया, चारि खानि गति चारी हो ॥६॥
कँवल जोग जोगी गति गाया, भर्म भोगि भौ आया हो ।
अब कहों संत भेद बिधि सारी, जोग कँवल से न्यारी हो ॥७॥

नौलख कँवल पार दल दोई[1], परे चारि दल सोई हो।
ता के परे अगमगढ़ घाटी, नीर तीर गहि बाटी हो ॥८॥
ता के परे परम गुरु स्वामी, जीव अधर घर धामी हो।
ता के परे परम पद माहीं, साहिब सिंध कहाई हो ॥९॥
ता परे संत घर न्यारा, अगम अगाध अपारा हो।
तुलसी सैल सुरति से कीन्हा, अगम राह रस पीना हो ॥१०॥
सोरठा—जोग आतमा ज्ञान, आगे मत जानै नहीं।
करि करि जोग बयान, काल खानि भौ रस रहै ॥

॥ चौपाई ॥

जोग निरंजन कीन्ह पसारा। यह सब काल जाल भ्रम डारा ॥
कँवल सहस्र समाधि लगावै। मन सोइ काल निरंजन पावै ॥
अंड खंड ब्रह्मंड पसारा। ये सब जानौ मन[2] की लारा ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस कहाये। ये सब मन मत गति उपजाये ॥
मन सोइ निरंकाल है भाई। ता कर बास अकास के ठाईं ॥
वा का सुनौ बास बिधि मूला। अगिनि अकास कँवल जहँ फूला ॥
तुलसी ता की बिधी बताऊँ। सब्द राह रस भेद सुनाऊँ ॥

॥ कहेरा ॥

अगिनि अकास जरत जल जाना, ता बिच कँवल फुलाना हो।
डंडी कँवल फूल नभ नारी, रज ब्रह्मा बिस्तारी हो ॥१॥
नाल वोही तम संकर तारी, बिस्नु बिपति जग भारी हो।
मिलि तीनौ मन मरम न जाना, कीन्हे बेद पुराना हो ॥२॥
निरंकाल काल अस फाँदा, जीव जोति जग बाँधा हो।
आदि अनादि पंथ नहिं जानी, करि कुपंथ ठग ठानी हो।
तीरथ बरत नेम बिधि[3] पाला, आस खानि फल डाला हो।

(१) मुं० दे० प्र० को पुस्तक में कड़ी ८ में 'दोई" की जगह "होई" है और (२) आगे की चौपाई की कड़ी ३ में "मन" की जगह "काल" है।
(३) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में कड़ी ४ में "बिधि" की जगह "नित" और

नर तन भटक भटक भटभेरा, बाँधा न भौजल[1] बेड़ा हो ॥४॥
तन सराय छूटत छिन माहीं, सेमरि सुवा पछिताई हो ।
तुलसीदास चेत नर अंधा, परखि लखौ दुख दंदा हो ॥५॥

॥ चौपाई ॥

ये सब मन का भेद बताया । मन रचि कीन्हा खेल बनाया ॥
धरती गगन चंद औ सूरा । निरंकाल रच मन मत मूरा ॥
सोइ मन अस बस बिष रस माईं । भूला भरम खानि गति जाईं ॥
सोरठा—तुलसी तरक बिचार, सार पार गति ना लखै ।
यह मन बिषम बिकार, ता की गति मति सब कही ॥

॥ छन्द ॥

तुलसी मति न्यारी कहत बिचारी । जगत भिखारी जाल भई ।
सुर नर मुनि नाचे कोइ न बाचे । आदि अंत सब छार छई ॥१॥
संतन सोइ जाने सुरति समाने । जिन वा घर की राह लई ।
मैं उनका चेरा किया निबेरा । सुरति सैल अज अधर गई ॥२॥
मन की गति पाई सुरति छुड़ाई । रामायन घट माहिं कही ।
ले लेख अलेखा सब बिधि देखा । संत चरन सत सार सही ॥३॥
चीन्हा वह द्वारा सुरति सम्हारा । नैन निहारा पार गई ।
तुलसी बिधि गाई सबै सुनाई । संत सहाई राह दई ॥४॥
कुञ्जी अरु तारा खोल किवारा । निरखि निहारा सूर भई ।
जाना सत नामा अगम ठिकाना । लखि असमाना तिमर गई ॥५॥
तुलसी रस ज्ञाना माहिं बखाना । धसि असमाना अगम लई ।
सोरठा—यह बिधि निरमल ज्ञान, सत मत सुरति लखाइया ।
जब पाया वह ठाम, आदि अंत सोइ सुधि भई ॥
सोरठा—कीन्हा ग्रंथ बनाइ, पाइ गाइ गति अस कही ।
भई गुरुन पद पार, सार पदम पद लखि रही ॥

॥ चौपाई ॥

आगे अगम लोक गति गाऊँ । सत्त नाम सत धाम लखाऊँ ॥

(१) "बाँधा न भौजल" की जगह "बाँधी नभ जल" है ।

जब नहिं निरकार और जोती। आदि अंत कछहू नहिं होती ॥
जब दयाल सत साहिब दाता। जब की सुनौ सकल बिख्याता ॥
मैं अजान कछु मरम न जानौं। संत कृपा सत साखि बखानौं ॥
सतगुरु संध संत दरसाई। उन रज कही महूँ पुनि गाई ॥
मैं बुधिहीन अचीन्ह अनारी। कीन्ही कृपा सुरति मतवारी ॥

सोरठा-तुलसी मनहिं बिचारि, संत अंत गति लखि परी।
भाख्यों सरनि सिहार, सार पार जस जस भई ॥

सोरठा--सत्त लोक सत नाम, और अनाम आगे कही।
सबहि संत ब्रत मान, मैं निकाम सरनै लई ॥

॥ चौपाई ॥

अब कहूँ आदि अगाध अनामी। ताकी गति मति संत बखानी ॥
जो कछु सत्त सीत उन केरी। महूँ पाइ मति निरखि निबेरी ॥
तुलसी जब जोइ जस जस भाखा। आदौ बिरछ पेड़ पत साखा ॥
पिरथम पुरुष अनाम अकाया। जास हिलोर भई सत माया ॥
माया नाम भया इक ठौरा। सत मत नाम बँधा इक डोरा ॥
सत्त लोक सत साहिब साँईं। सत्त मिले सत नाम कहाई ॥
चौथा पद संतन सोइ भाखा। सो सत नाम कीन्ह अभिलाखा ॥
सत्त नाम से निरगुन आया। ता को बेद ब्रह्म बतलाया ॥
ता की अब मैं कहों लखाई। त्रिकुटी रावन ब्रह्म कहाई ॥
माया कुमति ब्रह्म इक ठौरा। भया राम मन चहुँ दिसि दौरा ॥
चाँचौ इंद्री प्रकृति पचीसा। तीनि गुनन मिलि सरगुन ईसा ॥
इंद्री पिता भरत है भाई। गुन तन कुमति संग मन माहीं ॥
इच्छा सँग रँग मन मति भूला। खस परा बुंद भया अस्थूला ॥
ता को सब जग राम बखाना। ईस कर्म मन भर्म भुलाना ॥
निराकार मन भया अकारा। जोति मिली गुन तीनि पसारा ॥
ब्रह्मा बिस्नु भये महादेवा। इनकी उतपति मन मत भेवा ॥

सास्तर बेद संस्कृत बानी । ये सब मनमत गति उतपानी ॥
दस औतार जगत जग माया । यह मन और अनेक उपाया ॥
ऋषी मुनी जोगीसुर ज्ञानी । मन करता कर सब मिलि मानी ॥
तीरथ बरत बेद ब्यौहारा । जग भूला मन जाल पसारा ॥
जा से नाम भेद नहिं जानै । मनहिं राम को नाम बखानै ॥
नाम गती है अगम अपारा । ब्रह्म राम दोउ पावैं न पारा ॥
निरगुन ब्रह्म राम मन होई । नाम अगम गत अगत अघोई ॥
ता का पटतर मन पर लावै । ता से नाम भेद नहिं पावै ॥

॥ दोहा ॥

येहि बिधि आदि अनादि, लखा भेद भिनि सब कह्यौ ।
स्रुति निःनाम अधार, जाना जिन अन्दर कह्यौ ॥

॥ छन्द ॥

है निःनामी अकथ अनामी । दस दिसि लसि सर सैल कही ।
भाखा सतनामा ब्रह्म अकामा । माया मिलि मन जार लई ॥१॥
काया अस्थूला मन स है सूला । इंद्री बस भौ खानि मई ।
काया गति धारी कर्म बिचारी । भूल भटक भौ भार सही ॥२॥
सोरठा--काया रचन बिचार, जाही से ये जग भया ।
सो बिधि कहौं सँवार, बूझै जो जिन घट लखा ॥

॥ चौपाई ॥

उतपति जोनि खानि मन दीन्हा । गर्भ भीतर बालक को चीन्हा ।
उतपति कारज बीरज डीठा । यह मन बात लागि मद मीठा ।
या कर लेखा कहौं बनाई । तब जग हिरदे सत्त समाई ।
सुनौ गर्भ की बात बिचारा । मात पिता रज बीर्ज सँवारा ।
उलटा उरधमुखी दुख पावै । तन भीतर का को गोहरावै ।
भया बिकल मुख नरक समाना । जठर अगिन तन तपन जराना ।
आजिज भया बिकल बहु भारी । अति दुख में रहा बिकल दुखारी ।
तब साहिब से अरज पुकारी । बंदीछोर मोहिं लेव उबारी ।

निस दिन बँदगी करौं तुम्हारी । अब मोहिं काढ़ो महा दुखारी ॥
अब तोहिं नेक न बिसरौं साईं । बार बार सुमिरौं चित लाई ॥
दीन दुखी से मन नहिं लाऊँ । आठ पहर तुम्हरा गुन गाऊँ ॥
सोरठा--इतना किया करार, जब गर्भ से बाहिर भया ।
भूला सिरजनहार, तुलसी भौ जग जाल में ॥

॥ चौपाई ॥

अब बाहिर का लागा रंगा । माता मोह पिता के संगा ॥
लरिकाई लट पट जग खेला । तोतरि बात मात सँग बोला ॥
भाई बंद सकल परिवारा । ठुमठुम पाँव चलै तेहि लारा ॥
लरिकाई ऐसी बिधि खोई । तरुन भये तरुनी सँग मोही ॥
मन की मौज करै रस रंगा । भूला ज्ञान भया चित भंगा ॥
अब साहिब की याद बिसारी । माया मोह बँधा संसारी ॥
मद में मस्त कछू नहिं सूझै । साध संत को कछू न बूझै ॥
खान पान निस दिन मद माता । कामिन संग रहै रँगराता ॥
जिन यह घट का साज बनाया । ताहि बिसारि जगत मन लाया ॥
यह जग झूँठ सराय बसेरा । भोर भये उठि सूना डेरा ॥
ऐसे या जग का ब्योहारा । जनम जुवा जस बाजी हारा ॥
नेक न साहिब से मन लाया । बिरध भया तब अति दुख पाया ॥
ऐसे सकल जनम गयो बीती । नेक न जानी साहिब रीती ॥
अंत समय जम आनि सतावा । मुसकिल कष्ट महा दुख पावा ॥
मार परै जब कौन बचावै । कठिन काल बिकराल[1] सतावै ॥
दोहा—ऐसा नर तन पाइ कै, बादइ जनम गमाइ ।
सो अस अन्धा जग भया, परै नरक में जाइ ॥

॥ छन्द ॥

ऐसा जग भूला सहै जम सूला । धर्मराय तन त्रास दई ॥
निज नाम न जाना बहु पछिताना । जिन नित काल की मार सही ॥१॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "बिकराल" की जगह "जब आइ" है ।

ता से नर चेतौ छाँड़ि अचेतौ । नर तन गति ये जाति बही ॥
तुलसी कही साची कोउ न बाची । बिन सतसंगति पार नहीं ॥२॥
सोरठा—तुलसी देखि बिचार, यह तन मन को सुपन है ।
बहि मत जाइ गँवार, यह जग जल भौ पेखना ॥

॥ चौपाई ॥

निःनामी निःअच्छर भाखौं । अब निज सुरति नाम से राखौं ॥
ता से जीव होइ निरवारा । भवसागर से उतरै पारा ॥
संत कृपा सत संगति होई । सतगुरु मिलि होइ नाम सनेही ॥
अब मैं कहों आदि गति न्यारी । घट देखै सो लेइ बिचारी ॥
सब गति भिन्न भिन्न कहों भाखा । जानै जीव मिटै अभिलाखा ॥
पिंड माहिं ब्रह्मंड बताऊँ । भिन्न भिन्न ता को दरसाऊँ ॥
जो बाहिर सोइ पिंड दिखाई । देखा जाइ पिंड के माहीं ॥
तुलसी ताहि पाइ धसि देखा । घट भीतर भिनि भिन्न बिबेका ॥
जस जस संत कहा घट लेखा[1] । तस तस तुलसी नैनन देखा ॥
अब मैं या की कहों लखाई । जो घट भीतर दीन्ह दिखाई ॥
तुलसि निकाम संत कर बंदा । जित जित जोश्रों जग सब अंधा ॥
कोइ न मानै बात सत मेरी । फिरि फिरि कर्म बँधै भौ बेरी ॥
भिन्न भिन्न संतन गोहरावा । काहू हिरदे चेत न आवा ॥
घट में सुरति सैल जस कीन्हा । कागभसुण्ड भाखि तस दीन्हा ॥
कागभसुण्ड कितहुँ नहिं भयेऊ । तुलसी सुरति सैल तन कहेऊ ॥
कागभसुण्ड काया के माहीं । राम रमा मुख पैठा जाई ॥
तुलसी ता की गति मति जानी । रामायन में कीन्ह बखानी ॥
यह सब घट में भाखि सुनाई । अंधे जिव अंतै लै जाई ॥
भरत चत्रगुन लछिमन भाई । यह घट माहिं कहेउ समझाई ॥
सुमितरा केकई कौसिल्या । ये तन भीतर घट में मिलिया ॥
सीता दसरथ राम कहाये । ये सब घट भीतर दरसाये ॥

(१) मुं॰ दे॰ प्र॰ की पुस्तक में यह कड़ी ऐसे है—"आगे जस जस संतन लेखा" है ।

सरजू सुरति अवध दस द्वारा । ये घट भीतर देखि निहारा ॥
रावन कुम्भ लंकपति राई । त्रिकुटी ब्रह्म बसे तेहि माहीं ॥
रावन ब्रह्म कहा हम जोई । त्रिकुटी लंक ब्रह्म है सोई ॥
मन्दोदरी भभीषन भाई । इन्द्रजीत सुत त्रिकुटी माहीं ॥
ये संबाद कहा घट माहीं । रामायन घट माहिं बनाई ॥
जो कोइ अंध जीव नहिं मानै । पुनि पुनि परै नरक की खानै ॥
संतन की गति कोइ न जानै । पिंड माहिं ब्रह्मंड बखानै ॥
उनकी गति मति कोइ कोइ जानै । बिन सतसंग नहीं पहिचानै ॥
उनकी कृपा दृष्टि जब होई । तब अदृष्ट को बूझै सोई ॥
पिंड ब्रह्मंड सैल कोइ पावै । तब सतगुरु सत दया लखावै ॥
अब ब्रह्मण्ड की कहौं लखाई । कोइ कोइ साधू बिरले पाई ॥
जो कोइ भये अधर में लीना । जिन को आया संत अकीना ॥
जिन जिन सुरति सैल घट कीन्हा । ता की गति मति बिरले चीन्हा ॥
अब मैं अपनी कहौं दृढ़ाई । सुरति सैल घट माहिं लखाई ॥
रावन राम सकल परिवारा । ये घट भीतर चुनि चुनि मारा ॥
और अनेक कहे बहु भाँती । ये सब माया की उतपाती ॥
ये मत सत्त सत्त जिन माना । उनका आवागवन नसाना ॥
या में कोई भर्म जो लावै । बार बार चौरासी पावै ॥
मैं अपने अस देख बखानी । संत कृपा से महुँ पुनि जानी ॥
अब ब्रह्मंड पिंड कर लेखा । भाखा जोइ निज नैनन देखा ॥
दोहा--पिंड सैल ब्रह्मण्ड की, जस जस गति मति मोर ।
जो सत मत संतन कही, देखा घट गढ़ तोर ॥

॥ छन्द ॥

गाया घट लेखा अगम अलेखा । जिन जिन देखा सार सही ।
महुँ पुनि भाखी देखा आँखी । सुरति धसि दस द्वार गई ॥१॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह चौपाई और आगे की दो छूट गई हैं ।

संतन जोइ ईगा महँ पुनि पाई। आदि अंत गति कहनि कही ॥
जो जो घट माहीं सब दरसाई। जो रचना ब्रह्मंड मई ॥२॥
जिन जिन निज जानी देख बखानी। जिन नहिं मानी भर्म सही ॥
पंडित गति ज्ञानी भर्म भुलानी। भेष भेद भौ माहिं कही ॥३॥
छत्री और ब्राह्मन बैस अपावन। सूद्र मती छर छार भई ॥
का को गोहराई आदि न पाई। तुलसी सब देखा भर्म मई ॥४॥

॥ सोरठा[1] ॥

ब्राह्मन अरु पुनि सूद्र, ये बूड़े सब उद्र को।
बैस्य बसा भौ बास, कस अकास डोरी गहै ॥

॥ चौपाई ॥

सब ये घट की सैल बखाना। पिंड माहिं ब्रह्मंड दिखाना ॥
आगे घट का भेद बताई। अब जो सुनो कहौं समझाई ॥
तिल परमाने लगे कपाटा। मकर तार जहँ जिव की बाटा ॥
इतना भेद जानि जिन कोई। तुलसीदास साध है सोई ॥
आगे अदबुद ज्ञान अपारा। पिरथम घट का कहौं बिचारा ॥

॥ अथ घट का भेद और ठिकाना ॥

(सवाल)

१ पृथ्वी का माथा	कहाँ है ?	९ आकास का पोत	कहाँ है ?
२ सूर का तेज	,,	१० सुरति सहदानी	,,
३ चंद्र की जोति	,,	११ जीव की बानी	,,
४ पानी का मूल	,,	१२ जीव का नाम	,,
५ कँवल का फूल	,,	१३ सुरति का ठाम	,,
६ वायु की नाभी	,,	१४ ध्यान की सुरति	,,
७ गनेस की स्वावी	,,	१५ ज्ञान की मूरति	,,
८ समुद्र का सोत	,,	१६ सुरति की निरति	,,

(1) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह सोरठा ऐसे है—
"ब्राह्मन ऊद्र सगांइ। छत्री बूड़े लड़न में।
बैस शूद्र भर्म मांइ। को अकाश डोरी गहै ॥"

१७ सुमेर की जड़ कहाँ है ?		२६ गुनी का गुन कहाँ है ?	
१८ तिल भर हाड़ काया में कहाँ है ?		२७ राग का रस	,,
१६ गगन का कलेजा	,,	२८ सुर का आकार	,,
२० मन का मुख	,,	२६ आकार की आदि	,,
२१ काम की आदि	,,	३० अंत की समाधि	,,
२२ देही का नूर	,,	३१ माया की धुनि	,,
२३ बदन का पिंजर	,,	३२ धुनि की सुन्न	,,
२४ सिव का ध्यान	,,	३३ सुन्न का सब्द	,,
२५ बेद का भेद	,,	३४ ज्ञान का मूल	,,

सोरठा—इतना देहु बताइ, जीव कहाँ समझाइ कै।
अगम निगम घर पाइ, तब तुलसी सब बिधि लखै॥

॥ जवाब । चौपाई ॥

आगे उलटा भेद बताऊँ। अगम निगम घट भेद सुनाऊँ॥
अब या का अरथंत सुनाऊँ। घट में ठीका ठौर बताऊँ॥
जो कोइ साध सैल घट कीन्हा। सुन करि अर्थ होइ लौ लीना॥

अर्थ—१ पृथ्वी का माथा मैनागिरि देस में है।
२ सूर का तेज उदयागिरि परबत में है।
३ चंद्र की जोति चंदागिरि परबत में है।
४ पानी का मूल निरंजन के दीदे में है।
५ कँवल का फूल अछै दीप में है।
६ वायु की नाभी रंभा के पेड़ में है।
७ गनेस की स्वाबी मानसरोवर में है।
८ समुद्र का सोत समीरूख में है।
६ आकास का पोत बाराह के माथे पर है।
१० सुरति सहदानी सब्द में है।
११ जीव (हंस) की बानी अष्टकँवल में है--जीव अरूपी द्वादस कँवल में है।
१२ जीव का नाम सुन्न कँवल में है।

१३ सुरति का ठाम दोइ दल कँवल में है।

१४ ध्यान की सुरति गगन के ऊपर नयन नासिका के अग्र बीच में है।

१५ ज्ञान की मूरत ब्रह्मण्ड कँवल में है।

१६ सुरति की निरति साहिब के सब्द में है।

१७ सुमेर की जड़ नाग के कलेजे में है।

१८ तिल भर हाड़ पाँच इंद्रियों में है।

१६ गगन का कलेजा राग के आकार में है।

२० मन का मुख षटदल कँवल में है।

२१ काम की आदि संकर की सुरति में है।

२२ देंही का नूर हरि के पास है।

२३ बदन का पिंजर पृथ्वी के भीतर है।

२४ सिव का ध्यान हरि के सब्द कँवल में है।

२५ बेद का भेद चार दल कँवल में है।

२६ गुनी का गुन षटदल कँवल में है।

२७ राग का रस पुरुष के सब्द में है।

२८ सुर का आकार सुन्न में है।

२६ आकार की आदि अनहद में है।

३० अंत की समाध साहिब के लोक में है।

३१ माया की धुन चतुरदल कँवल में है।

३२ धुन की सुन्न बेद के मूल में है।

३३ सुन्न का सब्द निरंतर में है।

३४ ज्ञान का मूल नाम में है।

दोहा--ये अस्थान बताइया, साध सुनो बखान।
कहै तुलसी घट भीतरे, सुरति से पहिचान॥

सोरठा--रामायन घट सार, सुरति सब्द से लखि परै।
गगन कंज कर बास, ऊपर चढ़ि जिन देखिया॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनियौ ब्रह्मण्डी लेखा। कोटिन परलै घट बिच देखा॥

भीतर गुफा एक जो कीन्हा । कोटि प्रलै उबार जिव लीन्हा[1] ॥
सब्द निरंतर सत है भाई । गहै जीव पहुँचै जब जाई ॥
घट का मथन सुरति से[1] साधै । वा को काल कभी नहिं बाँधै ॥
कोटिन सूर ब्रह्मंड के माहीं । कोटिन कोटि देखि सब ठाहीं ॥
घट बिचार घट ही के माहीं । ता में ब्रह्मा बिस्नु रहाईं ॥
सिव संकर सब घट में फंदा । घट में नदी अठारा गंडा ॥
घट में देखे सात समुन्दर । जिन से जल पहुँचै नभ अंदर ॥
घट में तीरथ बरत मँझारी । घट में देखा कृष्न मुरारी ॥
घट में जोधा सामन्त होई । घट में राजा परजा सोई ॥
घट में हिंदू तुर्क दोइ जाती । घट में कुला कर्म की पाती ॥
घट में नेम दया अरु धर्मा । घट में पाप पुन्य बहु कर्मा ॥
घट में डंड बंध दोउ भाई । जो कछु बाहिर सो घट माईं ॥
घट में बास बसन जग लागा । घट में कामिनि खेलै फागा ॥
घट में षट पलास सोइ फूला । घट में लोग प्रजा झकझूला ॥
घट में स्वर्ग नर्क हैं दोई । घट में जनम मरन पुनि होई ॥
घट में कथा पुरान सुनावै । घट में माया करम करावै ॥
घट में चोरी चोर अपारा । घट में करता सिरजनहारा ॥
घट में राजा राज कराई । घट में चौकी पहरा भाई ॥
घट ही में सब न्याव चुकावै । घट में रागी तान सुनावै ॥
घट में नाच कूद रे भाई । घट में राग अलाप सुनाई ॥
घट में साह महाजन होई । घट में सब्द सुन्न है सोई ॥
घट में राजा है बलि बावन । घट में सीता रघुपति रावन ।
घट में लंका सा गढ़ भाई । घट में छानवे मेघा छाई ॥
घट में बैठे पाँचो नादा । घट में लागी सहज समाधा ॥

---

(१) मु॑० दे० प्र० की पुस्तक में दूसरी चौपाई इस तरह है—"भीतर गुफा एक है भाई । उबरे जीव पार जब जाई"; और चौथी चौपाई में "सुरति से" की जगह "जीव कोइ" है ।

घट में चारौ बेद रहाई। घट में असंख्य ब्रह्म समाई ॥
घट में सात स्वर्ग पाताला। घट में बैठा काल कराला ॥
जो कछु बाहिर सो कछु अंतर। घट का भेद घटहि में मन्तर ॥
घट में अरसठ तीरथ भाई। घट में गंगा धार बहाई ॥
घट में लोग करैं अस्नाना। घट में तीनो लोक समाना ॥
घट की थाह कोई नहिं जाना। घट में पिंड ब्रह्मंड समाना ॥
घट में हाट बजार लगाया। घट में दामिनि मन पति पाया ॥
घट में परबत बृच्छ पहारा। घट में बैठे दस औतारा ॥
घट में हाथी घोड़ा होई। घट में हिरन रोझ[1] सब कोई ॥
ऊँच नीच परबत झक झाई। निस दिन झरना बहत रहाई ॥
मगर मच्छ घट माहिं मँझारा। घट में बस्ती और उजारा ॥
घट में सुकदेव ब्यास अरु नारद। घट में ऋषी मुनी अरु सारद ॥
घट में राजा बरन कुबेरू। घट में माँडे आठ सुमेरू ॥
कहँ लगि घट का कहौं पसारा। घट में अनेक बिधान सँवारा ॥
जो सब घट कहि बरनि सुनाई। तौ जग कागद मिलै न स्याही ॥

दोहा—घट भीतर जो देखिया, सो भाखा बिस्तार ॥
भेदी भेद जनाइया, तुलसी देखि निहार ॥

॥ छन्द ॥

सब ठीक बखाना घट परमाना। घट घट में सब ठाम ठई ॥
बाहिर सोइ अंदर सब घट मन्दर। देखि हिये बस बास कही ॥
बूझै कोइ ज्ञानी अंतरजामी। मूरख मूढ़ न चेत भई ॥
आगे पुनि गाऊँ बरनि सुनाऊँ। इन सब के अस्थान मई ॥
तुलसी तन तारा खोलि किवारा। पैठि मँझारा सार लई ॥

सोरठा—या बिधि तन मन ज्ञान, भीतर देखा जोइ कै।
साधू करौ प्रमान, भिन्न भिन्न तत मत कहा ॥

(१) हिरन की एक जाति।

॥ चौपाई ॥

अब उनके अस्थान बताऊँ। भिनि भिनि ग्रंथन में समझाऊँ ॥

॥ कोठों के नाम ॥

कोठा प्रथम उतेसुर नाईं। बैठे ब्रह्मा बेद पढ़ाई ॥
दूसर धरम-गंध दरसाई। बैठे बिस्नू ज्ञान सुनाई ॥
तीसर कोठा धुन-धर भाई। बैठे संकर जोग कराई ॥
चौथा कोठा रक्तमनि गाई। बरुन बैठि जहँ राज कराई ॥
हरि संग्रह पंचम बतलाऊँ। आठ सुमेर बसैं तेहि ठाऊँ ॥
बिजै-धुंध षष्टम कहलाई। मन की कला फिरै तेहि ठाईं ॥
कोठा सतवाँ नगरा नाऊँ। अन्नदेव बैठे तेहि ठाऊँ ॥
कोठा अठवाँ रुक्मन ताला। जहँवाँ बैठे मदन गोपाला ॥
नौवाँ कोठा गौड़ मन माली। दुरमति माया करै बिहाली ॥
दसवाँ कोठा उघट्ट नावाँ। सहस कोटि ऊगैं तेहि ठावाँ ॥
करभौनी एकादस नाऊँ। तीनि लोक में जोति समाऊँ ॥
द्वादस कोठा बिषमदे गावा। सुरनर मुनि जहँ ध्यान लगावा ॥
कोठा त्रयोदस मलदू द्वारे। जोगिनि चौंसठ लाख निहारे ॥
चौधा कोठा गगनधर नाऊँ। लच्छ अलच्छ बैठि तेहि ठाऊँ ॥
हमसुन्दर पन्द्रा कर नावाँ। बास सुगंध बसै तेहि ठावाँ ॥
कोठा सोला अतिसुर नाऊँ। पाँच बजार बसै तेहि ठाऊँ ॥
कोठा सत्रा सिषरचल नाऊँ। अठरा गंडा नदी तेहि ठाऊँ ॥
कठरा कोठा कड़ेसुर नाऊँ। जीव को तेज बसै तेहि ठाऊँ ॥
कोठा उनीस बंकचल नाऊँ। मुरली सुहावन बजै तेहि ठाऊँ ॥
बिसवाँ कोठा कुलंग कहाई। सुकृत बाजा बजै सुहाई ॥
इकइस कोठा भानसुर नाऊँ। अलख निरंजन है तेहि ठाऊँ ॥
बाइस कोठा धुँधेसुर नाऊँ। मन को ध्यान बसै तेहि ठाऊँ ॥
तेइस कोठा तरंगी ताला। बिछई जे जग में जमजाला ॥
चौबिस कोठा कंठसुर नाऊँ। सुमति बिचार बसै तेहि ठाऊँ ॥

पच्चिस कोठा प्रकृति[१] नाऊँ । मल्ल को पती बसै तेहि ठाऊँ ॥
छब्बिस कोठा मुदापल नाऊँ । पवन प्रधान बसै तेहि ठाऊँ ॥
सताइस कोठा सुताचल नाऊँ । मन अलीप बैठे तेहि ठाऊँ ॥
अठाइस कोठा धरनीधर नाऊँ । माया मोह बसै तेहि ठाऊँ ॥
उंतिस कोठा कमंची नाऊँ । बादल मेघ उठै तेहि ठाऊँ ॥
तिसवाँ कोठा निरमल नामूँ । साहिब पलँग बिछा तेहि ठामूँ ॥
इकतिस कोठा करोमल नामूँ । नवो नाथ बसते तेहि ठामूँ ॥
बत्तिस कोठा बनासुर नामा । नौ कुत्ते बैठे तेहि ठामा ॥
तेंतिस कोठा कनंधू नामूँ । जम का तेज बसै तेहि ठामूँ ॥
चौंतिस कोठा जमाउत नामा । जमुना नदी बसै तेहि ठामा ॥
पैंतिस कोठा सकरदू[२] सेवा । कामदेव जहँ झरि झरि बहता ॥
छत्तिस कोठा गनकू नामूँ । क्रोध कलेस बसै तेहि ठामूँ ॥
सैंतिस कोठा अवर धुर धुंधा । बैठ कृष्न जहँ डारै फंदा ॥
अरतिस कोठा बंसबल नाऊँ । चौथा कामिनि हैं तेहि ठाऊँ ॥
उन्तालिस करियाधर नाऊँ । बैठे दया धरम तेहि ठाऊँ ॥
चालिस कोठा किरिकोता नामूँ । सात समुद्र बसै तेहि ठामूँ ॥
इकतालिस भौरादे नामा । नवौ कुली नाग तेहि ठामा ॥
बयालिस कुम्भेसुर नाऊँ । बारह कुम्भ बसैं तेहि ठाऊँ ॥
तेंतालिस भगताधर नावाँ । भय और त्रास बसै तेहि ठावाँ ॥
चवालीस कुसमाधर नाऊँ । चारो बेद बसै तेहि ठाऊँ ॥
पैंतालिस मायारट नाऊँ । रोग अरु दोष बसै तेहि ठाऊँ ॥
छेयालीस मलया गिरि नावाँ । हंस बिहंग बसै तेहि ठावाँ ॥
सैंतालीस हलासुर[३] नामा । तीरथ अरसठ हैं तेहि ठामा ॥
अरतालिस कुकरंदर न्यारा । जहँ है सत्त सुकृत[४] का द्वारा ॥

(१) मु० दे० प्र० के पाठ में "परकुटी" है। (२) एक लिपि में "सरंद्व" नाम लिखा है। (३) एक लिपि में "कोलाहर" नाम दिया है। (४) मु० दे० प्र० की पुस्तक में "सुकृत" की जगह "मुक्त" है।

कोठा उंचास मरमी नाऊँ। पवन अकास उठै तेहि ठाऊँ॥
कोठा पचास घूधर नामूँ। हरि को तेज बसै तेहि ठामूँ॥
कोठा इक्यावन मजकुर नामा। सहस कँवल फूला तेहि ठामा॥
बावन कोठा जरादे नामूँ। अगिनी जरै ऊँच तेहि ठामूँ॥
त्रेपन कोठा तेराधर नामूँ। धीर गंभीर बसै तेहि ठामूँ॥
चौवन कोठा सिसंधर नावाँ। सत संतोष बसै तेहि ठावाँ॥
पचपन कोठा हिंडोला नामूँ। नारी नवो बसै तेहि ठामूँ॥
छप्पन कोठा निरधर नाऊँ। अठारा भार बसै तेहि ठाऊँ॥
सतावन कोठा कफादे नावाँ। जीव की मीच बसै तेहि ठावाँ॥
अट्ठावन सुमेरबल नावाँ। मङ्गल पुरुष चरित्तर गावाँ॥
उनसठ कोठा छैसुन्दर नामाँ। आतम रूप बसै तेहि ठामाँ॥
साठ कोठा धौलाधर नाऊँ। तीनो लोक मही तेहि ठाऊँ॥
इकसठ कोठा जैसुन्दर नामूँ। बलधर पुरुष बसै तेहि ठामूँ॥
बासठ कोठा हीरापुर नामूँ। नीर चुवै झरि झरि तेहि ठामूँ॥
त्रेसठ कोठा कलाकर नावाँ। चौथा भवन बसै तेहिं ठावाँ॥
चौंसठ तिल बिक्रम कहलावै। जल थल कुम्भ बसै तेहि ठाँवै॥
पैंसठ कोठा सुरतसर नामूँ। जप तप जज्ञ करै तेहि ठामूँ॥
छासठ कोठा सिखरिचल नाऊँ। जोगी असंखन जोग कराऊँ॥
सरसठ कोठा अनन्दी भाई। जहँवाँ काल बसन नहिं पाई॥
अरसठ कोठा चितादे नाऊँ। चित का चक्र फिरै तेहि ठाऊँ॥
उन्हत्तर कोठा सनीता नाऊँ। ज्ञानी बुद्ध बसै तेहि ठाऊँ॥
सत्तर कोठा सलीका नाऊँ। सुन्न की धुन्न उठै तेहि ठाऊँ॥
इखत्तर कोठा उदाधर नाईं। जहँ जग पालक बैठि रहाई॥
बहत्तर कोठा गंजधर नाऊँ। करनी मूल बसै तेहि ठाऊँ॥
कोठा बहत्तर कहेउ बखानी। ले लख भीतर जो पहिचानी॥
यह घट देखि देखि सोइ भाखा। बूझि बूझि साधू मन राखा॥
रामायन घट कहि समझाई। काया भीतर कथि दरसाई॥

काया खोज मुक्ति जब होई। बिन खोजे सब गये बिगोई ॥
काया भीतर सब की पूजा। सिव सनकादि आदि नहिं सूझा ॥
बाहिर कथि कथि रहे भुलाई। काया भीतर बस्तु न पाई ॥
कोठा बहत्तरि हम कहि दीन्हा। कोऊ न काया भीतर चीन्हा ॥
सास्तर संसकिरत में फूले। ऋषी मुनी जोगेसुर भूले ॥
या से राह घाट नहिं पाई। बहे कर्म भौजल के माईं ॥
दोहा--सत्त नाम सूरति गहै, सतगुरु सरन निवास।
तुलसी तरँग तरास ज्यौं, लखि पहुँचै तेहि पास ॥

॥ छन्द ॥

घट की गति गाई भाखि सुनाई। लखि पाई पद पार कहीं ॥
जो जो परमाना घट मठ जाना। ठाम ठिकाना ठौर मईं ॥१॥
तुलसी तस देखा घट बिच लेखा। पेखा तत मत पूर जहीं ॥
आगे जस होई भाखौं सोई। जो जो सिद्ध[1] समाधि लईं ॥२॥
सोरठा--सिध चौरासी नाम, घट भीतर सब देखिया।
ता कर कहौं बखान, जस जस ठीका नाम गुन ॥

॥ चौपाई ॥

सिध चौरासी घट में होई। ता को देखा सुरति बिलोई ॥
ता कर ठौर ठिकाना भाखौं। आदि अंत ठीक कर ताकौं ॥
सिद्ध सिद्ध के नाम बताओं। छानि भेद सूच्छम दरसाओं ॥

॥ सिद्धों के नाम[2] ॥

१ अजोनी	सिद्ध	८ कोमार	सिद्ध
२ अजर दया	,,	९ बालागिर	,,
३ पवनगिरि	,,	१० जैदेव	,,
४ उचंद कँवल	,,	११ नलमोवर	,,
५ उदद कँवल	,,	१२ परसोतम	,,
६ पेषनादार	,,	१३ त्रिकुटीकमल	,,
७ नालीवर	,,	१४ पुरुषोपत	,,

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "सिध" है जो छापे की भूल मालूम होती है।
(२) एक लिपि में यह नाम-भेद है—११—नल कमोद।

१५ नलवोती	सिद्ध	४५ सुकृत जीव	सिद्ध
१६ बाइभन्त	"	४६ ऊच माया	"
१७ नाल पाजरी	"	४७ सिंह नाद	"
१८ पायापाल	"	४८ सहज तेज	"
१६ जैपाल	"	४६ बेरंग नाद	"
२० अजया काल	"	५० फूल काज	"
२१ केदारली	"	५१ केदार कोठ	"
२२ रतनागिरि	"	५२ सुचलेन	"
२३ मेलमहंत	"	५३ मजा गुनी[1]	"
२४ उदया	"	५४ तानी गंभीर	"
२५ झकझेला	"	५५ जगपती	"
२६ उषमजार	"	५६ गंधर्ब सूत[1]	"
२७ मनउतगिरि	"	५७ रतनागिरि[1]	"
२८ सरपसोष	"	५८ सरोज मल	"
२६ जंभीर नागर	"	५६ कुल कुम्भ	"
३० हंस मोह	"	६० पिगोभ	"
३१ बिराज	"	६१ गोड़ आसन	"
३२ ललित दया	"	६२ पत्त पती	"
३३ करुनामय	"	६३ भाउ नाद	"
३४ बाष जार	"	६४ पोहप माल	"
३५ जीव भूषन	"	६५ नरदया	"
३६ उदीत साह	"	६६ इंद्र मनी	"
३७ जगतधार	"	६७ डंभीर	"
३८ साह पाल	"	६८ कहूकितोहल	"
३६ परन पोष	"	६६ जंभीर नाद	"
४० नौनागर	"	७० द्याल पती	"
४१ ज्ञानपती	"	७१ तेनौगार	"
४२ साधगिरि	"	७२ काल मुनी	"
४३ नलदेव	"	७३ प्रेम मुनी	"
४४ सहस अपढ़	"	७४ हंस करनाग	"

(१) एक लिपि में यह नाम भेद है। १५-बिनवो, १६-मलकूत, २५-कमाल, २६-उष्मज, २८-बालपोष, ५३-नाजगुनी, ५६-मदार, ५७-अल्प सार।

७५ मल मोद	सिद्ध	८० सुख बाच	सि
७६ कूर नाकर	,,	८१ नेह नाच	,,
७७ सुषन सरीष	,,	८२ बस करन	,,
७८ सुरति लोक	,,	८३ भय मेटन	,,
७९ साध बाच	,,	८४ सुच भाव	,,

॥ चौपाई ॥

चौरासी सिधि कथि बतलाई। सिधि इतने घट भीतर छाई
साधू कोइ करै परमाना। जिन घट के अंदर पहिचाना

॥ सोरठा ॥

चौरासी सिधि देखि, घट रामायन में कहे।
अंतर काया पेखि, भिन्न भिन्न दरसाइया ॥

॥ चौपाई ॥

प्रकृति पचीस कहौं अनुसारी। ये सब घट के माहिं बिचारी
काया भेद देखि हम चीन्हा। ता कर लच्छ भाखि सब दीन्हा

॥ सोरठा ॥

प्रकृती भेद बिचार, नाम नीक सबकी कही।
तुलसी तनहिं निहार, मन इस्थिर जब होइ जेहि ॥

॥ चौपाई ॥

कौन कौन प्रकृती रे भाई। ता कर घर मैं देंव बताई

॥ प्रकृतियों के नाम ॥

१ भाव	प्रकृति	१२ उदासमुद्र	प्रकृति
२ कृता	,,	१३ चंचलराज	,,
३ देंहधर	,,	१४ मजा गुन	,,
४ उषमजार	,,	१५ मजा नन्द	,,
५ इंद्रजै	,,	१६ अभयानन्द	,,
६ मोहदधि	,,	१७ चतुरदया	,,
७ सुषम जार	,,	१८ कजाकोग	,,
८ मोह धन	,,	१९ उचालम्भ	,,
९ केदार खंड	,,	२० दया भवन	,,
१० सफाकन्द	,,	२१ ईस भोग	,,
११ नलदया	,,	२२ कामिनि जोग	,,

२३ मोहजार प्रकृति
२४ नौ जोग ”
२५ भँवर सोग[1] प्रकृति

॥ चौपाई ॥

प्रकृति पचीस यही हैं साधो। सब जीवन को इनहीं बाँधो ॥
सत्य सत्य मैं भाखों भाई। इनकर भेद कहौं समझाई ॥
पच्चीसौं का घर हम भाखा। सत्य सब्द हिरदे में राखा ॥
प्रकृति पचीस कहौं समझाई। मूढ़ जीव ज्ञानी होइ जाई ॥

॥ प्रकृतियों के सुभाव ॥

१	भाव को	सुभाव—	आलस निद्रा जम्हाई।
२	क्रता को	”	काम क्रोध बिकार।
३	देंहधर को	”	खावै पीवै सुख बिनोद।
४	उषमजार को	”	मोर तोर निंदा।
५	इंद्रजै को	”	हँसै खेलै रोवै।
६	मोहदधि को	”	मान गुमान बड़ाई प्रभुता।
७	सुषमजार को	”	उच्चाट भय त्रास और डण्ड।
८	मोह धन को	”	सिकार उदासी जारै बारै जीव जन्त्र मन्त्र सेवा करै।
९	केदार खंड को	”	एक काम चित रहै कामिनि सुख।
१०	सफाकंद को	”	चोरी राति बिराति आवै जावै।
११	नलदया को	”	होम बहुत करै और आसा लगावै।
१२	उदासमुद्र को	”	चित चंचल छगुनिया टेढ़ा चलै कर मोड़े
१३	चंचल राज को	”	खरा लेवै खरा देवै खरी बात खरा रहै।
१४	मजा गुन को	”	निडर निर्भय निरमोह।
१५	मजा नन्द को	”	दया धर्म पुन्य षट कर्म।
१६	अभयानन्द को	”	तीरथ बरत मठ बनावै।
१७	चतुरदया को	”	बहुत गावै बजावै नाचै नैन उलारै।
१८	कजाकोग को	”	झूठ बोलै मीठा रहै स्वारथ रत।
१९	उचालंभ को	”	ज्ञान ध्यान गुरू सब्द कुछ न रक्खै।
२०	दया-भवन को	”	नीके कपरा खाना बिछौना नीक बसिबो

(१) मु॰ दे॰ प्र॰ की पुस्तक में "भँवर जीव" है।

२१ ईस-भोग को सुभाव देव पूजे फूल पत्र चढ़ावे पीछे द्रव्य माँ
२२ कामिनि-जोग को ,, भले मनुष्यन में रहै ऊँचे संग
नीचे संग न करै अच्छी बात
और प्रीति न तोरै।
२३ मोहजार को ,, कुबचन भाखे पहिलै दे पीछे
माया तकै।
२४ नौजोग को ,, तरंग बाहिर मन भरमै शोक में र
२५ भँवर-जोग को ,, मीठा बोलै कौड़ी जाते प्रान जाय

॥ चौपाई ॥

देखौ संतौ प्रकृति सुभाऊ। ये सुभाव घट माहिं रह
सोरठा--यह सुभाव घट माइ, भिन्न भिन्न करि भाखिया।
लेखा अजब बनाइ, चीन्हे सुरति सँवारि कै॥

॥ चौपाई ॥

घट भीतर नौ नारी भाखी। सो तुलसी ने देखा आँ

॥ नाड़ियन के नाम ॥

१ इड़ा नाड़ी
२ पिंगला ,,
३ सुषमना ,,
४ भामिनी ,,
५ रमना ,,
६ कर जाप
७ हंस-बंदनी
८ हरि कामिनि
९ बरना

॥ पाँच इंद्रियन के नाम ॥

१ अपान इंद्री
२ प्रान ,,
३ समान ,,
४ उदान
५ ब्यान

॥ इंद्रियन के बास ॥

१ अपान का बास—नाभी में है।
२ प्रान का बास—मान सरोवर तट वार है।
३ समान का बास—कलेजे में है।
४ उदान का बास—कंठ में है।
५ ब्यान का बास—सब शरीर में है।

सोरठा--इंद्री अर्थ बिचार, नाम भेद सब भाखिया ।
ठीका ठौर निहार, यह पुकार तुलसी कहा ॥

॥ चौपाई ॥

यह इंद्री का किया निषेदा, मन चीन्है सोइ जाने भेदा ॥
या की साखि सोत सब गाई । अब सुन्नन की कहौं लखाई ॥
बाइस सुन्न सोध हम लीन्हा । ताकर भिन्न भिन्न कहुँ चीन्हा ॥

॥ सुन्नन के नाम ॥

१	धुंधार	सुन्न	१२	नौखंड	सुन्न
२	सब्दार	,,	१३	अलख	,,
३	नौनार	,,	१४	पलक	,,
४	अजसार	,,	१५	खलक	,,
५	बिलंद	,,	१६	झलक	,,
६	सुखनंद	,,	१७	सरवाट	,,
७	अछरंद	,,	१८	दसघाट	,,
८	सबसंध	,,	१९	खिरकाट	,,
९	ब्रहंड	,,	२०	अजआठ	,,
१०	सबअंड	,,	२१	सतलोक	,,
११	भौभंड	,,	२२	परमोख	,,

सोरठा--बाइस सुन बर्तमान, जानि संत कोइ परखिहै ।
गगन गगन परमान, सुन्न सुन्न भिनि भिनि लखै ॥

॥ चौपाई ॥

सुन्न बाइस कौ भाखौं लेखा । सो कोइ साधू करै बिबेका[1] ॥
भिन्न भिन्न ग्रंथन में गाई । बूझै वोही भेद जिन पाई ॥
सुन्न सुन्न निज निरनै भाखा । तुलसी निरखि देखि निज आँखा ॥

सोरठा--कह निरनै निरधार, सुन्न सुन्न बिधि यों कही ।
सुरति उतर गई पार, सुन बाइस वर भाखिया ॥

॥ चौपाई ॥

बाइस सुन का कहौं बखाना । सुन्न सुन्न का ठौर ठिकाना ॥
जो जेहि सुन्न जौन अस्थाना । भाखौं जोई सुन्न जेहि नामा ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "करि है पेखा" है ।

सत्तलोक सत के तहँ राजा। रामायन में भाख समाजा ॥
सत केत सत नाम कहइया। ता से निरगुन ब्रह्म जो भइया ॥
सोला निरगुन कहि के भाखा। भिनि भिनि भेद कहौं मैं ताका ॥
एक सुन्न इक निरगुन होई। निरगुन सुन्न एक है सोई ॥
निरगुन चौधा चौधा सुन्नी। पंद्रा धर्म सुन्न है भिन्नी ॥
सोला सुन्न निरंजन नामा। रचा ताहि ब्रह्मंड समाना ॥
सत्तनाम से उपजा सोई। ऐसे सोला निरगुन होई ॥
यह सब पिंड ब्रह्मंड के माईं। सोला निरगुन सुन्न समाईं ॥
सोरठा—छै सुन बाइस माहिं, रहा भेद आगे कहौं।
तुलसी निरखि निहार, सुन बाइस चढ़ि देखिया ॥

॥ मंगल ॥

सुन सुन री सखि, सैन बैन पिय के कहौं।
बोलै मधुरे बोल, चोल चित्त में सहौं ॥ १ ॥
छिन छिन रहौं पिय पास, स्वाँस कहुँ ना रुचै।
जैसे जल बिन मीन, तलफ मन[1] के बिचै ॥ २ ॥
सुन सखि चैन चिताव, भाव बिधि में मिली।
छूटी तन मन आस, पास पिय के चली ॥ ३ ॥
चौधा भवन भौ पार, सार सुन में गई।
पुनि पंद्रा के पार, सार सोला सही ॥ ४ ॥
सोला लोक मँझार, तार स्रुति से चखी[2]।
निराकार जहँ जोति, होत हिये में लखी ॥ ५ ॥
सत्रा सुरति चलि चाल, ताल तट देखिया।
मान सरोवर घाट, हंस तहँ पेखिया ॥ ६ ॥
एक हंस छबि तेज, कोटि रबि राजही।
सोभा भूमि अपार, सो हंस बिराजही ॥ ७ ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "मन" की जगह "जल" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।
(२) एक लिपि में "चखी" जगह "पकी" है।

करि हंसन सँग केल, सैल आगे चली ।
आली अगम की साख, आँख हिये की खुली ॥ ८ ॥
सुन अठरा के माहिं, जाइ निर्ख देखिया ।
आतम से परे भिन्न, परमातम पेखिया ॥ ९ ॥
सुन्न उलट उन्नीस, चेति आगे चली ।
खिरकी अजब अनूप, पुरुष ता में मिली ॥१०॥
परे पुरुष पद चीन्ह, गई सुन बीस में ।
सत्त पुरुष सुख धाम, सुन्न इक्कीस में ॥११॥
गैब नगर पिय पार, सखी सतलोक ही ।
चढ़ी अगमपुर धाइ, पाइ पति पै गई ॥१२॥
सत्त पुरुष की पैज, सेज पति की लई ।
गई भवन के माहिं, पाइ जस जो कही ॥१३॥
बाइस सुन बर्तमान, जान कोइ लेइँगे ।
कीनी जिन जिन सैल, संत सोइ कहैंगे ॥१४॥
तुलसी निज तन तूल, मूल मन में बसी ।
जिन बूझा नहिं भेद, बेद भौ में फँसी ॥१५॥

सोरठा—स्रुति पद परम निवास, चढ़ि अकास पति पै गई ।
पिय पद सुरतिबिलास, सेज बास जस जस कही ॥ १ ॥
पिय मोरे दीनदयाल, काटि जाल न्यारी करी ।
अमर बुटी अज माल, सो पियाइ मो कौं दई ॥ २ ॥
पिय पद पूर पियास, अमी पियाइ अमर करी ।
सूरति अगम निवास, महल बास अपने करी ॥ ३ ॥

दोहा--पिय प्रभुता निज धाम, काम टहल मो कौं कही ।
रही भवन के माहिं, अमल बास मो पै नहीं ॥

सोरठा--पृथ्वी पवन अकास, नीर नास सब होइँगे ।
अगिन सूर अरु चंद, बंद बास पुनि पुनि नसै ॥

॥ चौपाई ॥

पिय सँग अजर अमर भया बासा। आदि अंत हमश नहिं नासा।

॥ मंगल ॥

अमर बूटी मोरे यार, प्यार पिया ने दई।
काटी जम की जाल, काल डर ना रही ॥ १ ॥
मैं पिय मोर अनूप, रूप पिय में गई।
दरसै एकै नूर, सूर स्रुति से भई ॥ २ ॥
जुगजुग अमर अहवात[1], साथ पिय के सखी।
जावँ न आवों हाथ, साथ पिय के पकी ॥ ३ ॥
नौतम निरखि निहारि, सार दसवें वही।
आगे अजब अजूब, खूब खुलि कै कही ॥ ४ ॥
पिय मोरे दीन-दयाल, चाल चीन्हा सही।
सुख सागर सुख चौज, मौज मुख से दई ॥ ५ ॥
अंड खंड ब्रह्मंड, कोई करता नहीं।
हमार सकल पसार, सार हम से भई ॥ ६ ॥
धरती गगन अकास, नास सब होइँगे।
अगिनि पवन जल नास, हमीं हम रहैंगे ॥ ७ ॥
ब्रह्मा बेद नसाय, बिस्नु सिव ना बचैं।
बचै नहीं बैराट, कहनि कहौ को पचै ॥ ८ ॥
कोई न पावै अंत, संत हम को लखै।
तुलसी बिधि बेअंत, अंत कहि को सकै ॥ ९ ॥

सोरठा--बाइस सुन बर्त्तमान, सुरति छान भिनि भिनि कही।
जानै संत सुजान, जिन चढ़ि देखा भेद सब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी संत चरन बलिहारी। चढ़े अगम जिन सुरति सम्हारी ॥
लखलख जस जस भेद सुनाई। साखी सब्द ग्रंथ में गाई ॥

(१) "अहवात" सोहाग को कहते हैं--मु० दे० प्र० की पुस्तक में "रहाथ" लिखा है जो ठीक नहीं जान पड़ता।

महूँ पुनि चरन लागि लख बोला । जस जस कृपा संत कर खोला ॥
संत चरन सूरति भइ चेरी । मति उन सब बिधि भाँति निबेरी ॥
में उनकी चरनन बलिहारी । मोहि सों अजान जान कियो लारी ॥
सुन्न सुन्न बाइस कर लेखा । खुलि हिये नैन सुरति से देखा ॥
और सुन्न का भाखौं लेखा । कोइ निज संत सुरति से देखा ॥
तुलसी बूझी मोर अबूझी । जो कोइ संत सैल कर सूझी ॥
में अपनी गति कस कस भाखी । कहैं संत जिन देखी आँखी ॥
में किंकर उन कर निज दासा । जिन जिन देखा अगम तमासा ॥
सोइ सोइ देखि देखि कै भाखी । नैन से देखि पेखि उर आँखी ॥
छे सुन का पुनि भेद बताऊँ । न्यारा भिन्न भिन्न दरसाऊँ ॥
कौन सुन्न में कौन निवासा । ता कर भेद कहौं परकासा ॥
प्रथम सुन्न में है निःनामी । ता की गति मति संतन जानी ॥
दूजी सुन का भाखौं लेखा । जहँवाँ सत्तनाम को देखा ॥
तीजी सुन्न सब्द एक होई । सुरति सैल कोइ संत बिलोई ॥
चौथी सुन्न कहौं समझाई । पारब्रह्म तहँ रह्यो समाई ॥
संत ताहि परमातम भाखी । सो पुनि देखा हिये की आँखी ॥
पंचम सुन का भेद बताऊँ । पूरन ब्रह्म जीव तेहि नाऊँ ॥
ता को आतम बेद बखाना । जीव नाम आतम कर जाना ॥
षटवीं सुनि मन तन के माईं । इन्द्री संग तास लिपटाई ॥
परमहंस तेहि ब्रह्म बतावैं । नेतहि नेत बेद गोहरावैं[1] ॥
सुन तेहि मन को ब्रह्म बखाना । ता को नाम निरंजन जाना ॥
येही निरंजन जोति कहाई । ब्रह्मा बिस्नु सिव सुत है ताही ॥
तिन पुनि रचा पिंड ब्रह्मंडा । सातों दीप और नौखंडा ॥
जोति निरंजन इनको जानी । ता को संतन काल बखानी ॥

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक में इस चौपाई की दूसरी कड़ी यों है—"अहं ब्रह्म करि कै गोहरावैं ।"

यह जम काल जाल जग डारा । ज्यों धीमर मछली गहि मारा ।
दस औतार निरंजन काला । बाँधे जीव कर्म जग जाला ।
तीरथ बरत नेम अरु धरमा । कर्म भाव कहियत है रामा ।
ता को जगत जपै मन लाई । बार बार भरमै भव माहीं ।
जग सब अंध फंद नहिं बूझै । अंधा भया हिये नहिं सूझै ।
दोहा-आदि अंत का भेद, कह तुलसी देखा सही ।
लेखा अगम अलेख, लखि अगाध अदबुद कही ॥

॥ छन्द ॥

तुलसी गति गाई अगम सुनाई । सुन्न सुन्न भिन्न भिन्न कही
जस जस जेहि लेखा निज निज देखा । आदि अन्त गति सार मई
संतन गति गाई महुँ पुनि पाई । जो उतपति सब आदि भई
जिनही जिन जानी सबहि बखानी । तुलसी उनके लार लई
सोरठा--सब ये कहा बिचार, सार पार गति गाइकै ।
बूझै बूझनहार, जिन ये चाखा अगम रस ॥ १
तुलसी तिरन[1] समान, अगम भान घटि लखि परा ।
सूझा निज घर धाम, यह अनाम गति यों कही ॥ २

॥ चौपाई ॥

नभ घट भूमी भान दिखाना । लखि लखि लखा भेद जिन जाना
सोरठा--घट भूमी बिच भान, जानि भेद भिन जिन कही ।
सखि सुन देस बयान, रमक रीति उलटी लखी ॥

॥ कहेरा ॥

सुन हो सखी इक दिसवा । भूमी ऊगै भान ।
दिसवा की उलटी रीति । साधू पालै प्रीति ॥ टेक
मछरी गगन पर गाजा । चंदा चुनै नाम ।
दिसवा उरध-मुख कुइया । गइया चुगै चाम ॥ १
गगन उठै धधकारी । धरै सूरति ध्यान ।
खम्भा न महल अटारी । प्यारी पिव धाम ॥ २

(१) तृण, तिनका ।

तारा अवर नहिं पानी । बानी उठै बिन तान ।
खिरकी खुली बिन द्वारे । पारे परे ठाम ॥ ३ ॥
नइया कुटी भौ पारा । उतरै बिन दाम ।
तुलसी अगम गम जानी । स्रुति पायो निज नाम ॥ ४ ॥

सोरठा—साहिब एक अनाम, अगम धाम संतन लखा ।
भखा भेद जिन जान, तिन तिन बरनि सुनाइया ॥

॥ चौपाई ॥

अब अनाम इक साहिब न्यारा । सुन्न औ महासुन्न के पारा ॥
वो साहिब संतन कर प्यारा । सोइ घर संत करैं दरबारा ॥
वा घर का कोइ भरम न जाने । नानक दासकबीर बखाने ॥
दादू और दरिया रैदासा । नाभा मीरा अगम बिलासा ॥
और अनेक संत कहि गाये । जे जे अगम पंथ पद पाये ॥
तुलसी मैं चरनन चित चेरा । उन रज चरनन कीन्ह निबेरा ॥

सोरठा—संत चरन निज दास, तुलसी ताहि बिचारिया ।
पायौ निज घर बास, आदि अनामी लखि कह्यौं ॥

बरनन चार गति बैराग

॥ चौपाई ॥

अब बैराग जोग गति गाऊँ । ज्ञान भक्ति भिनि भिनि दरसाऊँ ॥
चारि गती बैराग बताऊँ । जोगी चारि गती गति गाऊँ ॥
तीनि ज्ञान का भेद बताई । चौथा ज्ञान जगत जग माईं ॥
तेरा भक्ति भेद बतलाऊँ । भिन्न भिन्न कर कहि समुझाऊँ ॥
न्यारा भेद भाव सब केरा । जो जस जिनका भया निबेरा ॥
जो जिनकी करनी जस भाँती । सो सब संतन कही सनाथी ॥
मैं रज पावन उन कर चेरा । निरनय कहौं छानि इन केरा ॥

सोरठा--भक्ति ज्ञान और जोग, भोग भाव सब बिधि कहौं ।
जो जेहि गति जस भोग, सो तस कहौं बिचारि कै ॥

॥ प्रथम बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

अब बैराग तीनि गति गाऊँ । भाखौं भेद भिन्न दरसाऊँ ॥
बेरक्ती[1] बैराग सुनाऊँ । ता कर चिन्ह भिन्न बतलाऊँ ॥
माया मोह जगत नहिं भावै । काम रु कोध लोभ नहिं लावै ॥
और जगत सँग रहै उदासी । जग संसार करत सब हाँसी ॥
त्यागी अति संतोष समावा । भूख प्यास निद्रा न सतावा ॥
और अनेक भाँति रस त्यागी । बन बसि रहै नाम अनुरागी ॥
बिन सतगुरु धूरि सब जाना । संत सुरति बिन भरमै खाना ॥
जो कोइ त्याग लाग मन कीन्हा । संगल दीप भोग तेहि दीन्हा ॥
जो जेहि त्याग भाग जस पावा । सुरति सब्द बिन भौ में आवा ॥

॥ द्वितीय बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

परम जोग बैराग बताऊँ । रहनी चाल ताहि दरसाऊँ ॥
अष्टकँवल उलटै हिये माईं । उलटै कँवल तत्त मन लाईं ॥
निस दिन तत्त मती गति राखै । पाँचो तत्त गती सोइ भाखै ॥
तब तन छूटे तत्त समाईं । चारि तत्त जिव उपजै जाईं ॥
फिर तन छूटै खानि समाना । सो पुनि करै जो लेइ निदाना ॥

॥ त्रितीय बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

त्याग बैराग को बरनि सुनाई । छूटै देंह खानि गति पाई ॥
जो जस त्याग भोग तन तैसा । खान पान तन पावै जैसा ॥

॥ चतुर्थ बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

तन त्यागी बैरागी भाई । जो जेहि लिया देन सोइ जाई ॥

---

(१) विरक्ति ।

बार बार छूटै तन जाई। छूटै तन तहँ गर्भ समाई ॥
वहि वहि देइ खाइ पुनि जाई। ऐसे भर्म खानि भरमाई ॥
बिना सुरति नहिं पावै पारा। भरमै भोग परै भौ धारा ॥
सोरठा--चारौ गति बैराग, सुरति लाग न्यारी रही।
सत मत गति कोइ जाग, संत सरनि उबरा सोई ॥

॥ बरनन जोग ॥

॥ प्रथम जोग ॥

॥ चौपाई ॥

चारौ गति बैराग बखाना। आगे कहौं जोग संधाना ॥
पिरथम परम जोग गति गाऊँ। भिन्न भिन्न तेहि को दरसाऊँ ॥
मुद्रा पाँच अवस्था चारी। तीनि ज्ञान पुनि बानी चारी ॥
सहस कँवलदल सुरति लगावै। आतम तत्त अकास समावै ॥
पुनि तन छुटि पावै नर देही। भोग भुगति पुनि भव रस लेही ॥
पावै मुक्ति बास कर चीन्हा। मुक्ति भोग पुनि होइ अधीना ॥

॥ द्वितीय जोग ॥

॥ चौपाई ॥

दूजा जोग कहौं समझाई। इड़ा पिंगला सुषमनि माई ॥
बंक नाल पट मारग जाई। मन भया भिन्न सुन्न के माईं ॥
देखै जोति निरखि निज नैना। तन छूटै सुपने की सैना ॥
जो कछु कर्म भाव जग कीन्हा। छूटै देह भोग फल लीन्हा ॥
सुरति सब्द बिन भये अचीन्हा। ता सों हो गये जोग अधीना ॥
बिन सतसंग भेद नहिं पावै। ता ते कर्म भोग भव आवै ॥
सोरठा--जोग जुगति गति गाइ, नहिं अकाय गति पायऊँ[1]।
बिन सतसंग नसाइ, सुरति सब्द चीन्हे बिना ॥ १ ॥
ज्ञान गती कथि गाइ, जो अघाइ आगे कही।
ताहि पाइ मति माइँ, सो तुलसी सब बिधि कही ॥ २ ॥

(१) मु॰ दे॰ प्र॰ के पाठ में "पायऊ" की जगह "गायऊ" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।

॥ बरनन ज्ञान ॥

॥ प्रथम ज्ञान ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु ज्ञान ठान गति गाऊँ। ता का भेद भाव बतलाऊँ ॥
रेचक पूरक कुम्भक कहिये। ता का भेद सबै सुनि लैये ॥
चारि अवस्था तन में भाखी। तुरिया तत्त चारि अभिलाखी ॥
परमहंस ता की मति जाना। मन करता को ब्रह्म बखाना ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति कहाई। तुरिया चौथी भेद न पाई ॥
तुरियातीत बसै वोहि पारा। सुनि पुनि है मन का ब्यौहारा ॥
मनमत चलै मान मद माई। मन करता को ब्रह्म बताई ॥
ता ते भौ गति मति नहिं पावै। बार बार भौ माहिं समावै ॥
सतगुरु सब्द भेद नहिं जानै। आपी आप ब्रह्म मन मानै ॥
सास्तर सिंध सार बतलावै। ता ते भौजल पार न पावै ॥
चीन्है संत सुरति गति न्यारी। तौ पुनि उतरै भौजल पारी ॥
आपा आप पाप गति खोवै। तब सतसंग संत गति जोवै ॥

॥ द्वितीय ज्ञान ॥

॥ चौपाई ॥

औरहि ज्ञान सुनौ जग केरी। बेद पुरान जाल भौ बेरी ॥
पंडित पढ़ पढ़ ज्ञान सुनावै। आदि गती गम भेद न पावै ॥
झूठी आस बास सब केरी। फिरि फिरि स्वाँस आस भौ बेरी ॥
जो जो कर्म करै सोइ पावै। बार बार भौ भटका खावै ॥
मन में मान मोट कर जानै। ता ते परै नरक की खानै ॥
भक्ती भाव भेद नहिं पावै। ऊँची जाति मान मन लावै ॥
साध संत मन में नहिं आवै। ऊँचा ज्ञान आप ठहरावै ॥
नीचा होइ संत को जानै। संत कृपा कछु जानै आनै ॥
संतन भेद बेद से न्यारा। नीच होइ पुनि पावै सारा ॥

॥ चौपाई ॥

ऊँचा मान सदा मन राखै। सोइ सब जगत जीव कह भाखै ॥
पूजन अपनी चाल बतावै। ऐसे सकल जीव भरमावै ॥
सोरठा--यहि बिधि जग मत ज्ञान, पंडित भूले भरम में।
बाक ज्ञान परमान, संत भेद चीन्है नहीं ॥

॥ बरनन भक्ति ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु भक्ति भाव कर लेखा। रमायन में कीन्ह बिबेका ॥
भक्ति भाव नौ बरनि सुनाई। ता से भिन्न चारि पुनि भाई ॥
नौ फल भाव बेद[1] बतलावै। जो जस करै भोग तस पावै ॥
नौ की राह मुक्ति नहिं पावै। दसवीं अबिरल भक्ति[2] लखावै ॥
एकादस अनुपावन लेई। बार बार मुक्ती बर देई ॥
भेद भक्ति कर राखौं लेखा। इष्ट भाव मन बसै बिबेका ॥
अब अभेद का भेद अभेदा। ता को मरम न पावै बेदा ॥
कोइ कोइ साध संत गति पाई। जिन की सूरति सब्द समाई ॥
सूरति सैल करै असमाना। जोगी पंडित मरम न जाना ॥
परमहंस सन्यासी भाई। उन का मरम नहीं उन पाई ॥
जगत जाल संसार बिचारा। उनकी गति कोइ पावै न पारा ॥
सोरठा--तेरा भक्ति बयान, सो प्रमान संतन कही।
तुलसी तनहिं बिचारि, सुरति भेद समझै कोई ॥१॥
नौ जग माहिं पसार, दसवीं कछु कछु भिन्न है।
एकादस मुक्ति मँझार, द्वादस गति मति मुक्ति मय[3] ॥२॥
अब अभेद गति गाइ, तेरह येहि बिधि यों कही।
ये साधन के माइँ, सुरति सब्द जा ने लखी ॥३॥

चौपाई ३ में और (२) "भक्ति"
१ मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "बेद" की जगह "भेद" जान पड़ता है।
की जगह "मुक्ति" चौपाई ४ में दिया है जो आगे के वर्णन से अशुद्ध
(३) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "मय" की जगह "मन" है।

॥ छन्द ॥

चारौ बैरागा जोग समाधा । तीनि ज्ञान गति गाइ दई ॥
नौ चारौ भक्ती जो निज उक्ती । भाषि भेद सब गाइ कही ॥
जोई जिन जानी संत बखानी । चरन चेत चित लाइ लई ॥१॥
सूरति सर चेती छाँड़ि अचेती । सुरति सैल नभ माहिं लई ।
फोड़ा असमाना निरखि ठिकाना । पछिम किवारी द्वार गई ॥२॥
परमातम पाया जीव छुड़ाया । पारब्रह्म पद कँवल मई ।
कँवला निज फूला मिटि गया सूला । जीव गती तजि ब्रह्म भई ॥३॥
आगे इक द्वारा अगम पसारा । सत्तलोक वोहि नाम कही ।
वहँ है सतनामा ब्रह्म न जाना । वे सत साहिब अगम सही ॥४॥
तीनों से न्यारा लोक पसारा । चौथे पद के पार वही ।
जहँ है निःनामी कोउ न जानी । तीनों पट के पार रही ॥५॥
कहौं अगम अनामी ठीक न ठामी । संतन जानी सार सही ।
अंबर असमाना मही न भाना । चाँद सुरज तत तारे नहीं ॥६॥
पानी नहिं पवना अगिनि न भवना । बेद भेद गति नाहिं लई ।
ब्रह्मा नहिं बिस्ना राम न किस्ना । सिव सिद्धी नहिं पार लई ॥७॥
निर्गुन नहिं सर्गुन नहिं अपबर्गुन । पिंड ब्रह्मंड दोउ नाहिं कही ।
जोती नहिं सोती अगम न होती । पारब्रह्म की आदि नहीं ॥८॥
नहिं कार अकारा नहिं निरकारा । सत्त नाम सत सत्त सही ।
नहिं नाम अनामी तुलसी जानी । जाइ समानी सार मई ॥९॥

सोरठा--तुलसी अगम अनाम, अगत भेद का से कहौं ।
कोउ न मानै बात, संत अंत कोउ ना लखै ॥१॥
निगम न पावै बेद, नेति नेति गोहरावही ।
ब्रह्म न जानै भेद, सत्त नाम निज भिन्न है ॥२॥
एक अनीह[1] अनाम, संत सुरति जानै यही[2] ।
रे पहुँचे वोहि धाम, सो अनाम गति जिन कही ॥३॥

(१) बेफ़िकर । (२) मुं० दे० प्र० के पाठ में "जानै यही" की जगह "वहाँ जावही" है

तुलसी अगम बिचार, सार पार गति पद लखा।
वह अलेख का ठाम, तुलसी तरक बिचारिया ॥ ४ ॥
सुरति अटा के पार, आठ अटारी अधर में।
तुलसिदास लियौ सार, सुरति सिंध से भिनि भई ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

आठ अटारी सुरति समानी। मंगल ठुमरी करी बखानी ॥
जस जस सूरति चढ़ी अटारी। तस तस बिधि में भाखी सारी ॥

॥ मंगल ॥

आठ अटारी महल, सुरति चढ़ि चाखिया।
ठुमरी माहीं भेद, भाव सब भाखिया ॥ १ ॥
संत पंथ का अंत, साध कोइ बूझिहै।
प्यारी पुरुष मिलाप, साफ स्रुति सूझिहै ॥ २ ॥
जस जस मारग रीति, राह समझाइया।
प्यारी अटारी माहिं, जाइ सोइ गाइया ॥ ३ ॥
मन मथ कीन्हा चूर, सूर स्रुति ले चढ़ी।
गुरु पद पदम मँझार, पुरुष पै जा खड़ी ॥ ४ ॥
बिधि बिधि ठुमरी माहिं, गाइ तुलसी कही।
जो कोइ चीन्है भेद, संत सोई सही ॥ ५ ॥

सोरठा--ठीका ठुमरी माहीं, आठ अटारी अधर की।
सूरति पदम बिलास, बिधि बयालिस पद मिली ॥

॥ ठुमरी ॥

अली अटकी सुरति अटारी। मन हटकर हारा री ॥टेक॥
यह अँग संग भंग ले लटकी। सूली स्वर्ग नर्क भौ भटकी।
दीन्ही सतगुरु घट की तारी। चटकी मति फटक फटा री ॥१॥
ये ले लार पार स्रुति सटकी। निरखि अलख आदि घटघट की।
हक लख[1] लागी बिरह कटारी। हिये खटकी कसक कटारी ॥२॥

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक में "लक" है जिसका अर्थ कहीं नहीं मिलता, अलबत्ते "लक" सब्द के अर्थ संस्कृत में 'चखने' और 'पाने' के हैं।

नौलख खेल कला ज्यों नट की । सूरति सहस कँवल झर झटकी ॥
लीला सिखर निकर नित न्यारी । दधि मटुकी घिरत मठा री ॥३॥
तुलसी तोल कही तिल तट की । भइ धुनि ररंकार रस रट की ॥
ये दस रस बस सुरति सँवारी । पिउ पट की खोलि किवारी ॥४॥

॥ ठुमरी २ ॥

झँझरी पिय झाँकि निहारी । सखि सतगुरु की बलिहारी ॥
दीन्हे दृग सुरति सँवारी । चीन्हा पद पुरुष अपारी ॥१॥
चली गगन गुफा नभ न्यारी । जहँ चंद न सूर सिहारी ॥
तुलसी पिय सेज सँवारी । पौढ़ी पलँगा सुख भारी ॥२॥

॥ ठुमरी ३ ॥

सलिता जिमि सिंध सिधारी । सूरति रत सब्द बिचारी ॥
जहँ सुन्न न सुन्नी न्यारी । मत मीन महासुन पारी ॥१॥
नहिं गुन निर्गुन मत झारी । निज नाम निअच्छर भारी ॥
जहँ पिंड ब्रह्मंड न तारी । तुलसी जहँ सुरति हमारी ॥२॥

॥ ठुमरी ४ ॥

ए अली आदि अंत अधिकारी । पिय प्यारी प्रीति दुलारी ॥
हम कीन्हा खेल पसारी । सब रचना रीति हमारी ॥१॥
करता नहिं काल पसारी । हम अगम पुरुष की नारी ॥
ठुमरी सोइ संत बिचारी । तुलसी नित नीच निहारी ॥२॥

॥ ठुमरी ५ ॥

ए गुइयाँ पिय हम हम पिय एकी । कोइ फरक न जानौ नेकी ॥
कोइ बूझै संत बिबेकी । जोइ अगम निगम नहिं लेखी ॥१॥
जिन अटल अटारी पेखी । पिय रूप न रेख अदेखी ॥
कोइ कंथ न पंथ न भेषी । तुलसी सब मारग छेकी ॥२॥
सोरठा--ठुमरी ठौर ठिकान, अगम भान स्रुति पद लखा ।
चखा अमर रस ज्ञान, पार पुरुष पद में मिली ॥१॥

पिया भवन के माइँ, जाइ जोइ जस जस कही ।
रही पुरुष पद छाइ, लई आदि अपने गई ॥ २ ॥

दोहा--पुरुष पदम सम सोइ, तुलसी सूरति लखि चली ।
ज्यों सलिता जल धार, लार सुरति सब्दै मिली ॥

सोरठा--हम पिय पिय हम एक, लखि बिवेक संतन कही ।
भई अगम रस भेष, देखा दृग पिय एक होइ ॥ १ ॥
हमरा सकल पसार, वार पार हमहीं कही ।
संत चरन की लार, आदि अंत तुलसी भई ॥ २ ॥

दोहा--निरखा आदि अनादि, साधि सुरति हिये नैन से ।
करै कोइ संत बिचार, लखि ध्वोन स्रुति सैल से ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी निरखि देखि निज नैना । कोइ कोइ संत परखिहैं बैना ॥
जो कोइ संत अगम गति गाई । चरन टेकि पुनि महूँ सुनाई ॥
अब जीवन का कहौं निबेरा । जा से मिटै भरम बस बेरा ॥
जब या मुक्ति जीव की होई । मुक्ति जानि सतगुरु पद सेई ॥
सतगुरु संत कंज में बासा । सुरति लाइ जो चढ़ै अकासा ॥
स्याम कंज लीला गिरि सोई । तिल परिमान जानि जन कोई ॥
छिन छिन मन को तहाँ लगावै । एक पलक छूटन नहिं पावै ॥
स्रुति ठहरानी रहै अकासा । तिल खिरकी में निस दिन बासा ॥
गगन द्वार दीसै इक तारा । अनहद नाद सुनै झनकारा ॥
अनहद सुनै गुनै नहिं भाई । सुरति ठीक ठहर जब जाई ॥
चूवै अमृत पिवै अघाई । पीवत पीवत मन छकि जाई ॥
सुरति साथ संध[1] ठहराई । तब मन थिरता सुरति पाई ॥
सुरति ठहरि द्वार जिन पकरा । मन अपंग होइ मानो जकरा ॥
चमकै बीज गगन के माइँ । जबहि उजास पास रहै छाई ॥

---

(१) मु० दे० प्र० के पाठ में "संध" की जगह "संग" है ।

जस जस सुरति सरकि सत द्वारा । तस तस बढ़त जात उँजियारा ॥
सेत स्याम स्रुति सैल समानी । झरि झरि चुवै कूप से पानी ॥
मन इस्थिर अस अमी अघाना । तत्त पाँच रँग बिधी बखाना ॥
स्यासी सुरख सपेदी होई । जरद जाति जंगाली सोई ॥
तिल्ली ताल तरंग बखानी । मोहन मुरली बजै सुहानी ॥
मुरली नाद साध मन सोवा । बिष रस बादि बिधी सब खोवा ॥
खिरकी तिल भरि सुरति समाई । मन तत देखि रहै टक लाई[1] ॥
जब उजास घट भीतर आवा । तत्त तेज और जोति दिखावा ॥
जैसे मंदिर दीप किवारा । ऐसे जोति होत उँजियारा ॥
जोति उजास फाटि पुनि गयऊ । अंदर चंद तेज अस भयऊ ॥
देखै तत सोइ मनहि रहाई । पुनि चंदा देखै घट माईं ॥
चंद्र उजास तेज भया भाई । फूला चंद चाँदनी छाई ॥
सूरति देखि रहै ठहराई । ज्यों उजियास बढ़त जिमि जाई ॥
ज्यों ज्यों सूरति चढ़ि चलि गयऊ । सेता ठौर ठाम लखि लयऊ ॥
देख सैल ब्रह्मण्ड समाई । तारा अनेक अकास दिखाई ॥
महि अरु गगन देखि उर माईं । और अनेकन बात दिखाई ॥
कछु कछु दिवस सैल अस कीन्हा । ऊगा भान तेज को चीन्हा ॥
तारा चंद्र तेज मिटि गयऊ । जिमि मध्यान भान घट भयऊ ॥
ज्यों दोपहर गगन रवि छाई । तैसे उजास भया घट माईं ॥
ता के मधि में निरखि निहारा । घट में देखा अगम पसारा ॥
सात दीप पिरथी नौ खण्डा । गगन अकास सकल ब्रह्मंडा ॥
समुँदर सात प्राग पद बेनी । गंगा जमुना सरसुती बहिनी ॥
औरै नदी अठारा गंडा । ये सब निरखि परा ब्रह्मंडा ॥
चारो खानि जीव निज होई । अंडज पिंडज उषमज सोई ॥
अस्थावर चर अचर दिखाई । यह सब देखा घट के माईं ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "टक लाई" की जगह "टकराई" है ।

भिनि भिनि जीवन कर बिस्तारा । चारि लाख चौरासी धारा ॥
और पहार नार बहुतेरा । जो ब्रह्मंड में जीव बसेरा ॥
कछु कछु दिवस सैल अस कीन्हा । तीनि लोक भीतर में चीन्हा ॥
जो जग घट घट माहिं समाना । घट घट जग जिव माहिं जहाना ॥
ऐसे कइ दिन बीति सिराने । एक दिवस गये अधर ठिकाने ॥
परदा दूसर फोड़ि उड़ानी । सुरति सुहागिनि भइ अगमानी ॥
सब्द सिंध में जाइ सिरानी । अगम द्वार खिरकी नियरानी ॥
चढ़ि गइ सूरति अगम ठिकाना । हिये लखि नैना पुरुष पुराना ॥
ता में पैठि अधर में देखा । रोम रोम ब्रह्मंड का लेखा ॥
अंड अनेक अंत कछु नाहीं । पिंड ब्रह्मंड देखि हिये माहीं ॥
जहँ सतगुरु पूरन पद बासी । पदम माहिं सतलोक निवासी ॥
सेत बरन वह सेतइ साँईं । वहँ संतन ने सुरति समाई ॥
सत्तहि लोक अलोक सुहेला । जहँवाँ सुरति करै निज केला ॥
सूरति संत करै कोइ सैला । चौथा पद सत नाम दुहेला ॥
परदा तीसर फोड़ि समानी । पिंड ब्रह्मंड नहीं अस्थानी ॥
जहँवाँ अगम अगाधि अघाई । जहँ की सत गति संतन पाई ॥
महुँ उन लार लार लरकाई । उन सँग टहल करन नित जाई ॥
महुँ पुनि चीन्ह लीन्ह वह धामा । बरनि न जाइ अगकपुर ठामा ॥
निःनामी वह स्वामी अनामी । तुलसी सुरति सैल तहँ थामी ॥
जो कोइ पूछै तेहि कर लेखा । कस कस भाखौं रूप न रेखा ॥
तुलसी नैन सैन हिये हेरा । संत बिना नहिं होइ निबेरा ॥
निज नैना देखा हिये आँखी । जस जस तुलसी कहि कहि भाखी ॥

सोरठा--पिंड माहिं ब्रह्मंड, ताहि पार पद तेहि लखा ।
तुलसी तेहि की लार, खोलि तीनि पट भिनि भई ॥ १ ॥
तुलसी संत अनुकूल, कँवल फूल ता में धसी ।
लसी जाइ सत मूल, फँसी पाइ सतगुरु सरन ॥ २ ॥

खुलि गये अगम किवार, लील सिखर के पार होइ ।
गिरा गगन के पार, पाइ सैल अस बिधि कही ॥३॥
अंडा फूट अकास, होइ निरास सूरति चली ।
अगम गली निज पाइ, तहँ आसन तुलसी कियो ॥४॥
हिरदे हरष समाइ, पाइ ताहि गति कस कही ।
कोइ कोइ संत समाय, ताही तें गति तस भई ॥५॥

॥ छन्द ॥

तीनों पट बाहिर कहुँ नहिं जाहिर । अगम अगत की राह लई ॥
खोला वह द्वारा अगम पसारा । सतगुरु पुर के पार गई ॥१॥
सतलोक दुहेला कीन्ही सैला । अगम अकेला लार भई ॥
ता से पद न्यारा निरखि निहारा । तासु अनामी नाम नहीं ॥२॥
फूला निज कँवला सूरति सम्हला । नील सिखर तन तार लई ॥
अंडा निज फूटा दस दिस टूटा । छूटि सुरति असमान गई ॥३॥
तुलसी तन सैला घट विच खेला । संतकृपा से राह लई ॥
ब्रह्मंड न पिंडा नहिं नौ खंडा । रवि चंदा तहँ तार[1] नहीं ॥४॥
पानी नहिं पवना अगिन न भवना । गगन गिरा के पार भई ॥
देखा सत्त सैला अगम अकेला । सूरति केला सब्द मई ॥५॥
तुलसी मत पाई संत लखाई । पास समाई गाइ कही ॥६॥

सोरठा--तुलसी निरखि निहारि, नैन पार निज देखि कै ।
यह अदेख की बात, निज अदृष्टि हिरदे लखा ॥१॥
तुलसी तुच्छ अबूझ, जबै सूझ सूरति लखी ।
अलख खलक के पार, निःअच्छर वो है सही ॥२॥
संत चरन पद धूर, तुलसी क्रूर कारज कियो ।
लिया अगम पद मूर, सूर सन्त अपना कियो ॥३॥
मैं उनकी बलिहार, लार लागि पारै कियो ।
चौथा पद निज सार, सो लखाइ संतन दियो ॥४॥

(१) तारा ।

॥ चौपाई ॥

तुलसी मैं अति नीच निकामा । मैं अनाथ गति बूझि न जाना ॥
मैं अति कुटिल कूर कुबिचारी । सत सत संत सरनि निरबारी ॥
अब मैं अपना औगुन भाखी । निरनय जी[1] की कोइ नहिं राखी ॥
अपनी चाल गती गुन गाऊँ । मोहिं सों अधम और नहिं नाऊँ ॥
संत दयाल दीन-हितकारी । मोरे औगुन नाहिं बिचारी ॥
संत सरल चित सब सुखकारी । मो को पकरि हाथ निरबारी ॥
कहँ लगि उनके गुन गति गाऊँ । मोर अचेत लखी नहिं काहू ॥
मोरी तपन ताप निज हेरा । तुलसी नीच का कीन्ह निबेरा ॥
कोटिन जिभ्या जो मुख होई । तौ मैं बरनि सकौं नहिं सोई ॥
कोटिन कल्प-बृच्छ जो होई । तौ सरवर पावै नहिं कोई ॥
तिनकी तीनि लोक रज पावन । कस बरनौं मोरे मन भावन ॥
तिन कौ भेद बेद नहिं पावै । वोहू नेति नेति गोहरावै ॥
दस औतार और तिरदेवा । वोहु न उनको पावै भेवा ॥
कहँ लग कहौं संत गति न्यारी । मोरी मति गति नाहिं बिचारी ॥
तीनि लोक का पटतर लाऊँ । उन सम तुलसी कहा दिखाऊँ ॥
मैं मत त्राहि त्राहि करि भाखी । ऐसी कौन बताऊँ साखी ॥
संतन की गति कस कस गाऊँ । अस कोइ देखि परै नहिं ठाऊँ ॥

॥ छन्द ॥

मोरी मति नीची माहुर सींची । संत चरन के लार भई ॥
करमन कर मैली बिष रस पेली । संत चरन चित जाइ बसी[2] ॥१॥
मति महा अति रंका मन निःसंका । बिष रस कस की धार भई ॥
कहँ लग गोहराऊँ अंत न पाऊँ । संत चरन की लार लसी ॥२॥
दरसन पाये करम नसाये । पाप पुन्य सब छार भई ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "निरनय जी" के बदले "नेरे नजीक" दिया है जो ठीक नहीं मालूम होता । (२) मुं० दे० प्र० के पाठ में "जाइ बसी" की जगह "चाहि लई" है ।

मोहि निरमल कीन्हा दयानिधि चीन्हा। ऐसे सिंध दरियाव मई ॥३॥
तिनकी रज पावन तुलसी अपावन। मो से अधम को धाम दई ॥

सोरठा—तुलसी नीच निहार, संत सरन न्यारा किया।
महुँ पुनि उतरौं पार, संत चरन रज धूरि धर।

दोहा--तुलसी मन निरमल भयौ, सूरति सार सुधार॥
संत चरन किरपा भई, उतरौ भौजल पार॥

सोरठा--घट रामायन सार, ये अगार गति यों कही।
बूझै बूझनहार, बिन सतगुरु पावै नहीं॥

दोहा--सतगुरु चरन निवास, निस दिन सूरति बसि रही।
संत चरन अभिलाष, पल छिन छिन छूटै नहीं॥ १ ॥
घट रामायन माहिं, अर्थ भेद अंदर सही।
रावन लंका राम, यह अकाम गति ना कही॥ २ ॥

सोरठा--दसरथ सीता नाहिं, भरत चत्रगुन ना कह्यौ।
ये निरखौ घट माहिं, बाहिर गति मति भरम है॥ १ ॥
घट रामायन माहिं, घट बिधि गति मति सब कही।
परखै परम निवास, यह अकास अंदर मई॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

रावन राम भेद समझाई। रामायन सब घट बिधि गाई॥
संतन की गति अगत अगोई। अगम निगम घर सुरति समोई॥
संत गती गति बेद न जाना। सिम्रित सास्तर और पुराना॥
पंडित भेष भक्त और ज्ञानी। जोगी परमहस नहिं जानी॥
स्रावग तुरक तोल नहिं पाया। भरमे सबहि काल गोहराया॥

दोहा—पंडित ज्ञानी भेष, यह अदेख गति ना लखी।
स्रावग तुरक न देख, संत सार अंदर चखी॥

॥ चौपाई ॥

ये सब भूल भाव गति गाई । तन भीतर काहू नहिं पाई ॥
ये तन भीतर संतन देखा । यह अदेख गति कहौं अलेखा ॥
गंगा जमुना और त्रिबेनी । तन भीतर ब्रह्मण्ड की सैनी ॥
पृथ्वी पवन गगन आकासा । यह सब देखे घटहि निवासा ॥
पाँच तत्त जल अगिनि समाना । पिंड माहिं ब्रह्मंड बखाना ॥
रबि चंदा तारागन होई । और अनेक बिधान समोई ॥
बाहिर भर्म भेद गति गावैं । पाहन पानी से लौ लावैं ॥
तीरथ बरत जो चारौ धामा । यह सब पाप पुन्य निज कामा ॥
पूरब पच्छिम फिर फिरि धावैं । सत्त पुरुष की राह न पावैं ॥
सत्त पुरुष सत नाम कहाई । वह अनाम गति संतन पाई ॥
सत्त नाम से निर्गुन आया । यह सब भेद संत बतलाया ॥
पाँच नाम निरगुन के जाना । निरगुन निराकार निरबाना ॥
और निरंजन है धर्मराई । ऐसे पाँच नाम गति गाई ॥
सोई ब्रह्म परचंड कहाई । ता को जपै जगत मन लाई ॥
दस औतार ब्रह्म कर होई । ता को कहिये निरगुन सोई ॥
तिन पुनि रचा पिंड ब्रह्मंडा । सात दीप पृथ्वी नौ खंडा ॥
सब जग ब्रह्म ब्रह्म करि गाई । आदि अन्त की राह न पाई ॥
यह गति मति बिधि मैं पुनि भाखा । कोई जगत न सूझी आँखा ॥
यह बिधि सत मति भेद बताई । काहू के परतीत न आई ॥
कासी पंडित और अचारी । जोगी परमहंस ब्रह्मचारी ॥
कहै तुलसी कोइ भेद न पाया । यह सब भाव भेद भरमाया ॥

हाल काशी का

दोहा—तुलसी ग्रन्थ पसार, कासी नगर सगरे भई ।
पंडित ज्ञानी भेष, जैन तुरक सब मिलि कही ॥ १ ॥

तुलसी बाम्हन साध, गंगाजी षार रहतु है।
निंदत सिम्रित बेद, यह अभेद गति कहतु है ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

सब पंडित मिलि मता उठाई । या को करिये कौन उपाई ॥
नैनू नाम इक पंडित भारी । तेहि पंडित मिलि सोच बिचारी ॥
तुलसी नाम इक साध कहाये । जिन सब नेम अचार उठाये ॥
ग्रंथ बनाइ कीन्ह एक भाषा । तीरथ बरत एक नहिं राखा ॥
वा को भेद भाव सब लीजे । केहि बिधि ज्ञान समझ तेहि कीजे ॥
स्यामा समझ एक बतलाई । रहत पास कोइ ताहि बुलाई ॥
पंडित एक कही समझाई । रहत अहीर सोइ भाखि सुनाई ॥
नाम जानि इक ह्विदे अहीरा । निसि दिन आवै हमरे तीरा[1] ॥
सुनै कथा पुनि सेवा करई । रात दिवस बस पासै परई[1] ॥
नैनू मिलि सब बाम्हन भाई । तिनि पुनि ह्विदे अहीर बुलाई ॥
सब पंडित अस पूछन लाई । कौन ज्ञान यह कहत गुसाँई ॥
बेद भेद मरजाद उठावै । सिम्रित सास्तर ना ठहरावै ॥
गंगा जमुना अन्तर मानै । है परतच्छ ताहि नहिं जानै ॥
पूजा पत्री और अचारा । तिरथ बरत कहै झूठ पसारा ॥
राम रहीम एक नहिं मानै । यह कछु ठौर और कछु ठानै ॥

दोहा—दीन्हा ह्विदे जवाब, साफ बात बिधि यों कही ।
गति सत संत अपार, पंडित बिधि जानै नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

ह्विदे अहीर ज्वाब अस दीन्हा । संत गती कोइ बिरले चीन्हा ॥
मैं तो अपढ़ जाति अज्ञाना । तुम पंडित पढ़े बेद पुराना ॥
संतन की गति कहौं बुझाई । तुमहुँ न बेद भेद नहिं पाई ॥
पढ़ि पढ़ि पंडित पचि पचि हारी । बेद न भेद संत गति न्यारी ॥

(1) यह दोनों कड़ियाँ मु० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है ।

सोरठा—नैनू कहै बिचार, यह निकाम कस भाखेऊ ।
यह जड़ जाति गँवार, बेदन सों न्यारी कहै ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू सुनि पुनि मारनि धाये । पंडित और अनेक बुलाये ॥
सब से कहै सुनौ तुम ज्ञाना । यह अहीर कस करत बखाना ॥
सब पंडित मिलि यह बिधि ठानी । या की करौ प्रान की हानी ॥
यह सब मिलि कर मता उठाई । हिरदे ऊपर लात चलाई ॥

सोरठा—तुरक तकी इक स्वार, जात हते दरबार को ।
घोड़ा फेरि निहार, यह बिबाद कैसे भई ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी इक तुरुक सवारा । ते पुनि जात हते दरबारा ॥
सुन करि बात बाग उन मोड़ा । फेरि लगाम कीन्ह उन घोड़ा ॥
सेख तकी पूछी पुनि बाता । तैं कहु कौन कौन सी जाता ॥
केहि कारन यह झगरा होई । सो सब भेद कहौ बिधि सोई ॥

सोरठा—नैनू निरखि पुकार, सेख तकी को देखि कर ।
ये का कहत गँवार, बिधि कुरान मानै नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू कहै सुनो मेहरबाना । बेद कितेब न मानै पुराना ॥
राम रहीम एक नहिं मानै । पंडित काजी झूठ बखानै ॥

सोरठा—हिरदे कहो बिचारि, सेख तकी जो तुरक से ।
तुम बूझौ दिल माहिं, खुदा एक सब में कहौ ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहै तकी सुनु सेखा । सब में कहौ खुदा है एका ॥
गाय मार बकरी तुम खइया । येहि किताब में कह्या गुसँइयाँ ॥
सब में नूर मुहम्मद केरा । काटि गला पुनि पैहौ बैरा ॥
येही कितेब कुरान बखाना । जिन्दा को मुरदा करि जाना ॥

सोई मुसलमान है भाई। नबी नाम हर दम लौ लाई ॥
रोजा कर कर खून बिचारा। ये गुनाह नहिं बक्सनहारा ॥
झूठा रोजा झूठ निवाजा। झूठा अल्ला करै अवाजा ॥
वा साहिब की राह न पाई। सब जहान में रहा समाई ॥

सोरठा—सेख तकी सुनि बात, ज्वाब स्वाल बोले नहीं।
धर्मा जैनी जाति, संग बात कीन्ही सही ॥

॥ चौपाई ॥

धर्मा नाम जाति इक जैनी। उन सब सुनी हमारी कहनी ॥
धर्मा स्त्रावग कहै बिचारी। जैन मता है सब से भारी ॥
ये मति आदि साध नहिं जानै। तैं मत झूठा बाद बखानै ॥
चौबीसौ तीथंकर जानी। आदि नाथ हैं हमरे स्वामी ॥
तिनकी आदि कहा तुम जानौ। नाहक बेगुन बादि बखानौ ॥

सोरठा-ह्रिदे कहै सुनु बात, जैन मता पुनि सब कहौं।
सुनौ भेद बिख्यात, आदि अंत सब समझि कै ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहै सुनौ हो भाई। आदि नाथ की आदि सुनाई ॥
जो तुम सुनौ कहौं विधि नाना। हम सब कहैं सुनौ दै काना ॥
प्रथम जुगल्या धर्म बिचारी। आई छींक भये सुत नारी ॥
होते छींक प्रान तेहि जाई। कन्या पुत्र भये तेहि ठाईं ॥
ता पीछे कुलकर की बाता। चित दे सुनौ कहौं बिख्याता ॥
चौधा कुलकर भेद बखाना। ता में नभ राजा इक जाना ॥
मुरा देबि तेहि भाखौं भेवा। जाकर ऋषबराय भये देवा ॥
भागवत कहै ताहि अवतारा। तिन का सुनौ आदि निरबारा ॥
ता ने तप कीन्हो निरबाना। मुक्ति पाइ पुनि काल समाना ॥
ऐसे भये और चौबीसा। पुनि पुनि आये मुक्ति पद ईसा ॥
ता में प्रथम ऋषबदेव होई। भाखा तिन जग थापा सोई ॥

आगे भेद न उनहूँ जाना। यह सुन सार भेद निरबाना ॥
जग थापा पुनि धर्म चलाई। आदि पुरान में देखौ भाई ॥
कह नौकार जाप बतलाई। जाकी विधी कहौं समझाई ॥
जाप भेद मैं कहौं पुकारी। दिल अपने में लेउ बिचारी ॥
अरिहँत सिद्ध भाखि बिधि नामा। अरियानं उज्झानं जाना ॥
लोये सर्ब साध को कीन्हा। ये नौकार मन्त्र उन लीन्हा ॥
सुनि धरमा तब चकृत भयऊ। सब बरतंत जैन कौ कहेऊ ॥

दोहा—सुनि धर्मा यह भेद, ये अभेद कछु भिनि कहै।
जैन मता समझाइ, ये अकाय कछु अगम है ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी पंडित भये एका। धर्मा धर्म कि बाँधी टेका ॥
ये तीनों तुलसी पै आये। हिरदे ऊपर बाँह चढ़ाये ॥
और अनेक मूरख बहुतेरे। कोइ सूधे कोइ चलैं अनेरे ॥
हिरदे अहीर चले सब झारी। जहँ तुलसी ने कुटी सँवारी ॥
हिरदे अहीर साथ झख भारी। तब तुलसी ने मता बिचारी ॥
सब चलि आये कुटी के पासा। ज़ब तुलसी मन कियो हुलासा ॥
उठि के चरन गहे सब केरे। कीन्ही दया दीन तन हेरे ॥
बाम्हन पंडित धर्मा जैनी। सेख तकी से कीन्ही सैनी ॥
नैनू पंडित सैन सँवारा। धर्मा हिये उठै जस झारा ॥
यह दोनों मिलि मता बिचारी। सेख तकी को आगे डारी ॥
नैनू नोक टोक इक झारा। यह इनके हैं गुरू बिचारा ॥
पूछो भेद कहैं निरवारा। इन कस भाखा झूठ पसारा ॥
सोरठा--हिरदे कहै निहोर, स्वामी तुलसी बिधि सुनौ।
मैं कछु कही न और, ये अबूझ बूझी नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहै सुनौ हो स्वामी । मैं कछु कही रीति गति ज्ञानी ॥
नैनू पंडित कहै बिचारी । इन सब ज्ञान कही गति न्यारी ॥
इन सब धर्म कर्म जग पेला । अस कस ज्ञान कहै यह चेला ॥
इन सब बेद कितेब उठावा । जोगी जैन नहीं ठहरावा ॥
और अनेक बात नहिं मानै । अस कह मन्त्र सुनायौ कानै ॥
तब तुलसी सुनि आदर कीन्हा । प्रीति भाव उठि आसन दीन्हा ॥
दीन बिधी सब अपनी गाई । चरन परसि कै सीस चढ़ाई ॥
मैं अनाथ हौं तुम्हरौ बारा । छिमा करौ मैं दास तुम्हारा ॥
मैं औगुन की खानि अपारा । तुम गुन सीतल अपरम्पारा ॥
तुम पंडित मैं अपढ़ अयाना । करौ दया तुम कृपानिधाना ॥
ये हिरदे कछु ज्ञान न पावा । औगुन ज्ञान जो तुम्हैं सुनावा ॥
सीतल भये धीर तब आई । सुनि अस बचन बैठि भुँइ माईं ॥
सोरठा--तकी तुरक कह बात, तुलसी सुनियौ भेद अब ।
सब हिरदे बिख्यात, जो गुनाह इन ने किया ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी जब बचन सुनाई । तुलसी सुनियौ चित्त लगाई ॥
हिरदे कुफ़र बात सब कीन्हा । रोजा निमाज मेटि सब दीन्हा ॥
और कितेब कुरान उठाये । खुदा नबी कर खोज मिटाये ॥
सोरठा--तुलसी तकी बिचार, सब सँवारि बिधि मैं कहौं ।
कहुँ कुरान निरधार, जो किताब भाखी सबै ॥

॥ सम्बाद साथ तकी मियाँ के ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै तकी सों बाता । या का तकी सुनौ बिख्याता ॥
चौधा तबक कुरान बताया । और चौबीस पीर पुनि गावा ॥
फजल मुहम्मद कीन्ह जहाना । आब ताब पट अबर निदाना ॥

तबक भिन्न चौथा बतलावौ । भिनि चौबीस पीर दरसावौ ॥
कौन तबक में कौन बयाना । सो तकी कहिये हक्क इमाना ॥
कौन तबक में नबी का बासा । तबक तबक का कहौं खुलासा ॥
सुनकर तकी ज्वाब अस दीन्हा । कहौं हक्क जो करौ यकीना ॥
अल्ला ने मुख कही जुबाना । जा से भये कितेब कुराना ॥
जाहिर किये पैगम्बर भाई । सब जहान खिलकत के माइँ ॥
कर सरियत सब राह चलाई । तकी कहै म्याँ तुलसी साँईं ॥
खिलकत खबर जहान जनावा । पैगम्बर पर हुकम चलावा ॥
सरा[1] राह सरियत[1] की बाँधौ । अल्ला हुकम राह को साधौ ॥
मुसलमान जो नाम कहावै । हक्क इमान कुरान बतावै ॥

॥ तुलसी साहिब वाच ॥

दोहा--तकी तोल जाना नहीं, कहौ कुरान की बात ।
दिल दरियाफ्त अपने करो, जो कुरान बिख्यात ॥ १ ॥
खुदा चून बेचून[2] है, अस अस कहत कुरान ।
बिन जुबान अल्ला मियाँ, कस कस किया बखान ॥ २ ॥
अल्ला अलिफ जुबान, बिना बदन जाहिर नहीं ।
जुबाँ बदन के माहिं, तौ बेचूँ कहना नहीं ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

तकी मियाँ हक बोल सुनावौ । अल्ला तौ बेचून बतावौ ॥
उनके बदन जुबाँ नहिं भाई । कैसे कितेब कुरान बनाई ॥
कागद स्याही कस लिख मारा । बिन जुबान कैसे बिस्तारा ॥
अल्ला मियाँ कितेब बनाई । कहौ जुबाँ बिन कैसे गाई ॥
ये तौ दिल बिच साँच न आवै । तुलसी तकी बोल नहिं भावै ॥
बिन जुबान मुख कहा कुराना । अल्ला के नहिं बदन जुबाना ॥

(१) शरअ और शरीअत । (२) बेमिसाल ।

चूँ बेचून नमून न ज्वाबा[1] । सुनो तकी म्याँ कहै किताबा ॥
वहि कितेब कह खुदा जुबाना । अल्ला मुख से भये कुराना ॥
जो जुबान नहिं उनके भाई । तौ कस कहे कुरान बनाई ॥
या की तकी तोल बतलावौ । दिल में समझ बूझ समझावौ ॥
दिल और रूह राह बतलैयै । तब कुरान का गाना गैयै ॥
रूह रकान असमान ठिकाना । केहि बिधि गई राह पहिचाना ॥
सो घर का म्याँ भेद बतावौ । चौधा तबक तोल समझावौ ॥
सुनकर तकी तका नहिं बोला । मुख भया बंद जुबाँ नहिं खोला ॥
तुलसी कहै कहौ कस भाई । जा से दिल बिच होइ निसाई ॥
सुनकर तकी ज्वाब अस दीन्हा । मुरसिद मियाँ मरम हम चीन्हा ॥
तुलसी तकी दीन जब देखा । तब भाखा बिधि भेद बिसेखा ॥
साँचो महजित तन को जाना । तब भाखा बिधि भेद बिसेखा ॥
साँची महजित तन को जाना । जा में चौधा तबक समाना ॥
मक्का भिस्त हज्ज येहि माई । मुल्ला काजी राह न पाई ॥
मुहम्मद नूर जानि सब केरा । दोजख भिस्त में किया बसेरा ॥
नूर नबी ने सब का कीन्हा । तुम हलाल बकरी कस कीन्हा ॥
गुनहगार दोजख की रीति । करौ खून ये बहुत अनीती ॥
जो महजित उन आप बनाई । सो हलाल करि के तुम खाई ॥
मिट्टी महजित कबर बनाई । झूठा हक ईमान बताई ॥
साँची महजित तन मन साईं । खिलकत खुदा खलक के माईं ॥
नूर नबी सब माहिं बिराजा । जाकी हर दम उठै अवाजा ॥
नूर नबी सब माहिं बिचारा । तब दोजख से होइहै न्यारा ॥
नासुत मलकुत जबरुत भाई । लाहुत राह नबी की पाई ॥
लामुकाम रब साहिब साँई । वाको खोज भिस्त तब पाई ॥
सेख तकी तक थक रहे भाई । ज्वाब स्वाल मुख से नहिं आई ॥

(१) मु॰ दे॰ प्र॰ की पुस्तक में "न ज्वाबा" की जगह "जवाबा" है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

॥ चौपाई ॥

सुनौ तकी कहुँ खोज न पावै । कहा किताब ज्वाब नहिं आवै ॥
काजी मुल्ला पढ़ै कुराना । खुदा खुदा कहे खोज न जाना ॥
खोलि कितेब देखिये भाई । खुदा आदि कहौ कहँ से आई ॥
खुद खुदाइ कर कहै कुराना । खुद खुदाइ का मरम न जाना ॥
ये खुदाइ ना कहिये भाई । ये तौ खुद खुदाइ की छाँहीं ॥
जहँ खुदाइ रहता है साँई । उस खुदाइ का अंत न पाई ॥
तकी खुदा तुम एक बतावो । खुद खुदाइ का खोज लगावो ॥

सोरठा--तुलसी तकी तलास, खुदा बास कहु कहँ हता ।
नहिं जब जिमीं अकास, कोइ किताब स्वाँसा नहीं ॥

दोहा--मंसूर मियाँ पस्तो कहै, तकी बूझ दिल माँइ ।
खुद खुदाइ की राह का, खुदा खोज नहिं पाइ ॥

॥ पश्तो १ ॥

खोल देखो रे किताबैं, आद अव्वल कौन था (म्याँ) ।
नहिं जमीं असमान खिलकत, खुद खुदा तब था कहाँ ॥ १ ॥
कुफल खोले रे कुराना, मूल म्याना भेद का ।
था कमल स्याही न कागज, और न था आदम मियाँ ॥ २ ॥
नहिं मुहम्मद रब न रे जब, नहि पैयम्बर पीर थे ।
नहिं नबी का नाम निसबत, भिश्त दोजख नहिं रचे ॥ ३ ॥
काजी मुल्ला रे बेहोशो, खोज करो दिल्दार का ।
मन मुआ मनसूर जब से, आशिक जो चश्मे यार का ॥ ४ ॥

॥ पश्तो २ ॥

यह खुदा ना है रे कुदरत, खुद खुदा कोइ और है (म्याँ) ।
जिन खुदा को तख्त बख्शा, वह सकस कहो कौन है ॥ १ ॥
दिल दिया और रूह रोशन, है हसन तन हुस्न को ।
जब तबक चौधा दिये हैं, आदि खुदा को जानिये ॥ २ ॥

कुल जहाँ आलम है कुन से, पट अबर अल्ला से है।
यह हर इक ना कोइ किसी पै, भेद दोस्ती दिल मिलै ॥ ३
महरम मियाँ मनसूर आशिक, वह है बेचूँ बेनमूँ।
यह किताबों में नहीं है, खुद खुदा का राज है ॥ ४

॥ पश्तो ३ ॥

ऐन अन्दर चश्म को रे, खोल देखो कौन है (म्याँ)।
कुल खलक आलम इसम बिच, दिल हिये में खसम है ॥ १
नहिं किताबों में रे है कुछ, कुल कुराने छूँछ है।
वह पिया आलम की आँखियाँ, और कहीं नहिं पूछ ले ॥ २
हस्न है रे हंस जा से, हुस्न तन बिच में रहा।
भूल अपनी आद अव्वल, कट मरे मन मौज में ॥ ३
होश गाफिल है रे दोजख, दिल दिया नहिं यार को।
बूझ बिल-आखिर[1] खराबी, इश्क ज्यों मनसूर हो ॥ ४

॥ पश्तो ४ ॥

देख कुछ नहिं इस जहाँ में, सब फना हो जायँगे (म्याँ)।
रहै रब का नाम मरदो, लोग लशकर कूँच है ॥ १
चार दिन खूबी खलक में, अन्त मरना इक है (म्याँ)।
ज्यों धुएँ का मेघडम्बर, फुल मिटै हक पलक में ॥ २
तन को देखो आशिको, बस खून चमड़ी हाड़ है।
जब निकल जावै पवन, तब गाड़ मिट्टी में मियाँ ॥ ३
यार अजीजों ने कफन में, बाँध धरा ताबूत पर।
जोरू अम्मा कुल कुटम सब, मनसूर तन मन झूठ है (म्याँ) ॥ ४

॥ पश्तो ५ ॥

खोज मुरशिद्द रे मुरीदो, राह रोशन यार को (म्याँ)।
रूह मेहर मुरशिद के दसतों, दिल फजल दिलदार में ॥ १
रूह चढ़ावो रे अबर को, हो खबर उस यार को।

(१) अन्त को।

ला पै जब रब राह चीन्है, पल में लखै इसरार को ॥ २ ॥
कुफल खोले रे अधर के, रूह से फोड़ असमान म्याँ ।
जान मलकूत नासूत को, जबरूत की कर कदर म्याँ ॥ ३ ॥
जा मिलै लाहूत रे जब, होश हो हाहूत का ।
लौ लगी जो ला के अन्दर, रब मिले मनसूर को ॥ ४ ॥

दोहा--रब्ब राह लौ लाह में, खुदा खोज दिल माहँ ।
रब खोदाइ से अलग है, खुद खुदाय तेहि नावँ ॥ १ ॥
बूझो खोज किताब में, सब कुरान कुल भार ।
कर तलास काजी सुनौ, कहि मनसूर पुकार ॥ २ ॥

सोरठा--तुलसी तकी निहार, कहि पुकार मनसूर ने ।
मुरसिद खोज बिचार, बन मुरीद मुरसिद मिले ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै तकी सुन बाता । खुद खुदाइ मालिक है दाता ॥
उनका खोज खुदा नहिं पाया । नहिं कितेब लिखने में आया ॥
काजी मुल्ला खोज न पावै । दे दे बाँग खुदा गोहरावै ॥
अब खुदाइ का खोज बताओं । खुदा राह और भिस्त लखाओं ॥

॥ रेखता ॥

अजब अनार दो भिस्त के द्वार पै ।
लखै दुरवेस फक्कीर प्यारा ॥ १ ॥
ऐन के अधर दोउ चस्म के बीच में ।
खसम को खोज जहँ झलक तारा ॥ २ ॥
उसी बिच फकत खुद खुदा का तखत है ।
सिस्त से देख जहँ भिस्त सारा ॥ ३ ॥
तुलसी तत मत मुरसिद के हाथ है ।
मुरीद दिल रूह दोजख नियारा ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी भिस्त मिलाप, खुदा येहि बिधि मिलै ।
चौथा तवक निवास, कहौ कुरान किस बिधि कहै ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी तबक तरक पहिचानौ । तब मियाँ तकी भिस्त को जानौ ॥
बिन मुरसिद पावै नहिं घाटा । ये सब समझ खोज ले बाटा ॥
सुनकर तकी बहुत भये दीना । बन्दा गुनहगार नहिं चीन्हा ॥
चरन पकड़ पुनि सीस गिरावा । तुम फकीर हम मरम न पावा ॥
तुम खुदाइ की जाति अजाती । हम इनके सँग भये सँगाती ॥

दोहा--तकी कहै तुलसी मियाँ, तुम गुरु पीर हमार ।
गुनह बक्स अपना करौ, बंदा तकी तुम्हार ॥ १ ॥
तकी दीन तुलसी लखा, पका दीन मत माइँ ।
झका तका अपनी तरफ, गुनहगार तुम पाइँ ॥ २ ॥
तकी तबक जाना नहीं, नबी नूर नहिं पाइ ।
भिस्त दोजख में तुम रहे, कैसे मिलै खुदाइ ॥ ३ ॥

॥ रेखता नसीहत ॥

तुलसी तबक जाना नहीं, बेहोस गाफिल हो रहा ।
जिस ने तुझे पैदा किया, उस यार को चीन्हा नहीं ॥ १ ॥
नाहक अदम दम खोवता, मुरसिद पकड़ नहिं डूबही ।
तुलसी खलक कुल ख्याल है, आसिक मुहब्बत कर सही ॥ २ ॥
खोजो मुहम्मद दिल-रहम, जिस इस्म से आलम हुआ ।
तुलसी नबी निरखै नहीं, जहँ लग मुसल्लम है नहीं ॥ ३ ॥
रब रूह मरहम ना हुआ, रब देख अंदर है सही ।
तुलसी तकी बूझा नहीं, जग में जिया तो क्या हुआ ॥ ४ ॥
गन्दा नजिस क्यों हो रहा, इस जक्त में रहना नहीं ।
अरे ऐ तकी तल्लास कर, तुलसी फना होना सही ॥ ५ ॥

चारो चसम[1] को खोल कर, देखो जुलम जालिम वही।
जबरील को तैं ना लखा, तुलसी खबर खोजा नहीं॥ ६॥
रोजा निमाज हर दम किया, उस यार को दिल ना दिया।
खोजा नहीं अपना पिया, तुलसी तकी दोजख लिया॥ ७॥
नासूत मलकूत जबरूत हैं, लाहूत लौं तैं ना लिया।
हाहूत हिये खोजा नहीं, ला में रबी जीता पिया॥ ८॥
तुलसी तकी तालिम[2] दिया, हर दम गुनह बंदा हुआ।
मुरसिद मुरीदी दस्त है, पावै तकी अपना किया॥ ९॥
तुलसी रहम राजी हुआ, तोला तकी अपना किया।
दिया दस्त दरदी जान कै, तुलसी तकी मुरसिद हुआ॥१०॥
दोहा—तकी दीन तुलसी लखा, दीन्हा पंथ लखाइ।
सुरति सैल असमान कर, चढ़े गगन को धाइ॥

॥ चौपाई॥

तकी दीन गति गाइ सुनाई। दीन्हा सूरति पंथ लखाई॥

॥ सरन में आना तकी मियाँ का॥

दोहा--तकी दस्त दोउ जोड़ि कै, करि सलाम सिर टेक।
नेक नजर अपनी करो, बन्दा तकी निहाल[3]॥

॥ चौपाई॥

नेक निहाला नजर निहारो। तुलसी वन्दा तकी सम्हारो॥
हमरा गुनह माफ सब कीजे। फजल करो फिर अज्ञा दीजे॥
चले तकी मारग को जाई। कासी नगरी पहुँचे आई॥
दोहा--चले तकी मारग गये, बीच बजार मँझार।
कर्मा पल्लीवाल की, गये दुकान के पास॥

॥ चौपाई॥

कर्मचंद इक पल्लीवाला। स्रावग जैन धर्म मत पाला॥

---

(१) अंतर और बाहर की दृष्टि। (२) शिक्षा। (३) मु० दे० प्र० की पुस्तक में "लेवो तकी अलेक" है।

सो करै बनिज बजाजी कोरा । ताहि दुकान बाग तेहि मोरा ॥
कर्मचंद ने कीन्ह सलामा । आदर बहुत कीन्ह सनमाना ॥
सेख तकी कहै सुन रे भाई । कहौं फकीर अक[1] खुदा गुसाईं ॥
ता को सब बरतंत सुनावा । कर्मचंद तुलसी ढिग आवा ॥
कर्मचंद और धर्मा जैनी । सब पूछी पुनि हमरी कहेनी ॥
कौन धर्म यह साध कहावा । जैन को धर्म मर्म जिन पावा ॥
धर्मचंद और कर्मा जैनी । थापी उन निज अपनी कहेनी ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

कहि तुलसी तुम मर्म बताओ । जैन धर्म का भेद सुनाओ ॥

॥ उत्तर कर्मचंद और धर्मा ॥

कर्मचंद और बोले धर्मा । होइ मुक्ति जब काटै कर्मा ॥
तप कर संजम बन को जावै । हरी त्याग कर जीव बचावै ॥
टाटक ध्यान जपै नौकारा । जब या जीव को होइ उबारा ॥
कोसिस ऐसी कठिन अपारा । काटै कर्म जीव निरबारा ॥
तीथंकर चौबीसो जाना । कर्म काटि पहुँचे निरबाना ॥
सोरठा--धर्मा कही जनाइ, जैन धर्म संजम बिधी ।
तुलसी सुनो समाइ, तब पुनि फिरि आगे कहौं ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

सोरठा--तुलसी पूछै ताइ, भेद कहो निरबान को ।
तुम कस पायो जाइ, सो देखी अपनी कहौ ॥

॥ चौपाई ॥

तुम देखी अपनी बतलावौ । करनी और और की गावौ ॥
साँची करनी अपनी भाई । तुम कुछ और और की गाई ॥
तीथङ्कर पहुँचे निरबाना । कर्म काटि वे जाइ समाना ॥

---

(१) या कि ।

तुम तेहि करनी भाखि सुनाई। हाथ कहा कहौ तुम्हरे आई ॥
जीवत मिले देखिये आँखी। ता की करनी कह कर भाखी ॥
खावै भूख जाइ पुनि ताही। ऐसी बात कहौ समझाई ॥
अब जो तुरत तलब सो पावै। तब तुलसी की प्यास बुझावै ॥
तुम तौ कही जुगन की बानी। देखौं अबै सुनौ जो कानी ॥
देखौं अबै तो मन पतियावै। ऐसी तत्त बात मन भावै ॥
ये सब कही सुनी हम जानी। मुए मुक्ति की करो बखानी ॥
मूए पर कोइ आवै न भाई। जीवत में केहु पहुँचि न पाई ॥
ता की खबर साँच कस आई। सो धर्मा तुम कहो सुनाई ॥
ये तौ अंध अंध कर लेखा। मानौं जो जोइ नैनन देखा ॥
सोरठा--तुलसी तुरत बताइ, जो निज नैनन लखि परै।
सरै जीव को काज, परे पार गति देखिये ॥

॥ चौपाई ॥

सो साँची मानैं हम भाई। ऐसी धर्मा कहौ सुनाई ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

दोहा--कहै धर्मा तुलसी सुनौ, कहौं भेद बिस्वास।
बिन संजम पावै नहीं, तप जप बिना उपास ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

सोरठा--सुनु धर्मा बिधि बात। संजम तप मुक्ती नहीं ॥
पद पावै निरबान। चढ़ि अकास मुक्ति मिल ॥ १ ॥
निज निरबान बिधान। कहौं भेद भिन भिन सुनौ।
पद निर्बान निज पार। संत सार आगे चखै ॥ २ ॥

॥ रेखता ॥

निकट निरबान की सान जग में लखो।
फटिक बिच सिला पर स्याम माई ॥ १ ॥
काल की जाल दरहाल जा को कहैं।

भये चौबीस औ मुक्ति पाई ॥ २ ॥
गुन मिलि गोह चौथा गुनष्ठान हैं।
चौधा जमशय जहँ बसत भाई ॥ ३ ॥
अधर अठबीस लख लोक राजू कहै।
काल निरबान रत रहत राही ॥ ४ ॥
देव मुनि दैत्य गंधर्ब और मानवी।
केवली[1] काल मुख सकल जाई ॥ ५ ॥
दास तुलसी निरबान पद निरखि कै।
छाँड़ि ये राह घर अधर माईं ॥ ६ ॥

॥ गजल १ ॥

जैनी जो जैन नैन बूझै नाइं।
आतम को छाँड़ि पुजैं पाहन जाई ॥ १ ॥
कर कर पूजा बिधान अष्टक गावैं।
भादों बिधि मंदिर सब स्त्रावग आवैं ॥ २ ॥
चावल रँग माँड़ मँडे मनसैं आप का।
नंदेसुर पूजि दीप करैं बाप का ॥ ३ ॥
औंर अढ़ाई दीप माँडि करते पूजा।
अंदर आतम्म ब्रह्म नाहीं सूझा ॥ ४ ॥
करते कल्यान पाँच कामधेनु की।
पूजैं बेहोस फूटि हिये नैन की ॥ ५ ॥
जिन ने तन साज किया जानौ भाई।
वा की बिधि भूलि भाव पाहन लाई ॥ ६ ॥
तुलसी ये फंद कीन्ह काल पसारा।
धरमन की टेक बाँधि बूड़े सारा ॥ ७ ॥

---

(१) पूरा ज्ञानी जो मुक्ति का अधिकारी हो गया है उसको जैन मत में "केवली" कहते हैं।

॥ गजल २ ॥

ढूँढ़त गिरिनार सिखर आबू जाते।
सतगुरु बिन मेहर नहीं काबू पाते ॥ १ ॥
बूझै सतसंग संग संतन माईं।
अंदर पट खोल बोल देत दिखाई ॥ २ ॥
जिनके बड़े भाग सोई निरख निहारा।
रहते जग बीच बीच जग से न्यारा ॥ ३ ॥
उनकी वोहि चाल हाल घट में देखै।
पूछै कोइ चीन्हैं नहिं बात बिसेखैं ॥ ४ ॥
खोजत पहाड़ सिखर मूरति माईं।
तुलसी नौकार जपैं सूझै नाईं ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

पद निरबान भूमि बतलाई। केवलि ज्ञान तिथंकर गाई ॥
तप संजम पूजा बिधि बानी। ये गति चारि माहिं भौ खानी ॥
दोहा—जप नौकार निकाम सब, आदि सार नहिं जान।
पद निरबान के पार की, तुलसी करत बखान ॥

॥ शब्द ॥

अद्भुत आज अलेखा री, सखि सइयाँ को भेषा ॥ टेक ॥
उदित मुदित दोइ सहर सुहावन, स्याम सेत नित देखा।
अजर खेत्र नभ फटिक सिला पर, पद निरबान बिसेखा ॥ १ ॥
सिलि षिलि बिजै खेत्र बिंदाचल, लील सिखर पर ठेका।
समुँदर सात पार जल खण्डा, अंडा अब ले पेखा ॥ २ ॥
निरखत चारि खानि गति चारी, बिधि बिधि जीव बिसेखा।
केवलि ज्ञान होत गुंकारा, देखे केवली अनेका ॥ ३ ॥
ये निरबान भूमि मत मारग, आगे जान न लेखा।
स्रावग जैन धर्म मत माहीं, इनके वोही टेका ॥ ४ ॥

आतम ज्ञान ध्यान बतलावैं, आगे भेद न पावैं।
सास्तर साखि भाखि बिधि देखैं, खोजत मुए अनेका ॥५॥
या के परे भिन्न गति न्यारी, सुनि बाइस बिधि देखा।
ता के परे पार सत साहिब, सो पद संतन लेखा ॥६॥
सुन्न सुन्न प्रति प्रति पद माहीं, जहँ निरबान न पेखा।
केवलि ज्ञान आतमा नाहीं, धरम करम नहिं एका ॥७॥
सूर चंद नहिं धरनि अकासा, तेज पवन जल छेका।
ता के परे पार निर्खि न्यारा, तुलसी हिये दृग देखा ॥८॥
दोहा—तुलसी भूमि निरबान की, धर्मा सुनौ बयान।
केवलि ज्ञान गोंकार का, तुलसी करत बखान ॥१॥
फटिक सिला नभ ऊपरे, केवलि करत बखान।
तुलसी चढ़ि असमान पर, निरखा भिनि भिनि छान ॥२॥
निरबान निरखि आगे चली, सुनि अँड बाइस पार।
नहिं निरबान गति वहँ चलै, तुलसी देखा भार ॥३॥
जीव अचर चर अंड के, जो ब्रह्मंड के माइँ।
सूरति चढ़ि असमान पर, तुलसी देखा जाइ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी धर्म बिलोके सारी। तुरक जैन बाम्हन मत भारी ॥
जग थापन जैनी बतलावैं। ऋषब देव कीन्हा बिधि गावैं ॥
तीथंकर चौबीसो बानी। तुरक पीर चौबीस बखानी ॥
मुहम्मद थापन कीन्ह जहाना। बाम्हन ब्रह्मा बेद बखाना ॥
मुहम्मद तुरक बाम्हन बतलावैं। तीसर जैनी अस अस गावैं ॥
अस अस तीनौं कहत बखाना। झूठ साँच कहौ केहि को माना ॥
दोहा—गुनष्टान चौधा कहे, जैन मते में जान।
तुरक तबक चौधा कहे, बाम्हन भवन बखान ॥ १ ॥
चौधा भवन बाम्हन कहैं, तीनो मत इक सार।
आदि पार कोइ ना कहै, लखा न रचनेहार ॥ २ ॥

॥ रेखता ॥

चौथा तबक किताब कुरान में।
पोर चौबीस पुनि वोहू गावा ॥ १ ॥
अल्ला रचि खेल सब जहान आलम किया।
आब और ताब पट अबर आवा ॥ २ ॥
सरा का खेल मुहम्मद से करि कहैं।
येही बिधि तुरक तकरीर लावा ॥ ३ ॥
जैन मत माहिं गुनष्टान चौथा कहैं।
बिधी भगवान चौबीस गावा ॥ ४ ॥
ऋषबजी रचन संसार की थापना।
आपने मते की वोहू लावा ॥ ५ ॥
बेद पुरान संसार बाम्हन कहै।
विधी भगवान चौबीस गावा ॥ ६ ॥
चतुरदस लोक लीला बरनन करैं।
रचा बैराट जग बिधि बनावा ॥ ७ ॥
झूठ और साँच कहौ कौन को कीजिये।
हिन्दू और तुरक पढ़ भूल पावा ॥ ८ ॥
जैन सोइ जिंद बुन्द आदि को ना लखा।
तीनि में किनहुँ नहिं चीन्ह पावा ॥ ९ ॥
दास तुलसी कहै अगम घर अधर है।
संत बिन भेद नहिं हाथ आवा ॥ १० ॥

॥ चौपाई ॥

बाम्हन तुरक जैन मत माईं। करता की गति केहु न पाई ॥
मत अपने अपने की गावैं। तीनौं करता तीनि बतावैं ॥
थापा जग रचि एक बनाई। ये तीनौं मिलि तीनि बताई ॥
सोरठा--धर्मा धर्म पसार, जैन बिधी कस कस कही।
भिनि भिनि कहौ बिचार, तप संजम उपवास बिधि ॥

॥ चौपाई ॥

ब्रत संजम जप तप बतलावौ। कहै तुलसी भिनि बिधि दरसावौ ॥
कस कस चलन बात बिधि कहिये। स्त्रावग बिधि पुनि धर्म सुनइये ॥
स्त्रावग कौन बात बिधि पालैं। सोई कहौ कौन बिधि चालैं ॥
धर्मा अष्टक बाँचि सुनाई। तुलसी सुनियौ चित्त लगाई ॥

॥ उत्तर धर्मा। अष्टक १ ॥

जल नीर निरमल मिष्ट। हिमकर बासनं[1] ॥१॥
धार ते भंडार भौ के। चरन श्रीपति चर्चनं ॥२॥
सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता। दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
श्रीपारसनाथ जप सूरज जैनराई। मूल नायक बंदनं ॥४॥
तुम चंद्र - बदनी। चंदा पूरी परमेसुरा ॥५॥
कैलास गिरि पर ऋषब जनवर। चरन कँवल हृदे धरा ॥६॥

॥ अष्टक २ ॥

कुमकुम जो मंजन सगर केसर। मलयागिरि घिसि चंदनं ॥१॥
अकल दुक्ख निरवार भौ के। चरन श्रीपति चर्चनं ॥२॥
सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता। दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
श्रीपारसनाथ जप सूरज जैनराई। मूल नायक बंदनं ॥४॥

॥ अष्टक ३ ॥

बेल फूल चमेलि चंपा। काम कमोदिनि केतकी ॥१॥
तास परमल बास ऊधौ। अगर आगर सेवती ॥२॥
सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता। दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
श्रीपारसनाथ जप सूरज जैनराई। मूल नायक बंदनं ॥४॥

॥ अष्टक ४ ॥

खरि खरेला दाख खिरनी। आम स्त्रीफल लाइया ॥१॥
नारियल नौरंग केला। प्रभुजी के चरन चढ़ाइया ॥२॥
मोरी इतनी बिनती दयाल कौं। प्रभुनाथ के गुन गाइया ॥३॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "नहिं मकर बासन" दिया है जिसका अर्थ समझ में नहीं आता।

तुम चंद्र - वदनी । चंदा पुरी परमेसुरा ॥४॥
कैलास गिरि पर ऋषब जनवर । चरन कँवल हृदे धरा ॥५॥

॥ चौपाई ॥

धर्मा पूजा बिधी बताई । सुनि तुलसी संजम समझाई ॥
स्रावग भिन्न भिन्न जेहि जाती । स्रावग धर्म जो भये सँगाती ॥
तिनकी बात कहौं समझाई । जेहि जेहि बिधि आदि चलि आई ॥
प्रातहिं उठि अस्नानहिं जावै । पानी छानि आपु फिर न्हावै ॥
पूजा बिधी बिधान करावै । पूजा करि फिर आरति लावै ॥
मंदिर बैठि करै पुनि जापा । माला सूत्र लेय सोइ साफा ॥
दरसन करि पुनि घर को आवै । हरी बस्तु कछु नाहीं खावै ॥
दुइज पंचमी पालै सोई । आठैं ग्याहस यह बिधि जोई ॥
चौदसि पाँच बरत नित पाले । स्रावग धर्म येही बिधि चाले ॥
ता कर होय स्वर्ग में बासा । देव लोक पुनि करै निवासा ॥
और उपास बिधी बतलाऊँ । स्रावग धर्म कर्म गति गाऊँ ॥
मासिक मन पखवारा कीन्हा । मुख धोवन मुख पानी लीन्हा ॥
अठवाई तेला जिन जाना । और अनेक उपास बिधाना ॥
बेला बिधि और करै घनेरा । साधै कर्म कटै भौ बेरा ॥
ऐसा धर्म कर्म जोइ जाना । सो प्रानी पहुँचे निरबाना ॥
आदि नाथ केवलि अस भाखी । सास्त्र पुरान कही सब साखी ॥
और जो सुनो आदि की बानी । जो केवली मुख कही बखानी ॥
आदि पुरान प्रथम यों भाखा । जुगल्या धर्म बखानी साखा ॥
एक पुरुष इक नारी हाई । आवत छींक मुए पुनि दोई ॥
नासिका माहिं छींक होइ सोई । कन्या पुत्र भये पुनि दोई ॥
ऐसे कछू दिवस गये बीती । चौधा कुलकर की यह रीती ॥
चौधा माहिं एक नभ जानी । मुरा देवी ताही की रानी ॥
तिनके ऋषब देव पुनि भयेऊ । काटि कर्म तीर्थंकर कहेऊ ॥

तिन पुनि जगत भाव बिधि थापा । कह्यो नौकार मन्त्र पुनि जापा ॥
ता की साखि सुनौ चित लाई । जाप बिधी मैं कहौं सुनाई ॥
सोरठा—सेठ सुदरसन एक, सूली चोर मारग दियौ ।
मन्त्र सुनायौ कान, तुरत चोर स्वर्गैं गयौ ॥

॥ चौपाई ॥

सूली चोर एक जो दीना । सेठि सुदरसन जाप यकीना ॥
अरिहंत सिद्ध दोइ नाम सुनावा । पूरा मन्त्र होन नहिं पावा ॥
स्वर्ग बिमान तुरत ही आवा । चोर प्रान सुरलोक पठावा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

दोहा—तुलसी पूछै बात, धर्मा यह बिधि कस भई ।
जैन बिधी कही झार, सो बृतंत पूछौं तुही ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुनौ तुम भाई । धर्म आपना भाखि सुनाई ॥
ता में बहम एक मोहिं आवो । ताकी बिधि भिनि भाखि सुनावो ॥
सेठ सुदरसन मन्त्र सुनावा । सूली चोर स्वर्ग कस पावा ॥
अब तुम को बरतंत सुनाऊँ । तुम्हरे सास्तर से दरसाऊँ ॥
ये पुरान में देखौ जाई । ता की बात कहौं समझाई ॥
सेठ सुदरसन जाप सुनावा । ता का भर्म भेद मोहिं आवा ॥
तुम पुरान की भाखौ कहनी । सेठ एक रहे स्रावग जैनी ॥
ता की कथा कहौं बिधि नाना । सो बृतंत बिधि सुनियौ काना ॥
उन इक नेम जाप कर लीना । दीपक तेल रहे जाप यकीना ॥
दीपक तेल करै सोइ जापा । खुटै तेल तब सूझै आपा ॥
ऐसी कठिन ठान तेहि ठानी । जाप इष्ट दूजा नहिं मानी ॥
ता के घर इक नार सयानी । उन का इष्ट नेम सोइ जानी ॥
वा के पुत्र एक रहे भाई । ता कर ब्याह कीन्ह बहू आई ॥
सो अजान कछु मरम न जाना । तेल दिया तेहि देखि बिहाना ॥
बैठा ससुर जाप तेहि देखा । तेल खुटै तब डारै पेखा ॥
डारत तेल राति गइ बीती । वो अजान कछु जानै न रीती ॥

प्यास माहिं उन प्रान गँवाया । मेंडक जनम जाइ जल पाया ॥
सासु रही बहु के ढिंग सोई । उन जानी बहू जागत होई ॥
यह बरतंत सत्त है भाई । सो पुरान में देखौ जाई ॥
ऐसी टेक जाप तिन कीन्हा । जनम जाइ मेंडक कौ लीन्हा ॥
सेठ सुदरसन मन्त्र सुनावा । कैसे चोर स्वर्ग पहुँचावा ॥
ऐसी जाप टेक जिन कीन्हा । अंत जनम मेंडक कौ लीन्हा ॥
सो तुम हमको भेद बतावो । कैसे भई बहुरि समझावो ॥
कहै तुलसी धर्मा सुनु बाता । आगे कहौं सुनौ बिख्याता ॥
तुम्हरा सास्तर कहै बखानी । ये पुरान में देखौ बानी ॥
जबै सेठानी पानी जाई । मेंडक गगरी बैठा आई ॥
मेंडक अपने घर को लाई । पानी पनैड़े में लै जाई ॥
आदिहि नाथ समोसन भयऊ । सैन कराय दरस को गयऊ ॥
मेंडक हाथी पाँव कुचामा । भया देवता कहैं पुराना ॥
देव भया कहौ कहँ कौ गइया । केते दिवस देव तन रहिया ॥
सेठ जीव पुनि कहाँ समाना । या कौ आगे करौ बखाना ॥

सोरठा—कहै तुलसी धर्मा सुनौ, लखि पुरान बिख्यान ।
देव भोगि मृत लोक में, आये उन के प्रान ॥

॥ चौपाई ॥

देव माल पुनि जाय सुखाई । चारौं गति जिव जाइ समाई ॥
पुनि पुनि जीव कर्म बस रहिया । जाप प्रताप यही बिधि भइया ॥
आगे या को कहौ बखाना । सेठ जीव पुनि कहाँ समाना ॥
यह पुरान तुम्हरा बिधि गावै । येही मुक्ति भाव दरसावै ॥
कहौं धर्मा यह साँची बाता । तुम्हरे मत का कहा बिख्याता ॥
ऐसे स्वर्ग मुक्ति को भाखै । ये तौ कर्म भोग बस राखै ।
पुनि पुनि आवै पुनि पुनि जाई । बार बार भौ भटका खाई ॥
वा घर को है पंथ नियारा । खोजि जीव भौ उतरै पारा ॥
जो कोइ जिवत आदि घर पावै । सतगुरु पलक माहिं दरसावै ॥

हिया खुलै नैनन से देखै । तुलसी सोई बात परेखै ॥
स्वर्ग नर्क तुम भाखौ भाई । यह तौ झूठी मन नहिं आई ॥
वा घर जीव बतावै चैना । ता की तुलसी मानै बैना ॥
कर्म पलक में तोड़ि बिनासै । ऐसे सतगुरु का मत भासै ॥
धर्मा कहौ सेठ की भाई । सो जिव कहौ कहाँ भरमाई ॥
जप नौकार त्रिधी अस भाखी । या से परे काल की फाँसी ॥
दोहा--धर्मा यह बिधि यों भई, मन में लेउ बिचार ।
स्वर्ग नर्क और मुक्ति कहि, बाँधे कर्म करार ॥ १ ॥
आगे आदि पुरान की, सुनौ साखि बिस्तार ।
आदि नाथ केवलि कह्यो, जुगल्या धर्म बिचार ॥ २ ॥
तुलसी कहै धर्मा सुनौ, जुगल्या धर्म बिचार ।
कहौ उनको किनने कियो, सो बिधि कहौं सम्हार ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम जुगल्या बिधि कहि भाखी । आदि पुरान बतावै साखी ॥
सोरठा--तुलसी कहै पुकार, कहौ जुगल्या कस भयौ ।
उन तन कौन सँवार, कुलकर नभ कस कस कहै ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

सुनियौ तुलसीदास गुसाँई । कहि पुरान सोइ साखि सुनाई ॥
इनका करता बिधी न भाई । ऐसे सास्तर साखि बताई ॥
अंडा सृष्टी आदि अनादा । फूटै न बनै येही बिधि साधा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब । चौपाई ॥

बिन करता कौने बिधि भयेऊ । जुगल्या जन्म नाम कस कहेऊ ॥
याकी भिनि भिनि चीन्ह चिन्हावौ । करता बिन कस कस बतलावौ ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी सुनौ समझ यह जाना । जस जस आदि पुरान बखाना ॥
जुगल्या परे धर्म नहिं गावा । जो बूझा सो बरनि सुनावा ॥

तुलसी साहिब का वाक्य कि जैन मत के अनुसार उत्पत्ति जुगल्या और जगत को कैसे हुई

॥ चौपाई ॥

सुनु धर्मा उत्पति बतलाऊँ। सार सवैया में समझाऊँ॥
जस जस भया जैन कौ लेखा। भिनि भिनि भाखौं भेद बिबेका॥
धर्मा सुनौ कान दे भाई। जैन धर्म की आदि बताई॥

॥ सवैया—नभ रीति जैन मत ॥

जैन को जान कहौं मत छान, सो आदि बखान निरबान की बानी।
आदि पुरान कहौं जो प्रमान, सो ताके बयान में जैन की जानी॥
जुगल्या धर्म जो प्रथम कही, सोइ छींकत प्रान तजे नर नारी।
सोइ छींक से होइ कन्या सुत दोइ, सो ऐसी कहै बिधि बात बिचारी॥
अब पीछे केहि की साखि देऊँ, भये चौधा कुलकर तेहि कहाये।
धेनु जो काम कही कल्प बृच्छ, सो ताहि समय में रहे अस गाये।
ताहि के माहिं रहे नभ राइ, सो साखि पुरान में भाखि सुनाये।
चौधा में एक रहे नभ नेक, सो रानी मुरादेबी नाम धराये॥
ता के भये सुत नाम ऋषब, सो जब से पाँच धनुष की काया।
ता ने कियो तप ध्यान निरबान, सो जाना जोई जा में मुक्ति को आया
आगे का भेद न जाने निखेद, सो खेद भये पुनि काल ने खाया।
मुक्ति भये जग जीव रहे, पुनि आतम अंड को खण्ड बताया॥
सो यहि बिधि आदि पुरान सही, सो कही जग जैन मती अस गाया।
आँवले प्रमान जो अंड लखा, सो भखा तीनो लोक के जीव की जाती।
यहि बिधि आदि पुरान कहै, सो देखि लई बिधि भेद की बाती।
केवलि ज्ञान कहौं जो प्रमान, सो गुन गोंकार से सास्त्र बनाये॥
गंद्रपसेन से बैन सुने, सो गुने मन माहिं जो भाखि सुनाये।
वोही पुरान करै जो प्रमान, सो देव ऋषब ने थापन ठानी॥
मन्त्र नौकार दियो येहि कार, सो अरिहंत सिद्ध की कीन्ह बखानी।
अरियानं नाउँ उज्झानं भाउ, सो सरबइ साध सो लौय लगाये॥
पाँचोइ पद पैंतीसोइ अच्छर, सो सब जैन मती गति गाये।

जोइ निरबान को काल बखान, सो केवली खाइ चौबीस नसाये ।
वे जो दयाल बिर्धी बिधि भिन्न, सो चिन्ह चौबीसोइ नेक न पाये ॥
ये बिधि भेद कहै तुलसी, तत आतम जोग तीर्थंकर गाये ।
आगे का अंत कहैं सब संत, सो पंथ मते मत नेक न पाये ॥

॥ सवैया २ ॥

कोइ स्रावग होइ चरचा मुखसोइ, तौ भाखौ बिधी जाकौ भेद बतावै ।
तुम्हरे मत ज्ञान का ब्यान कहौं, जो पुरान की पूछौं सो भाखि सुनावै ।
जुगल्या जोइ धर्म प्रथम्म कहै, तन छूटि मरै पुनि कहाँ समावै ।
नाक की नीक से छींक कही, सुत कन्या सरीर को कौन बनावै ॥
जुगल्या जोइ नाम कह्यौ केहि काम, सो केहि की जुबान से नाम धरावै
तब केवलि ज्ञान नहीं भगवान, न भाखी पुरान नाम कस पावै ॥
औरहु एक कहौ तुम नेक, सो देइ कुलकर को कौन बनावा ।
तिथि थापन नहिं बाम्हन जाइ, न पुरान सुनाइ तौ कुल कस पावा ॥
कहै नभराइ मुरादेबी ताहि, सो ऋषब बनाइ कहौ को कहावा ।
कर्महि काटि ऋषब जो गये, सो निरबान ठिकान कहौ केहि ठाँवा ॥
आँवले प्रमान जो अंड कह्यौ, सो हथेली के बीच में कैसे दिखावा ।
केवलि कार कहौ गोंकार, सो सीस के पार कौने बिधि आवा ॥
टाटक ध्यान कहा जो बखान, सो कहौ मन को केहि राह चढ़ावा ।
या की बिधी बिधि बात कहै, सुन स्रावग नाम जो ताकौ कहावा ।
पाहन पूजे से सूझा नहीं, हिये नैन से जानि निहारि कै पावै ।
नौकार की जाप करै नित आप, सो ताप तीनों तन साफ सतावै ॥
मुए करै आस स्वर्ग की बास, परै जम फाँस को भेद न पावै ।
तुलसी तत माहिं निहारि पकै, सो लखै बिधि आतम माहिं समावै ॥

॥ सवैया ३ ॥

तुलसी जो बखान कहै सुनि कान, सो भूले पुरान में भेद न पायौ ।
पहिले भयौ नभ नाम अकास, सो बास कियौ तन आस में आयौ ॥
सरीर में जोइ मुराइ रह्यौ, मुरादेबी ता को नाम बतायौ ।
जो ये मन जब ऋषब भयौ, सो रह्यो रस धाम ऋषब्ब कहायौ ॥

आगे सुनौ सोइ बात गुनौ, जुगल्या मन इच्छा से द्वैत में आयौ।
छींक जो नाक में स्वाँस करै, सो मरै जो अकास को तेज नसायौ।
जब नासिका स्वाँस में बास भयौ, सो कह्यौ मन इच्छा के पुत्र बनायौ।
मन इच्छा मिलि कुल भास भई, सो गुन इंद्री कुल प्रकृति कहायौ।
ता को बैराट कहैं भगवान, चौथा जम कुलकर बास बसायौ।
काल कौ बृच्छ सरीर कह्यौ, सो कामना काम जो धेनु सुनायौ।
आपने आप कियो जग थाप, सो मन निरगुन नौकार बतायौ।
जगत भुलाइ जो धर्म चलाइ, सो टेक बँधे चारौ गत्ति में आयौ।
जगत जहान को भर्म दियौ, सोइ कर्म बताइ जो आपहु आयौ।
येही बिधि जगत कौ नास कियो, पुनि आपनी राह कौ भेद न पायौ।
इंद्री बस कीन्ह ऋषब देव चीन्ह, सो टाटक गुन में ध्यान लगायौ।
सुनि नासिका ध्यान कियौ जो प्रमान, सो जोग अरंभ से आतमपायौ।
येहि कार के लार गुंकार भयौ, त्रिकुटी मध बीच अवाज सो आयौ।
येहि तत्त में मन जो लाग रहौ, सो अँवले प्रमानैं अंड कहायौ।
अंड के बीच से जीव सही, सो केहि बिधि मुक्ति की बात को गायौ।
मुक्ति भई भौ खानि मई, पुनि मुक्ति को भोग के जीव कहायौ।
येहि बिधि तोलि कहै तुलसी, सो आगे कौ भेद उनहुँ नहिं पायौ।

॥ सवैया ४ ॥

स्रावग ख्यात कहौं जो बिख्यात, सो आदि अनादि की बात सुनाऊँ।
जुगल्या जोइ धर्म न कुलकर कर्म, ऋषब्ब न नभ्भ मुरादेबी नाऊँ।
पानी न पवन जमीं नहिं भवन, सो अगिनि अकास न तत्त न ठाऊँ।
चंदा न सूर न आतम मूर, नहीं मन क्रूर जा को भेद बताऊँ।
जब पिंड न अंड नहीं ब्रह्मंड, सो कहे नवखंड बने न बिसाऊँ।
जबै सतपुरुष रहे सुख धाम, सो वा में बसै सतलोक कहायौ।
ता ने कियो सब ठाट बैराट, सो सोला निरबान को ता ने बनायौ।
सोला में एक को दीन्ह निकार, सोई निराकार ने जगत भुलायौ।

पुरुष के अंस से जोति भई, सो वही निराकार की कहियै लुगाई।
ता के पुत्र भये पुनि तीन, सो ब्रह्मा बिस्नु महेस कहाई।
कुंभ निरबान के अंग से जान, लिये पाँचौ तत्त बैराट बनाई।
काल निरबान जो ठाट कियौ, सो बैराट में जोति और काल समाई।
ता कौ कहै भगवान अज्ञान, सो जाही ने जीव चराचर खाई।
सो ताही को पूजि चलै नर चालि, सो काल निरबान ने जाल बिछाई।
अंड के पार कह्यो नहिं सार, सो जार पसार रहे गति माईं।
मुक्ति बताय दई सो कही, बड़े भाग भये कहि भाखि सुनाई।
औरहु फंद कहौं दुख दंद, सो अंधेइ जीव को मुक्ति बताई।
मुक्ति भये जग जीव रहे, बहु पंचम काल में दीन्ह उड़ाई।
ये सब काल निरबान की जाल, सो जीव को डालि कै काल चबाई।
सास्तर घान किये जो पुरान, सो धर्म की टेक में जीव बुड़ाई।
तुलसी बिधि बात कहौं जो घनी, सो धनी को भुलाइ भ्रमाइ छिपाई।

॥ सवैया ५ ॥

तुलसी नर जीव निरबान कहूँ, पति पार पिया घर आदि लखाऊँ।
थिर थोव सुरति से तत्त लखै, सो पकै नभ नाल कँवल कै ठाऊँ।
तेहि के मद्ध मिलै दल द्वार, सो पार चढ़ै दल आठ में आई।
जहँ जोति को बास अकास के पास, सो तत्त के पार से सार दिखाई।
पुनि स्त्रुति सैल से खेल चढ़ै, नव लाख कँवल के दल के माईं।
ता में लखै रबि चंद की संध, सो तारा अनेक अकास सुहाई।
पुनि ता के परे दल सहस कँवल, सो जल में जानि निरबान के ठाईं।
ता के परे जल कोर के धोर, सो अविगति काल ने जाल बिछाई।
ता पै फटिक सिला पै मिला, नभ स्याम को बास बसै येहि माईं।
आगे चली सुनि साखि अली, सो आतम ताल के तट में आई।
ता के परे दल दोइ कँवल, सो सुन्न प्रमातम बास कराई।
ता के परे सत सब्द का बास, सो चढ़ी सत सूरति सब्द में आई।
ता के परे दल चारि कँवल, सो साहिब सत्त पुरुष कहलाई।

ता के आगे की गैल की सैल कहौं, खिरकी बिन द्वार में पार है भाई ।
जहाँ निःअच्छर नाम के पार, सो सार अनाम का धाम न ठाँई ।
सूरति सैन की चैन कहौं, पल माहिं पिया पद आवै न जाई ।
सुन जोग न ज्ञान बैराग नहीं, तप संजम ध्यान की कौन चलाई ।
सूरति सैल करै असमान, सो फोड़ निसान को पार चढ़ाई ।
जो कहौं मत संत कौ अंत नहीं, सो वही घर संत बसैं नित जाई ।
जहँ काल निरबान की गम्म नहीं, तहँ केवली काल परे मुख जाई ।
कोइ सूरति राह चढ़ै सोइ संत, सो पंथ पिया तुलसी कौ कहाई ।
सोरठा—धर्मा धर्म विचार, जैन सार सगरी कह्यौ ।
कुलकर जुगल्या लार, नभ राजा और ऋषब सब ॥१॥
सार सवैया माइँ, गाइ भेद बिधि सब कही ।
जस जस जैन जनाइ, जो उत्पति सुनि सब भई ॥ २ ॥
सास्तर संध बिचार, बिधि पुरान मत देखि कै ।
धर्म जैन जस कार, पुनि अगार तुलसी कही ॥ ३ ॥

॥ उत्तर धर्मा । चौपाई ॥

धर्मा सुनि मन बात बिचारी । तुलसी कही जैन से न्यारी ॥
संत मता है अगम अपारा । स्त्रावग जैन धर्म से न्यारा ॥
हमने जुगल्या प्रथम बताया । ता के परे भेद नहिं पाया ॥
और कुलकर नभ राइ बखाना । हम आगे का मर्म न जाना ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब । चौपाई ॥

जुगल्या प्रथमहिं कौन बनावा । कहौ उन तन कैसे कर पावा ॥
तन बिन देंह कौन बिधि आवा । ता को पहिले कौन बनावा ॥
तन तत पाँच कहाँ से अइया । सो धर्मा बिधि बरनि सुनइया ॥
पाँच तत्त बिन कैसे कहिया । तत्त बिना कैसे बिधि भइया ॥
पिंड ब्रह्मंड धरती आकासा । केहि बिधि भया कहौ परकासा ॥
पाँच तत्त जब कहँ से आये । कौन जुगल्या जबै बनाये ॥
कर्म धर्म कछु हते न भाई । तब ये जीव कहाँ से आई ॥

सो घर हम से भाखि सुनावै । तब तुलसी के मन में आवै ॥
पद निरबान कहौ तेहि भाई । ता की बिधि कहौ कौन बनाई ॥
या की बिधी कहो समझाई । पद निरबान कहाँ से आई ॥
नहिं निरबान हता जब अंडा । तब को हता परे ब्रह्मंडा ॥
सोरठा--तुलसी मानै जान, या के आगे भिनि कहौ ।
हता नहीं निरबान, सो बिधि बरनि सुनाइये ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी धर्मा सुनु बाता । आगे कहौं बिधी बिख्याता ॥
छींक होत उपजे सुत नारी । कन्या पुत्र कहौ बिधि सारी ॥
कहँ से आये कहाँ पुनि गइया । इनकी रचना केहि बिधि भइया ।
सोरठा--कहो धर्मा समझाइ, या के आगे को हता ।
उन तन कौन बनाइ, भाखौ या की आदि सब ॥

॥ चौपाई ॥

और आगे बिधि पूछौं भाई । पूजा तुम ने भाखि सुनाई ॥
अष्टक जल चंदन तुम कहिया । और नैवेद्य पुष्प बिधि लइया ॥
केवली केवल की कही साखी । कहो का की पूजन उन भाखी ॥
तब केवली प्रतच्छ रहाई । मूरति बिधि जब हती न भाई ॥
उन पूजा कहो किन की कहिया । मूरति खोज तबै नहिं रहिया ॥
तब पूजा कहो केहि की भाखी । या को भेद बतावो साखी ॥
नायक[1] मूल बंदना कीन्हा । तुम पाहन पूजा कस लीन्हा ॥
उन कछु और भेद कहि भाखी । सो तुम्हरी सूझा नहिं आँखी ॥
कही घर ध्यान देख उन चाखा । तुम पाहन पूजा कस राखा ॥
अपने घर का भेद न जानी । औरन से कहौ ज्ञान बखानी ॥
सोरठा--धर्मा कहो बखान, पाहन पूजा कस करौ ।
नायक[1] मूल बिधान, ता की पूजा बिधि कहौं ॥

॥ चौपाई ॥

तप संजम उपवास बताई । जो त्यागै सो पावै भाई ॥

(१) मु॰ दे॰ प्र॰ की पुस्तक में "घाइ के" है ।

तप कर राज मिलै पुनि जाई। राज भोग पुनि नर्क समाई ॥
कष्टै फल पावै पुनि भोगा। परै चारि गति उपजै सोगा ॥
इंद्री दवन उपास कराई। बार बार भौसागर आई ॥
इंद्री भोग करै पुनि सोई। अस बिधि इन्द्री संजम होई ॥
जीवन मुक्ति पलक में पावै। सो संजम हमरे मन भावै ॥
जीवत मुक्ति देखिये आँखी। ऐसी बिधि कोइ कहिये भाखी ॥
एक पहर में मुक्ति बतावै। सो सतगुरु मोरे मन भावै ॥
आदि और अंत पलक में पावै। सारा भेद नजर में आवै ॥
जब देखैं हम अपने नैना। तब मानैं सतगुरु के बैना ॥
कष्ट करै तप बन को जावै। मरे गये का खोज बतावै ॥
ऐसी झूठ बात नहिं मानैं। देखा परै सुनै जो कानैं ॥
दोहा--तुलसी धर्मा सों कही, कर्मा सुनियो बात।
दोइ मिलि भेद बतायऊ, कर्मा धर्मा साथ ॥

॥ चौपाई ॥

कर्मा धर्मा भेद बताई। ये बिधि तुम्हरे सास्तर गाई ॥
या से हम कछु भिनि दरसाई। ता का भेद कहौ समझाई ॥
तुम्हरे मत की पूछौं बाता। ता की प्रथम करौ बिख्याता ॥
ये बिधि भिन्न भाँति कहि भाखी। कर्मा कहौ याहि की साखी ॥
या की बिधी बिधी बतलावै। सो सब भेद भाव दरसावै ॥
हम जोइ पूछि पूछि बिधि बानी। सो सो सब सब कहौ बखानी ॥

॥ उत्तर धर्मा और कर्मा। चौपाई ॥

कर्मा धर्मा यौं कहि बोले। भेद हमार सबै तुम खोले ॥
सास्तर हमरे जो बिधि गाई। सो तुलसी तुम भाखि सुनाई ॥
या सों भिनि हम कहा बतावा। भिन्न भिन्न सब तुम दरसावा ॥
कर्मा धर्मा ये बिधि बोला। बुद्धि हमारि खाइ झकझोला ॥
तुलसी तुम तौ अगम बखाना। नहिं सास्तर नहिं जानै पुराना ॥
पुनि इक भर्म भाव दिल आई। स्वामी तुलसी भाखि सुनाई ॥

तुम तौ मुक्ति आज दरसावा । या कौ भर्म बहुत मोहिं आवा ॥
और सबै भाखी तुम खासी । पुनि इतनी मोरे नहिं भासी ॥
मुक्ति गती तुम आज बतावा । सो नहिं जैन मते में गावा ॥
चोथे काल मुक्ति बतलावै । पंचम काल जैन नहिं गावै ॥
स्वामी तुलसी यह बिधि कहिये । ता में मुक्ति आज बिधि पइये ॥
ऐसी कौन जो बिधी कराई । ता सों आज मुक्ति गति पाई ॥
जो जो तुमने भेद बखाना । सो तो हम सुपने नहिं जाना ॥
जो जो सास्तर कहै पुराना । सो तुम मुख से करी बखाना ॥
सो साँची सब मन में आई । चित में खूब खूब ठहराई ॥
तुम ने आगे भेद बखाना । हम पुनि परे कछु नहिं जाना ॥
ये तौ सत्त सत्त कहि भाखी । मुक्ति आज होइ कहिये साखी ॥
हम तुम्हरे चरनन बलिहारी । कहा धर्मा हम सरन तुम्हारी ॥
हम अजान कछु बूझि न बाता । तुम कही आदि अंत बिख्याता ॥
मुक्ति भाव मो को दरसावौ । मोरे दिल का भर्म नसावौ ॥
सोरठा--धर्मा अस बिधि बोल । स्वामी दीन दया करौ ।
मुक्ति बिधी गति खोल, भाखि अगम गम सब कहौ ॥

॥ उत्तर तुलसी साहेब ॥

सोरठा--तुलसी कहत बुझाइ, कर्मा धर्मा सब सुनौ ।
आगे कहौं लखाइ, मुक्ति बिधी दरसाइ कै ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन अगम सँदेसा । आदि अंत दरसाओं देसा ॥
प्रथम रहे इक पुरुष अनामा । चौथे पद के पार ठिकाना ॥
जब नहिं रहे गगन आकासा । चंदा सूरज नहिं परकासा ॥
धरती अगिन न पवन निवासा । पानी जगत रहे नहिं बासा ॥
पिंड ब्रह्मंड लोक नहिं होई । और अलोक बिधी नहिं सोई ॥
चौथा पद रचना नहिं ठानी । ता के आगे पुरुष अनामी ॥
तासु लहर सत साहिब भयेऊ । सत्त नाम संतन ने कहेऊ ॥

या की बिधी बिधी गति गाई। बिन सतसंग नहीं दरसाई ॥
होइ सतसंग कहौं सब लेखा। खुले नैन हिरदे से देखा ॥
तीनों लोक पार है चौथा। ता के परे अनामी सो था ॥
तासु लहर उपजा सत नामा। चौथे पद की रचना ठाना ॥
ता से भये सोला निरबाना। जिन में एक की करौं बखाना ॥
सोला निरगुन है निरबानी। निराकार जाही को जानी ॥
जोति निरंजन सोई कहाई। ता को संत काल गोहराई ॥
सास्तर नाम कहै निरबाना। सोई जीव को काल निदाना ॥
जा ने जग जमजाल पसारा। जगत थापना कीन्ह बिचारा ॥
दस औतार जाहि के चीन्हो। ब्रह्मा बिस्नु महेसा तीनो ॥
जिन ने भाखा बेद बिचारा। जग में फैला काल पसारा ॥
पूजा पत्री नेम अचारा। देवल पूजा बिधी सँवारा ॥
संजम और उपवास बतावा। ता में सकल जीव उरझावा ॥
ये निरबान काम अस कीन्हा। मुक्ति राह का भेद न दीन्हा ॥
मुक्ति काल चौथे बतलाई। पचम काल जो दीन्ह छिपाई ॥
सास्तर अस पुनि कीन्ह पुराना। धर्म चलाइ जीव उरझाना ॥
ये सब भेद कहा हम जानी। यह बिधि जैन धर्म निरबानी ॥
सोई काल सब जाल बिछाई। सत्त पुरुष की राह न पाई ॥
सत्त पुरुष का भेद नियारा। जहँवाँ संत करैं दरबारा ॥
संत सरन जो प्रानी जावै। ता को संत राह बतलावै ॥
धर्मी कर्मी चकृत भयेऊ। ये तो अगम गाइ गति कहेऊ ॥
बिन संतसंगति पावै नाहीं। तुलसी कहै सबै गोहराई ॥

सोरठा–तुलसी तत्त बिचार, संत भेद न्यारा कहौं।
सो पहुँचै वहि द्वार, अगम सार तेहि लखि परै ॥ १ ॥
मुक्ति कहौं निरबार, संत चरन लागी रहै।
फिरै संत की लार, करै संत निरबार जेहि ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

संत सुरति से चढ़ैं अकासा । गगन फोड़ि वो करैं निवासा ॥
पाँच तत्त का वहाँ न बासा । चंद सूर जल पवन न स्वासा ॥
पार परे सत पुरुष अकेला । संत सुरति नित करती सैला ॥
जो कोइ दीन लीन होइ आवै । ता को सतगुरु राह बतावै ॥
दोहा–मुक्ति कहौं समझाइ, संत चरन डोलत फिरै ।
सो आदरैं न ताइ, पाइ लगन लागी रहै ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन मुक्ति बखाना । धर्मा कर्मा सुनियौ काना ॥
मुक्ति संत की निस दिन दासी । परी रहै चरनन के पासी ॥
संत जिवत दरसावैं जाई । सतसँग करै बहुत लौ लाई ॥
तुम कहौ पंचम काल न पावै । चौथे काल मुक्ति को जावै ॥
अब तुम सुनियौ चित्त लगाई । तुम्हरे सास्तर संध लखाई ॥
महाबीर तीथंकर कहिया । बरस अठारासै तेहि भइया ॥
जेहि तुम कहौ मुक्ति को गयऊ । मुक्ति पाइ तीथंकर भयऊ ॥
जेहि तुम कहौ मुक्ति गति गाई । पंचम काल मुक्ति कस पाई ॥
तुम कहौ आज मुक्ति नहिं जाई । तौ उनने कहो कहँ से पाई ॥
सो उन को तीथंकर कहिया । पंचम काल मुक्ति कस भइया ॥
या की बिधि मन माहीं पेखो । सास्तर संध जाइ कै देखो ॥
अपनी भूल न बूझौ भाई । मुक्ति भई सो कहौ सुनाई ॥
आज मुक्ति ततकालहि पावै । संत चरन में जो लौ लावै ॥

॥ शरण में आना कर्मा और धर्मा का ॥

॥ छन्द ॥

तुलसी यह भाखा सुनि सब साखा, कर्मा धर्मा दीन भये ।
इन कही बुझाई सब बिधि गाई, भिन्न भिन्न दरसाइ दये ॥१॥
हमरा मत भाखा दीन्ही साखा, सास्तर बिधि बिधि साखि दई ।
हमरे मन मानी बहु बिधि जानी, सत्त सत्त सब तत्त कही ॥२॥

॥ चौपाई ॥

झूठ जंजाला सब बिधि काला, हम अपने मन जानि लई।
तुलसी तुम स्वामी सत्त बखानी, धर्मा कर्मा चरन लई ॥३॥
चरनन लिपटाने तुम को जाने, दीन जानि अब सरन लई।
स्वामी मति बूझा आँखी सूझा, पूजा दूजा दूर भई ॥४॥
तुलसी प्रतिपाला होउ दयाला, करो निहाला सरन लई।
प्रभु दाया कीजे सरनै लीजे, दीजे चरन मति नाहिं बही ॥५॥

सोरठा--तुलसी देखि बिहाल, तुरत निहाल ता पर भये।
सुरति सैल बतलाइ, तब जिव की संसय गई ॥१॥
धर्मा कर्मा जाइ, तुरत सीस चरनन धरे।
लीन्ही अज्ञा पाइ, उठे धाइ घर को चले ॥२॥

करिया नामी जैन स्त्री का तुलसी साहिब के दर्शन को आना और शरण लेना

॥ चौपाई ॥

धर्मा कर्मा मारग जाई। कासी नगर लौटि कै आई ॥
अपना अपना मारग लीन्हा। अपने भवन गवन जिन कीन्हा ॥
कर्मा घर इक नारि सयानी। पूजे साध महातम जानी ॥
जैन धर्म में बहुत मलीना। सुनि कर बात कान उन दीन्हा ॥
भोर भये देखौं कब चरना। दीन होइ जाओं उन सरना ॥
करिया नाम नारि कर होई। कर्मा कही दीन जिन रोई ॥
बिरह माहिं जिन राति बिताई। भोर भये उठि कै चल धाई ॥
सखि सोइ साथ जात को लीन्ही। पाँच नारि मिलि चलीं अधीनी ॥
पूछत पूछत मारग जाई। पाँच पचीस मिले मग माईं ॥
कोइ न सुनै बात दै काना। पूछै तुलसी केर ठिकाना ॥
पूछत पूछत हिरदे भेटी। जिन पुनि जाइ बताई कूटी ॥
कुटी आइ चरनन उन लीन्हा। दीन डंडवत बिनती कीन्हा ॥
मैं तो सरन तुम्हारे स्वामी। चरन देहु मोहिं अंतरजामी ॥

दोहा--नारि दीन तुलसी लखी, बोले बचन रसाल ।
हीन दीन जेहि देखि कर, दरसन दिये बिसाल ॥

॥ चौपाई ॥

करिया देखि तुलसी अस कहिया । कहो कहाँ सों आवन भइया ॥
पुरुष नाम तेहि सखी बताई । कर्मा नारि दरस को आई ॥
तुलसी दीन हीन जेहि जानी । करिया पूछ बचन मन मानी ॥
हाथ जोरि करिया कहै स्वामी । जग संसार भाव भ्रम खानी ॥
जीव गती की राह बतावौ । जग में आइ महा दुख पायौ ॥
तुलसी कहै जगत सुख भारी । काहे उदास भई तुम नारी ॥
कन्या पुत्र सकल परिवारा । सुख संपति भोगो तुम सारा ॥
करिया कहै इक अरज हमारी । या जग सँग संसार दुखारी ॥
तन बिनसै जैसे जल ओरा[1] । जग जम जाल करत है जोरा ॥
तन सराय दिन चारि बसेरा । या में कोऊ न काहू केरा ॥
धन संपति दिन चारि बिलासा । पुनि तन छूटि भूठ सब आसा ॥
ऐसे या जग का ब्योहारा । जनम जात जूवा जस हारा ॥
जैसे रंग पतंग उड़ाई । हवा जात तन जैसे जाई ॥
ये तन मन दिन चारि निवासा । छूटै तन जमपुर में बासा ॥
भाई बंद सकल परिवारा । त्रिया पुत्र सब भूठ पसारा ॥
या के सँग बूड़त जग जाना । छूटै तन फिर नर्क समाना ॥
ये जग संग रंग भँग जाना । आदि अंत नहिं मिलै ठिकाना ॥
या से साध संग सुखकारी । ऐसे ज्वाब दीन्ह तेहि नारी ॥

दोहा--करिया कहै स्वामी सुनौ, भूठा जगत पसार ।
लोभ मोह मद फँसि रहे, क्यों कर उतरै पार ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी करिया बहुत भुलाई । ता के मन में एक न आई ॥
पहिले जगत भाव दरसावा । ता के मनहि भूठ सब भावा ॥

(१) ओला ।

ऐसी नारि पोढ़ जब जानी । मन तेहि केर मरम पहिचानी ॥
बुद्धि सुद्ध सीतल चित गाता । हिन कर बचन प्रीति की बाता ॥
बिरह भाव बिधि हिरदे भीनी । ऐसी नारि पार रस चीन्ही ॥
ऐसा तोल बोल जब जाना । तब तेहि सगरा भेद बखाना ॥
गुप्त भेद सत सत दरसावा । ता कर हिया उमँगि अस आवा ॥
दीन्ही सुरति संध तेहि हाथा । आज्ञा ले पुनि नायो माथा ॥
संग सखी सब अचरज लाईं । कौन बस्तु येहि कान सुनाई ॥
घट का चार बसेरा पाई । पुनि सिर नाय पाँय घर आई ॥
कर्मा नारि पूछ बिख्याता । कहो कहाँ गइ कौने साथा ॥
तब करिया बरतंत सुनावा । तुलसी बरनन बिधी बतावा ॥
सुनि कर्मा मन भयो अनंदा । अब तोर छूट काल कर फंदा ॥
करिया संग सखी इक जैनी । ता कर नाम रहै पुनि सैनी ॥
तुलसी दरस गई दरबारा । पुरुष भेद सुनि पायो सारा ॥
सुना पुरुष तेहि भर्म समाना । नारि गई घर भया बिराना ॥
पुरुष नाम है कालू जेही । नग्र लोग कहि बरजत तेही ॥
कालू नारि धाइ धमकाई । ये फकीर ढिंग जान न पाई ॥
कालू कहै मोर दुखदाई । जक्त लोग थूकै मुख माई ॥
मोरी पाग आब[1] तैं खोवा । अस कहि धाइ धाइ कै रोवा ॥
पाड़ पड़ोसन अस समझावै । अब यह कहूँ जान नहिं पावै ॥
सब घर टेरि टेरि कह दीन्हा । घर बाहर इन जान न दीन्हा ॥
निकर सकै नहिं बाहर जाई । घर म बैठि हिये दुख पाई ॥
तुलसी ज्ञान तेहि हिये समावा । कर तुलसी तुलसी गोहरावा ॥
पुनि तेहि नारि कार एक कीन्हा । हेमा कहार बुलाइ उन लीन्हा ॥
तेहि सन कहि तुलसी बिधि सारी । दरसन करौं स्वामी दरबारी ॥
वा को दिये टका दुइ चारी । गये तुलसी जहँ कुटी सँवारी ॥

---

(१) आबरू ।

हिर्दे अहीर मिल्या तेही बाटी । हेसा ताहि भेंटि चढ़ि घाटी ॥
जिन सैनी बरतंत सुनाया । हिरदे चल ता के घर आया ॥
सैनी हिरदे से लौ लाई । स्वामी कुटी मोहिं देव बताई ॥
ता के जाइ मैं परसौं पाँई । दरसन मिलै और नहिं चाही ॥
सोरठा--हिरदे कहै सुन बात, सैनी साबित धीर धर ।
ये सब जगत लबार, या से बच करि चालिये ॥
दोहा--सैनी मन धीरज नहीं, बिरह बिथा की लार ।
सार भेद मो से कहौ, तब दिल समझि सिहार ॥ १ ॥
हिरदे कहै सैनी सुनौ, सूरति देउँ लखाइ ।
लै लगाइ ऊपर चढ़ौ, निज घर अपना पाइ ॥ २ ॥
॥ चौपाई ॥
हिरदे तेहि को सुरति लखाई । पुनि उठि कै अपने घर आई ॥
तुलसी से सब कथा सुनाई । सुनि तुलसी कै मन सुख पाई ॥
एक दिवस ऐसी बिधि भयऊ । सैनी करिया के ढिंग गयऊ ॥
करिया ने अस बचन उचारा । तुलसी पै चलिहैं दोउ लारा ॥
प्रात राति चलिहैं दोउ संगा । तैं अपना चित करौ न भंगा ॥
समझ बूझ अपने घर आई । चलने की बिधि मति ठहराई ॥
निस पुनि बीत गई अधराती । पुनि दोउ उठे चाली संग साथी ॥
पहुँचीं तहाँ कुटी निज साजा । तुलसी तुलसी करै अवाजा ॥
सोरठा--तुलसी पूछै बात, अर्ध राति कस आइया ।
करिया कहि बिख्यात, सैनी के सँग में चली ॥
॥ चौपाई ॥
तुलसी कहै सुनौ तुम बाता । कस आई तुम आधी राता ॥
करिया सैनी कहै कर जोरा । तुम्हरे दरसन को मन दौरा ॥
अब इक अरज सुनो हो स्वामी । तुम मोहिं दीन्ह सुरति सहदानी ॥
सुरति सैल हम निस दिन पाला । सो तुम सुनियौ दीनदयाला ॥
दृग द्वारे दीसै इक खिरकी । ता में होइ सुरति मोरि सरकी ॥

चढ़ि गइ चटक जाइ वहि द्वारा । फटिक सिला के होगइ पारा ॥
वहँ जो कौतुक देखा जाई । सो स्वामी सब भाखि सुनाई ॥
तहँवाँ लोक अलोक समाना । ता का कहिये कौन बिधाना ॥
ता के परे अधर रस देखा । नहिं तहँ लोक अलोक अलेखा ॥
जो निज नैन निरखि कै जानी । मुक्ती भरै वहाँ कौ पानी ॥
अस अस कहत रात गइ बीती । मन परतीत काल सों जीती ॥
भोर भयो जब आज्ञा लीन्ही । सूरति उठी गवन तब कीन्ही ॥
करिया सैनी चरन पखारी । आज्ञा लेकर भवन सिधारी ॥
सोरठा--गई भवन के माहिं, तुलसी सब्द निरखत चलै ।
उठै घोर घर माहिं, ता में निस दिन बसि रहै ॥

॥ चौपाई ॥

करिया सैनी घरहि सिधाईं । अपने अपने मंदिर आईं ॥
निस दिन उठै गगन घनघोरा । ता में अटकि रहै मन मोरा ॥
कर्मा धर्मा रहे पुनि दोई । भोर भये उठि पहुँचे सोई ॥
तीजे सेख तकी उठि धाये । तीनों मिलि तुलसी पै आये ॥
बैठे भेद भाव सब चीन्हा । तीनों बात आपनी कीन्हा ॥
धर्मा कर्मा भेद बतावा । निज निरबान भेद हम पावा ॥
सो निरबान पार इक द्वारा । निरखा फटिक सिला के पारा ॥
जहँवाँ देखा पुरुष नियारा । ता की सोभा अगम अपारा ॥
ता का भेद निरबान न पावै । नैन सो देखि नजर में आवै ॥
कर्मा धर्मा बोले बोली । गुप्त राखि परगट नहिं खोली ॥
दोउ मिलि भाखी अस अस बाता । तुलसी समझि लीन्ह बिख्याता ॥
सेख तकी उठि कै तब बोला । अपनी बिधी बात सब खोला ॥
खुदावंद इक अरज हमारी । मैं मुरीद मुरसिद को लारी ॥
फजल नजर मेरे पर कीजे । मेरी अरज चित्त में दीजे ॥
बंदे ने बकसीसी पाई । सो हजरत में कहौं सुनाई ॥

एक रोज फजल अस कीदा । रूह चढ़ गई अगम के दीदा ॥
चौथा तबक देख वहँ जाजा । जहाँ नबी की उठै अवाजा ॥
रूह दौड़ पट अबरा तोड़ा । चौथा तबक रूह से फोड़ा ॥
लै लगि जाइ लाइ के माईं । साहिब रब्ब बसै तेहि ठाँईं ॥
चूँ बेचूँ बेज्वाबी साँईं । वो साहिब दिल अंदर पाई ॥
खुद खुदाइ वो मालिक प्यारा । मुहम्मद खुदा दोऊ से न्यारा ॥
अल्ला नबी रसूल न जाना । चौथा तबक से अधर ठिकाना ॥
सोरठा-तकी तका निज खेल, मुरसिद तुलसी सों कहै ।
यहि बिधि कीन्ही सैल, सो अदबुद अंदर लखा ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तकी सुन मुरसिद प्यारे । मिहर फजल से जाइ निहारे ॥
हर दम रूह लहर लहराई । बिरह भाव हर वक्त सताई ॥
रूह लिपट लिपट तेहि बूझै । साम सुबह कुछ और न सूझै ॥
दम दम बिरह लहर अकुलानी । जेहि बिधि मीन भुलानी पानी ॥
अस्त रवी जस कँवल बँधाना । चंदा अस्त कमोदनि जाना ॥
चंदा अस्त बीत जब जाई । तब वा की कहँ बिरह समाई ॥
ये जहान खिलकत है अंधा । बिरह भाव बूझै कोइ बंदा ॥
सोरठा--कमोदनी बिलखाइ, चंद अस्त आसिक गये ।
बिलखै बिरह बेहाल, चंद देखि निस हरखही ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी दिल बिरह समानी । आवै न बात नैन बहै पानी ॥
दम दम बिकल खुदाइ पुकारी । तन मन सुध बुध सकल बिसारी ॥

॥ शेर ॥

बहोशिये आदम से, वह ख्याल जुदा है ।
बाहर जो है मुहम्मद, अंतर में खुदा है ॥

॥ सदा[1] ॥

ऐ बेहोश प्यारे तैं यार बिसारा ।
खिलकत का खेल सबै झूठ पसारा ॥ १ ॥

---

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक में यह सदा नहीं है ।

इक पल में फ़ना होत देख जक्त असारा।
इन नैनों से देख तेरा कौन है यारा ॥ २ ॥
अपनी तू आदि देख कहँ से आया।
उस यार को बिसार के लौ कहँ को लाया ॥ ३ ॥
हम ने दिल बीच यार अंदर पाया।
उस बिरहिन के तन में रोम रोम में छाया ॥ ४ ॥
वो मरती बेहाल पिया पिया पुकारै।
तन मन में नहिं होश नहीं बदन निहारै ॥ ५ ॥
ऐसी बेहोश सहै सूल कटारी।
जैसे तन बीच सेल तेग़ा मारी ॥ ६ ॥
ऐसी बिरहिन के बीच बिरह सँवारी।
सोई बिरहिन तो लगै पिउ को प्यारी ॥ ७ ॥
जा का यह हाल सोई अधर सिधारी।
तुलसी सो नारि भई जग से न्यारी ॥ ८ ॥

॥ गजल १ ॥

अरे ऐ तकी तकते रहो, मुर्शिद ने दस्त पंजा दिया।
बेहोश बिरह बिरहिन लिया, पिय पीर की बातैं कहो ॥ १ ॥
अरे ऐ शिताबी आ पिया, बिरहा सरप मुझको डसा।
निसरै न चंदा जाय के, सूझा नहीं नैनन किया ॥ २ ॥
चंदा बेदरदी तैं हुआ, दरदी कमोदिन क्या किया।
हर दम बिरह में हूँ बिकल, चंदा बिना दम दम मुआ ॥ ३ ॥
बिरहिन पिया बेहोश है, तन मन बदन सूझै नहीं।
बूझै चशम बिन क्या कहै, दिल हेर रहम-दिल दोस्त है ॥ ४ ॥
हर वक़ हाजिर मैं खड़ी, नैना नजर नदियाँ बहीं।
याँ कोई मेरा महरम नहीं, अब तो चरन में आ पड़ी ॥ ५ ॥
आशिक इशक हर दम लहर, दिल से जुदा दरदी हुआ।
कहौं क्या जो सिर खटके जुवा, हर दम हिये बिच में लहर ॥ ६ ॥

इस इश्क में गाफिल फिरौं, कहुँ बस नहीं बेहोश हौं।
दम की खबर कुछ ना रहै, अब तो दिलै बिच में मरौं ॥ ७ ॥
पल पल इसम दिल यों किया, ये तलब के ताईं चहौं।
तुलसी तकी खुब समझ के, तब यार का मारग लिया ॥ ८ ॥

॥ गजल २ ॥

अरे ऐ तकी दीदार दिल, दिल दिल दिलों बिच तिल में दिल।
नैना नजर से आन मिल, खिल खिल खुशी दिल कर मियाँ ॥१॥
चल गैल गेंद तक आज पिल, ऐसे हिये बिच आन हिल।
झोका न दे दर्दी जलल, अरे हाल मिल फिर ना निकल ॥२॥
दिल दूर से दरदी फजल, इस राह से पहुँचै मँजल।
अरे बूझ ले सूझै अदल, उसकी मेहर दिल में शकल ॥३॥
मन मार हो दिल में कुसल, प्यारा अधर आवै अजल[1]।
ये वक्त फिर आवै न कल, पानी बिना पावै न थल ॥४॥
देखो नजर कोइ ना अचल, भल भल भला सोई सथल।
तुलसी तकी मुर्शिद से मिल, कर दोस्ती फिर बेखलल ॥५॥

॥ गजल ३ ॥

तिल में नकल न्यारी अकल, मुर्शिद शकल रूह राह चल।
चल आज मिल पावै असल, पी प्यार मिल सोवै अचल ॥१॥
नल राह रल गुस्ले कँवल, पावै तु फल होवै सुफल।
अरे ऐ मुसाफिर जल्द चल, होगा वहाँ तुझ पर फजल ॥२॥
अज आज अल कूकै कँवल, स्वाँसा निकल हर दम खलल।
झल झिल झिलल आमिल अमल, पल पल परे पर पाखिलल ॥३॥
तकी जो तुल तुलसी अतुल, देखो जलल ये जहान फल।
कुछ ना असल हम हैं अबल, आखिर निकल न्यारा हुआ ॥४॥

॥ रेखता[2] ॥

दिल दिल हिया हुलसै पिया, दीदा लहर हर दम मेहर।
पाऊँ खुशी आशिक रहूँ, दिल से रहम-दिल यारिया ॥१॥

(१) अजल (अरबी शब्द) = तुर्त। (२) यह रेखता, मु० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है।

मेरे मियाँ मैं प्यारिया, तन मन बदन सब वारिया।
बदनाम सुद्ध बिसारिया, रहुँ लै लपट नैनों जिया ॥ २ ॥
माँगू मेहर कीजे किया, इस इश्क से आशिक लिया।
लागी रहूँ हर दम हिया, मानो मनो सब कुछ दिया ॥ ३ ॥
पाऊँ मेहर महलन रहूँ, आऊँ अटारी कर कहूँ।
बिजली अँध्यारी सम चहूँ, उमगै कड़क बदरी सहूँ ॥ ४ ॥
चुनरी रँगीली रँग चुवा, पानी घटा हर दम धुआँ।
कोइ ना अकेली लार लै, हर दम मियाँ मनुआँ मुआ ॥ ५ ॥
खिलकत खलक थूकै सुवा, तन मन बदन हारी जुवा।
पौढ़ी पलँग हर वक्त सुवा, जागूँ मेहर माँगूँ दुआ ॥ ६ ॥
अरे ये अधर आदर करौ, ये जक्त की जाली जरौ।
भावै नहीं जेवर जहर, तुलसी तकी खिलकत मरौ ॥ ७ ॥

दोहा[1] --तुलसी तकी निहार, निकर न्यार पारै हुआ।
खुद खुदाइ की लार, जग जहान सगरा सुआ ॥

॥ छंद[1] ॥

तुलसी तक पाया अगम लखाया, गिरा गजल सोइ भाखि कही ॥
सूरति चढ़ि जागी अगम को भागी, लखा अलख की आदि भई ॥
देखा सब न्यारा अगम पसारा, मुरसिद ने जद राह दई ॥
तकी तलब बुझानी प्यारा जानी, खुद खुदाइ की राह लई ॥
मुरसिद मत पाया दस्तन आया, फजल मेहर की मौज भई ॥
रूह चढ़ी असमाना फोड़ निसाना, देखि आदि की आदि कही ॥

दोहा—तकी तलब मुरसिद भरी, तुलसी पीर हमार।
दस्त फजल अपना करौ, रहम रब्ब दरबार ॥ १ ॥
मुरसिद फजल गुलाम पर, करौ रहम-दिल प्यार।
अबै हुकम मुझ पर करौ, अज्ञा होइ दीदार ॥ २ ॥

---

(१) यह दोहा और छंद मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं हैं।

॥ चौपाई ॥

तुलसी हुकम तकी को दीन्हा । पुनि चलि कै मारग उन लीन्हा ॥
मारग चलि पुनि कासी आये । अपने घर को आन सिधाये ॥

दोहा—कर्मा धर्मा अरु तकी, कारिया सैनी नार ।
बस्तु पाइ मारग गहे, दीन्हा पंथ लखाइ ॥

सम्बाद माना, नैनू, स्यामा, पंडितों के साथ ।

दोहा--नैनू पंडित और सब, स्यामा सब मिलि झार ।
कहै भेद तुलसी सुनौ, तुम कीन्हा झूठ पसार ॥

सोरठा--नैनू गुसा गुहार, हार हिये मन तमक से ।
बोला बचन बिकार, तुलसी तुम मिथ्या कही ॥ १ ॥
स्यामा सोच बिचार, अनल झार हिये उठत जिमि ।
क्रोध कुबुधि की लार, लटी लटी कर कर कही ॥ २ ॥
माना मान अपूर, भूर भूर बोलैं सबै ।
बुधि बल मत का कूर, चूर अंग अज्ञान में ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू स्यामा यों कर बोले । नाक फुलाइ बचन अस खोले ॥
नैन सुरख और मूछैं मोड़ी । भुजा चढ़ी पुनि भौंहें टेढ़ी ॥
मुख सों कड़कि स्वाल अस डारा । तुलसी तुम से करिहौं रारा ॥
तुलसी कहौ आदि बिख्याता । नैनू पूछै सब बिधि बाता ॥
बेद पुरान आदि गति गावौ । और ब्रह्मा की आदि बतावौ ॥
सिव स्वामी अरु बिस्नु बिचारा । कहौ आदि रचना बिस्तारा ॥
भये भगवान दसौ औतारा । और बैराट का कहौ पसारा ॥
ब्रह्मा कहौ कहाँ से अइया । उन रचना कौने बिधि करिया ॥
सातौ दीप और नौखंडा । केहि बिधि रचा सकल ब्रह्मंडा ॥
तब साधू तुम पूरे ज्ञानी । आदि अंत की करौ बखानी ॥
स्रावग तुरक मता दरसावा । ये गरीब को ज्वाब न आवा ॥

हम पंडित बिद्या बिधि आगर[1] । बेद बिधी से कहौ उजागर ॥
हम सँग जीति जाव गुरुज्ञानी । तुम्हरा साध मता तब जानी ॥
बिना पुरान ज्ञान कहँ पावा । बिन सास्तर कहौ कहँ से आवा ॥
बेद बिना काहू नहिं पावा । या के परे कोऊ नहिं गावा ॥
ब्यास मुनी जो पुरान बनाये । नारद सुकदेव को समझाये ॥
राम कृष्न बिधि भाख्यो भेवा । जोगी ऋषी मुनी सब देवा ॥
सब उठाइ अपना मत ठानै । बेद बिधी बिन हम नहिं मानैं ॥
सब पंडित मिलि टेकी टेका । बिना निसा नहिं मानै एका ॥
होहोकार सबन बहु कीन्हा । कासी माहिं रहन को दीन्हा ॥
कौन मते का साध कहावै । सब को झूठ झूठ बतलावै ॥
यह पुनि साध कहाँ से आवा । कौन गुरु यह ज्ञान पढ़ावा ॥
नैनू नैन गुसा भरि लाये । सरक सरक हमरे ढिंग आये ॥
कह तुलसी तुम कहौ जवाबा । अब कस मौन बैठि मोरे बाबा ॥

दोहा--नैनू पंडित तमक सों, कह तुलसी से बात ।
इक इक बिधि बतलाइ दे, नहिं होइ है उतपात ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

दोहा--कह तुलसी नैनू सुनौ, मोरी मनिहौ बात ।
पूछा सोई बताइहौं, जो चित बसै बिख्यात ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी ज्वाब धीर सों दीन्हा । सुनौ भेद भाखौं मैं चीन्हा ॥
भाखौं आदि साध गति न्यारी । नैनू बूझौ बुधि अनुसारी ॥
कह तुलसी सुन नैनू पाँडे । पंडित सुनौ सब चित माँडे ॥
कौन बेद की आदि बखानौं । पंडित कहौ सोई मैं मानौं ॥
बेद चारि ब्रह्मा निज कीन्हा । पंचम सुषम बेद को चीन्हा ॥
छठवाँ प्रसंगे बेद कहाई । वा की बिधी सुनौ हो भाई ॥

---

(१) श्रेष्ठ ।

चारि बेद जो गुप्त रहाई। ता में कागद लगै न स्याही ॥
ता को भेद बेद नहिं जानैं। ता के परे कहे को मानैं ॥
सोरठा--बेद दसौ बिधि गाई, का की पूछौ आदि तुम।
सो मैं देउँ बताइ, नैनू स्यामा भाखिये ॥

॥ चौपाई ॥

तब नैनू कुछ ज्वाब न दीन्हा। मौन रहे कुछ बोल न कीन्हा ॥
तुलसी दसौ बेद बिधि गाई। कौन बेद की आदि बताई ॥
और ब्रह्मा की आदि बखानी। ब्रह्मा अनेक भये उतपानी ॥
कइ उपजे कइ बिनसे भाई। कइ कइ परे कर्म भौ माई ॥
पूछौ जौन कहौं जेहि नामा। भाखौं सोइ मैं कहौं बिधाना ॥
सिव बिस्नू पुनि भये अनेका। नाम कहौ बरनन करौं जिनका ॥
और भगवान दसौ औतारा। जिनका कहौ कहौं निरबारा ॥
बहुत बहुत औतारी भइया। जेहि पूछौ तेहि की हम कहिया ॥
पुनि बैराट पूछिया ज्ञाना। भये बैराट अनेक बिधाना ॥
फूटै बनै बनै फिरि फूटै। ऐसे अनेक बार पुनि टूटै ॥
जैसे कुम्हरा घड़ा बनाई। फूटै घड़ा काम नहिं आई ॥
झूठा अस बैराट बनावा। ज्यौं बाजीगर आम लगावा ॥
आम लगाइ जगत दिखलावै। पुनि कौड़ी माँगन को आवै ॥
रूप बैराट अनेकन कहिया। पुनि पुनि नास सबन को भइया ॥
पुनि पुनि आवै पुनि पुनि जाई। ये सब हैं परलय के माईं ॥
जिन के भये दसौ औतारा। अंधा जग तेहि कहै करतारा ॥
कर्म बंध वे उपजे आई। पुनि पुनि उपजे पुनि पुनि जाई ॥
कइ बैराट नास है गइया। औतारी कैसे कर रहिया ॥
ता कौ नाम कहौ भगवाना। आये पुनि पुनि बहुरि नसाना ॥
नास पाल बिधि इन की होई। और बैराट नसे सब कोई ॥
ब्रह्मा नाभि कँवल से भाखौ। फिरि फिरि नास भयौ पुनि ता कौ ॥
ब्रह्मा बिस्नु की कहौं बुझाई। नसि बैराट येहू नसि जाई ॥

चारि खानि के जीव बिचारा । इन का कौन करै निरबारा ॥
मरिहै धरती पवन अकासा । पानी मरै अगिनि कौ नासा ॥
ऐसे सब बैराट नसाना । सो ब्रह्म का कौन ठिकाना ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित ॥

दोहा--नैनू कहै तुलसी सुनौ, सब बैराट नसाइ ।
भगवान रहै इक बृच्छ पै, जब जल बास रहाइ ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू कहै जल रहै निदाना । अछै बृच्छ पर श्रीभगवाना ॥

॥ बचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

तुम कहौ जल तत रहै निवासा । तौ बैराट कहाँ भयौ नासा ॥
जल के जीव जलहि में होई । जल तत जीव जगत रहा सोई ॥
रहै भगवान और कोइ नाहीं । तुम अस कहि बिधि भाखि सुनाई ॥
नौलख जोनि खानि जल माहीं । जल रहिया वे कैसे जाहीं ॥
पिरथी बिन जल कैसे रहिया । पंडित यह बिधि बरनि सुनइया ॥
अछै बृच्छ रहै जल जाना । ता पर सैन कीन्ह भगवाना ॥
या की बिधि बिधि कहौं बुझाई । पंडित सुनियौ चित्त लगाई ॥[1]

॥ प्रलय की सवैया १ ॥

बाम्हन बेद बताइ कहैं, भगवान महाप्रलय सैन कराई ॥
भये तत नास बैराट अकास, अछैबट बृच्छ सो पात के माईं ॥
आतस पिरथी जो पवन नहीं, तब थो न कछू जल जलहि बताई ॥
ये बिधि भाखि बिचारि कहैं, तौ कहौ थल बिन जल कैसे रहाई ॥
नीर रहै जल जीव सभी, सो पिरथी भये बिन नीर न भाई ॥
बैराट बिनास तो ब्रह्म की नास, तो बेद बिनास भयौ जल माईं ॥
कागद स्याही न कलम बची, तुलसी तब की बिधि कौन सुनाई ॥

॥ सवैया २ ॥

महा परलय जल बेद कहै, सुन भेद बिना सब झूठ कहानी ॥
पाँचहि तत्त बैराट नसौ, और ब्रह्म नसो नसी बेद की बानी ॥

(१) यह चौपाई मु० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है ।

नाद गये नस बेद बहे, जब कौन कही बिधि बात बखानी ॥
ज्ञान बिचार से बूझि कहौ, तब सूझि परै हिये आँखि निसानी ॥
नीर भयौ जल तत्त रह्यौ, पिरथी बिन तत्त रह्यौ कस पानी ॥
पिरथी भई जुग तत्त सही, पिरथी और नीर के तत्त में खानी ॥
जो कोइ जानि बयान करै, भगवान की नाक में स्वाँस समानी ॥
स्वाँस बसे तत तीन फँसे, सो अकास रहे बिन स्वाँस न बानी ॥
चारिहि तत्त रहे रस मन्न, तौ अगिनि कहौ बिधि कैसे नसानी ॥
पाँचोइ तत्त कौ ठाट रह्यौ, बैराट नसौ कहौ कैसे बखानी ॥
तुलसी तत तोल के बोल कहै, तिन की हिये आँखि से भाखौ बखानी ॥

॥ सवैया ३ ॥

बास बैराट भयौ तत नास, सो पाँच कौ बास न स्वाँस रह्यौ थो ।
आदि अकास कौ भास नसौ, पिरथी और पवन निवास नहीं थो ।
और अनल जल रह्यौ कछु नाहिं, यह बोल रह्यौ जाको बास कहाँ थो ।
तुलसी जब की बिधि बात कहौ, जब कागद स्याही न बेद रह्यौ थो ।

॥ उत्तर पंडित । सवैया ४ ॥

बाम्हन ज्वाब दियौ तुलसी, परलय जल और रहै कछु नाहीं ॥
यहि बिधि बेद बताइ कहै, सोइ स्वाँस में बेद भयो सो बताही ॥
सबही बैराट नसै कोइ नाहिं, जल बृच्छ भगवान सो पात के माहीं ॥
और कहैं कछु रहत नहीं, सोइ स्वाँस में बेद रहै बतलाहीं ॥
तुलसी सुनि कै मन मौन गही, सुन बोल बैराट में स्वाँस नसाही ॥

॥ सवैया ५ ॥

पवन रही जोइ प्रलय कही, ये तो बिधि बात मिलो नहिं भाई ॥
अकास और स्वाँस सब तत्त रहैं, सोइ मत्त येही बिधि बेद बताई ॥
नास भये कोइ नाहिं रहै, जब जोइ रह्यो जाके पार सुनाई ॥
पंडित तोल न बोल कही, तुलसी चुप बैठि न बात बताई ॥

॥ वचन तुलसी साहिब । सवैया ६ ॥

पंडित मौन कहै तुलसी, अब भाखि कहौं सुन भेद बताई ॥
नास अकास पवन पिरथी, जल नास अनल्ल न कोइ रहाई ॥

ब्रह्मा और बेद बैराट नसौ, सिव चंद न सूर न तारे तराई।
निरगुन नास निवास नहीं, सोइ सरगुन सृष्टि की कौन चलाई।
ये लखि भेद कहै तुलसी, पुनि परलय भइ ता की लेख लखाई।

॥ सवैया ७ ॥

आदि अनादि अगाधि बिधी सुन, याद करि लेक हौं महाप्रलय गाई।
प्रथम पवन को भास नस्यौ, पुनि नीर नस्यौ मिलि स्वाँस के माईं।
नीर औ स्वाँस में मन अगिनी, चलैं तीनों भास अकास में जाई।
चारिहि तत्त के मत्त मिलै, पुनि पिरथी नसी वोहि बास में आईं।
पाँचहि तत्त को नास भयौ, नसि आइ समाने अलख के माईं।
आदि अलख और जोति नसी, सो बसे अविगत्ति में जाइ जो भाई।
अविगति नास की बात कहौं, नसि जाइ के हंस में बास कराईं।
आतम हंस प्रमातम बन्स, सो ये दोउ नसि गये सुन्न के माईं।
सुन्न नसी और धुन्न नसी, सोइ जाइ लसे दोउ सब्द के माईं।
सब्द का नास कहौं पुनि बास, सो सत्तपुरुष में जाइ समाईं।
सत्तपुरुष को नास नहीं, सुन महा प्रलय बिधि ऐसी बताई।
कोटि प्रलय बिधि आदि अनादि, सो सत्तपुरुष पै एक न जाई।
ता के परे पद आदि अनाम, सो संत बसैं वोहि धाम के माईं।
तुलसी निज देखि कै बास बिधी, सोइ पास अनाम के संत समाईं।

॥ सवैया ८ ॥

बिस्व बैराट हता नहिं ठाट, सो ब्रह्म की बाट कौ घाट कहाँ थो।
जीव नहीं तब सीव नहीं, पति पीउ के प्यार में जीव बसो थो।
जहँ काल कराल की जाल नहीं, तब साह की कोठी में माल धरो थो।
पिंड ब्रह्मंड न अंड हतौ, तब जीव अजीव न खानि परो थो।
जब ब्रह्मा न बेद न खेद हतौ, तब आयौ अभेद न मारे मरो थो।
तोल कहै तुलसी निज कै, जब जक्त के जीव को सार कहाँ थो।

॥ सवैया ९ ॥

अंड ब्रह्मंड बैराट न पिंड, अखंड जो ब्रह्म की बाट बताऊँ।
जीव अजीव न ब्रह्म हतौ, जब जोइ हतौ ता कौ भेद सुनाऊँ।

वोहू नहीं कछु और कही, सुन और से भिन्न का भेद लखाऊँ।
आदि न अंत कहै सोइ संत, सो पंथ परे पर पार दिखाऊँ।
तुलसी तब की बिधि बात कहूँ, जब कोइ न थो जाके रूप न नाऊँ।

॥ सवैया १० ॥

अब सत्तहि सत्त कहौं मत मूल, नहीं अस्थूल न नाम कहायौ।
आदि अनादि की आदि कहौं, सो अगाध उपाध जो एक न गायौ।
आदि पुरुष निःनाम अनाम, सो ठाम न ठौर न धाम कहायौ।
तासं हिलोर भया इक सोर, सोर लहरि समुद्र की खाइ कहायौ।
खाइ का ब्यान कहौं सत नाम, सो धाम रहै सतलोक में आयौ।
नाम निअच्छर की लघुता, रँग ता से भये सोला ब्रह्म जनायौ।
तुलसी बिधि ब्रह्म की आदि कही, अब ब्रह्म भयौ जग जीव जो भायौ।

॥ सवैया ११ ॥

निरगुन सोला की साखि कहौं, सोइ बास बसै सत दीप के माईं।
निरगुन एक की नेक कहौं, बिधि बेद कहै परमातम ताईं।
सोइ परमातम सुन्न बसै, ता की धुन्न से आतम जीव कहाईं।
मान सरोवर घाट बसै, येही आतम जीव की बाट बताईं।
आतम तत्त तमातम मारग, तत्त भये अविगत्ति कहाईं।
तुलसी बिधि बात निहारि कहै, सो पुकारि पुकारि कै कहत सुनाईं।

॥ सवैया १२ ॥

अविगति रीति करी जग प्रीति, सो ध्यान से जोति कै मान बढ़ायौ।
सत्त पुरुष की डोरि गही, सो पुरुष के अंस से जीव जो आयौ।
जीव के तेज से जोति भई, जिव जोति मिले भगवान कहायौ।
ता को बराट कहै नर अंध, सो फंद गुना गुन तीन में गायौ।
अब तत्त की साखि कहौं बिधि भाखि, सो लाग की लाख कौ ताख बनायौ
कंभ के उद्र अकास औ स्वाँस, अकास जो तीनोइँ तत्त में आयौ।
पाँचहि तत्त भये बिधि एक, सो याहि कौ नाम बैराट कहायौ।
अकास के नूर से सूर भयो, तत तारे के बंद से चंद चलायौ।

सब ही बिधि बद बैराट बनी[1], बिधि भूलि पिया चित नेक न लायौ।
तुलसी जब की नहिं बात लखी, जब जाही में नाम अलख्य कहायौ।

॥ सवैया १३ ॥

अलख निरंजन नाम सोई, जिन जोति से भोग कियौ भग जाई।
तीनिहि बुन्द के तीनि भये, सोइ ब्रह्मा बिस्नु महेस ह भाई।
पहिले जग जीव अलख्य हतौ, गुन तीनि में मन सो लख्य कहाई।
तुलसी बिष भास में बास बस्यौ, सो फँस्यो बिधि बेद से खानि में आई।

॥ सवैया १४ ॥

चारोइ बेद की आदि कहौं, पुनि पंचम स्वाँस सुषम्म से आयौ।
धेद सुषम की छाया लई, ता से ब्रह्मा ने चारोइ बेद बनायौ।
षटवाँ सोइ बेद प्रसंग जोई, सो आये सुषम्म प्रसंग से गायौ।
ये षट बेद का भेद कही, सो रहे पुनि चार सो संत बतायौ।
चारोइ बेद की आदि कही, सोइ कागद स्याही न लेख लिखायौ।
सुनौ दस बेद कहे तुलसी, सो कहो पुनि पंडित कौन बनायौ।

॥ सवैया १५ ॥

लख्य रहा गुन तीनि गहा, सो पलक्क[2] में आ कियो बास बसेरो।
ऐसे बैराट भयौ सब ठाट, सो घाट तीनों गुन बाट में घेरो।
रजो कहुँ ब्रह्मा सतो कहुँ बिस्नु, कियौ तम संकर साज घनेरो।
भया भगवान बैराट बिधान, सो माया का चाट में काल का चेरो।
चंदा रबि नैन नहीं सुख चैन, सो राहु बिमान करै नित फेरो।
देखि दुखी मन राम फिरै, गुन गोरस खानि में कामना पेरो।
तुलसी बिधि आदि बिख्यात कही, भगवान नसौ नहिं कीन्ह निबेरो।

॥ सवैया १६ ॥

चारोइ खानि भयौ भगवान, सो याही से नाम अनेक कहायौ।
काल बली कियौ जाल छली, सोइ बाँधि चले जो अनेकन आयौ।
जोगी जती जग ज्ञान मती, सोइ सीता सती और राम को खायौ।

(१) मु॰ दे॰ प्र॰ की पुस्तक में "बनी" की जगह "नसी" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।
(२) मु॰ दे॰ प्र॰ की पुस्तक में "पलक्क" की जगह 'खलक्क' है।

ऋषि मुनि रोवैं सीस धुनी, और ब्रह्मा बिस्नु महेस चबायो।
तुलसी तत छान बिचार कहै, जब जोइ बच्यो जा को संत बचायो।

॥ सवैया १७ ॥

पंडित भाखि कहैं बिधि ब्रह्मा ने, चारोइ बेद बनाइ लिये हैं।
साम जजुर जो भये हैं लघू, ऋगु बेद अथरवन चारों किये हैं।
येहि बिधि जगत सुनाइ कहैं, सो बनाइ कै गाइ जनाइ दिये हैं।
झूठी जो बात करैं जग साथ, अनाथ अनारी ने मान लिये हैं।
ये भौ खानि करी तुलसी, सो बेद ने मारि कै घानि किये हैं।

॥ सवैया १८ ॥

पंडित बेद का भेद कहौं, जा की उतपति भाखि कै साखि सुनाऊँ।
जक्त रहा पीछे बेद भया, जा की आदि कहौं बिधि बात लखाऊँ।
पिरथम बैल किसानी हती, धरती बन बोइ कै सन्न[1] कहायो।
ता की रसी कर टाट बन्यो, फिर कागदी कूटि कै धोइ ले आयो।
पुनि चूने दिवाल पै लेप कियो, सो भयो बिधि कागद लेख लिखायो।
तिली जो तेल कियो पुनि पेल, सो तेल से काजल स्याही बनायो।
स्याही भई पुनि कलम सही, लिखि ब्रह्मा ने याही से बेद सुनायो।
तुलसी तत तोल विचार कहै, जग बेद के भेद से खानि में आयो।

॥ सवैया १६ ॥

पंडित झाड़ की आड़ लई, कहैं ताड़ के पात पर जात लिखो थो।
येहि बिधि बेद बखान करैं, सो अजान न जानै जो बेद कहाँ थो।
अस्थावर बावर बृच्छ हते तरु, तीस जो लाख में कौन नहीं थो।
अठरा बन भाँति की जाति सभी, सो सभी संसार को कार सही थो।
उषमज अंडज पिंड हतो, अस्थावर चारि चौरासी बनो थो।
पात प्रथम्म भयो तरु कौं, तुलसी पीछे पात के बेद भयो थो।

॥ सवैया २० ॥

बेद मथो जिन पुरान कथो, बहु सिम्रित सास्त्र को ज्ञान हतो।
नेम अचार अचारज रीति, सो जीतै नहीं जम खायो खतो।

---

(१) सन।

परमहि हंस बँधे जड़ संग, सो ब्रह्म अरंग न जानौ मतौ।
जगत अजान रहा रस खान, सो माया के मान में रंग रतौ।
तुलसी जब जानि कै मौन गह्यौ, सो कह्यौ पद साखी में सारो पतौ।

॥ सवैया २१ ॥

अरे मन मान अचेत अजान, सो ऊसर खेत में काह मिलैगो।
ये जग संग पतंग कौ रंग, सो माते मतंग से घानी पिलैगो।
ये जम जाल महा बिकराल, सो खालहिं खैंचि के भूस मिलैगो।
तुलसी तब की बिधि याद करो, तन छूटै न देंहीं से माल मिलैगो।

॥ सवैया २२ ॥

तेल फुलेल करै रस केल, सो माया के फेल में सार भुलानौ।
मात पिता सुत नारि निहारि, सो झूठ असार को देखि भुलानौ।
ये दिन चार बिचार न लार, सो भूलि असार के संग तुलानौ।
तासे कहै तुलसी निज कै, तन छूटि गये जम देत उलानौ[1]।

॥ सवैया २३ ॥

दृष्टि पसारि के देखि तुही, जग माहिं रह्यौ कोइ बूझ अमाना।
पंडो भभीषन भीम बली, गये खोज गली केहि राह समाना।
रावन लंकपती पै हती, सो रती भर संग न देखि निदाना।
तू केहि लेखे में देख कहौं, तुलसी सतसंग से होत न हाना।

॥ सवैया २४ ॥

किये तन काज की लाज करौ, सो बनाइ के साज ले तोहि पठायो।
ता को बिसारि दियौ मतिमंद, जगत के फंद में बंद बँधायो।
अंत जो कौन बिचार करौ नर, जाने रच्यौ ता की याद न लायो।
लेत हिसाब बनै नहिं ज्वाब, सो ख्वाब के खेल में तोहि भुलायो।
तुलसी तब बात बिचार पड़ै, जब आनि चढ़ै जम छाती पै धायो।

॥ सवैया २५ ॥

सुनौ सतसंग का रंग कहौं, सो उतंग अमोल जो मोल न आवै।
कहैं सबही सब संत पुकारि, बिना सतसंग नहीं कछु पावै।

---

(१) उलहना।

संत मिलैं सतपंथ चलै, सो कुपंथ कलह सब दूरि बहावै।
ज्ञान बिबेक बैराग लखै, मन मान मनी बिधि सारी नसावै।
संत मता कछु और लखै, सो पकै गुरु मारग में स्रुति लावै।
तुलसी तत तोल बिचार कहै, सो अमोल पिया घर सहज समावै।

॥ सवैया २६ ॥

सतसंग में भेद अभेद मिलै, स्रुति सैल दुबीन को माँजा करै।
मन की मत भार निहार लखै, सो पकै स्रुति घाट पै आनि धरै।
पच्छिम बास की आस तकै, नित नेम स्रुति सत चाह करै।
येही बिधि डोर लगी निस बास, पिया पद खेल को माल भरै।
तुलसी निज सूझ कै बूझ परी, जिन को पति प्यार से कार सरै।

॥ सवैया २७ ॥

संत मता अज आद अलग्ग,[1] बिलग्ग[1] बिधी कोउ नेक न जाना।
राह रसी रजु[2] पोढ़ करै, लागी डोर की मोर पै सुरति ठिकाना।
पील पै लील की खील करै, सो अपील अकास को मारि निसाना।
मानसरोवर हंस बसै, तेहि माहिं अन्हाइ के देस दिखाना।
तुलसी तत आतम भेद कही, पुनि आगे चले पर और कहाना।

॥ सवैया २८ ॥

मानसरोवर पार चली, ता की आली सुनौ सत सैन लखाऊँ।
जाहि सखी सुन सुन्न सुमारग, पार को ब्रह्म परमातम नाऊँ।
जाहि चढ़ी सत सुरति सुहागिल, पाइ लखो ब्रह्मंड को ठाऊँ।
जीव चराचर जाति सभी, सब देखि निहार के भाख सुनाऊँ।
तुलसी गुरु से स्रुति राह लखी, बिधि सोई अगोचर ताहि बताऊँ।

॥ सवैया २६ ॥

सत्त पुरुष को भेद कहौं, सतलोक में जाहि को बास बसेरो।
संत सबै रस राह लखैं, सो चखैं वोहि मारग साँझ सबेरो।
सहस कँवल्ल चढ़ै चक देस, सो जाइ लखै जा में जोति को डेरो।

(१) मु॰ दे॰ ब्र॰ की पुस्तक में "अलग्ग" की जगह "अलाप", और "बिलग्ग" की जगह "बिलाप" है जो समझ में नहीं आता। (२) रस्सी

ताहि के पास निरंजन बास, सो स्वाँस बसै वोहि धाम के नेरो।
ता के परे दल दोइ के पास, अकास के पास अलख्य को पहरो।
ताहि के मध्य भरुन्न के पार, अवीगत काल के जाल को घेरो।
ता के परे तट ताल में हंस, सो बंस अवीगत है तेहि केरो।
ता के परे पर बेनी को घाट, प्रमातम ब्रह्म सो सुन्न में हेरो।
आगे सखी बिधि बात कहौं, दल चारि परे सतलोक निबेरो।
ता के परे खिरकी से नियार, सो साहिब सत्त पुरुष है मेरो।
जा के रोमहि रोम ब्रह्मंड औ अंड, सो कोटि रबी जा के रोम उजेरो।
सोइ सतनाम कहो सत साहिब, ता को भयौ तुलसी निज चेरो।

॥ सवैया ३० ॥

एक अगत्त अगाध अनाम, सो धाम न गाम न ठाम ठिकाना।
जहँ लख्य अलख्य कौ खेल नहीं, सो खलक्क बिचारे ने काहे को जाना।
ता की बिधी कोइ संत लखै, सो अपेल अकेल का रूप न नामा।
आतम हंस प्रमातम बंस, सो इन दोउ नहिं यह देस पिछाना।
जहँ ब्रह्म न जीव अजीव को बास, सो चंद न सूर जमीं असमाना।
पिंड ब्रह्मंड जो तत्त नहीं, जहँ सत्तहि लोक नहीं असथाना।
सो साहिब सत्त के पार बसै, सो अगार अनाम जो संत समाना।
जा की बिधि तुलसी लखि पाई, सो देखि अनाम को जानि बखाना।

॥ सवैया ३१ ॥

संत का भेद अभेद अपार, सो सार वोही वोहि देस को जानै।
सूरति सैल से केल करै, सो अपेल अकेल की साखि बखानै।
बेद पुरान नहीं मत ज्ञान, सो जोगी कौ ध्यान न पहुँचै निदानै।
ता की कहै तुलसी बिधि तोल, सो संत बिना नहिं भेद पिछानै।

॥ सवैया ३२ ॥

नीर निरंजन काल बिधी, सो कराल बसै मन ऐन के माईं।
चैन अचैन बिचैन करै, सोइ नीत अनीत में देत भुलाई।
जगत जहान करै जे हैरान, सो खानि में डारि कै घानि पेराई।

जो कोइ जानि बिचार करै, सोइ संत के पाँउ परै नित आई ।
वे सो दयाल करैं प्रतिपाल, सो काल के जाल से लेत छुड़ाई ।
ये तत बात कहै तुलसी, सो बसी निज सूरति सत्त में जाई ।

॥ सवैया ३३ ॥

गीता की भाखि कहौं पुनि साखि, सो आँखि से पोथी में देख बिचारो ।
कहा भगवान अरजुन सुन कान, सो साँचे बिधान को जानि निबेरो ।
अरजुन ठाढ़ रहो रन माहिं, सो कौरौ को मारि कै राज सम्हारो ।
अरजुन देखि बिचारि कहै, परिवार मरै ऐसे राज को जारो ।
येहि बिधि ज्ञान उठौ मन माहिं, सोई धनु बान पलक में डारो ।
कृष्न कह्यौ पुनि ज्ञान बैराग, सो जोग बिज्ञान बिधी से पछारो ।
अरजुन भक्त गरीब अजान, सो जानै नहीं या को फंद पसारो ।
अरजुन गह्यो जो नहीं धनुवाँ, सो बताइ त्रिलोकी को डाढ़ में चारो ।
अरजुन जो देखि भयंक भयो, सो कह्यो बिधि कौरौ को सस्त्र ले मारो ।
ये छल दाव दियो धनुवाँ, सो कह्यो अरजुन से मारि बिडारो ।
तो को कछू नहिं पाप लगै, सो करै करता कछु तोहि न भारो ।
येहि बिधि भाखि कही भगवान, सो काटि कै मारि कुटुम्ब सँघारो ।
धनुवाँ अरजुन्न उठाइ लियो, सो भिड़ो रन खेत कुटुम्ब को मारो ।
अरजुन जीति गहे जब पाँइ, सो पाप लगाइ कै दूरि निकारो ।
दूरि रह्यो सिर पाप गह्यो, सो हत्या को पाप लगो तोहि सारो ।
जज्ञ करो असुमेद जबै, सो तबै कुल हत्या से होइहौ न्यारो ।
अरजुन जज्ञ कियो मत मान, सो हत्या को पाप भयो नहिं न्यारो ।
अरजुन भाखि कह्यो भगवान, सो देही हिवारे में जाइ कै गारो ।
पाँचोइ पण्डा हिवारे गरे, सो मरे गये नर्क में चारो के चारो ।
जोइ युधिष्ठिर एक बचो, जा को कहत स्वर्ग में भयो सुख सारो ।
अरजुन मित्र बड़े भगवान, सो मारि कै ताहि को नर्क में डारो ।
नर्क की जाल भया सो बेहाल, सो काल जो कृष्न ने ऐसे बिडारो ।

ऐसे कुटिल से प्रीति करो, दुख पाइ के कर्महि कर्म पकारे।
मित्र बड़े सोइ नर्क परे, सो कढ़े नहिं कृष्न के भारी थे प्यारे।
वोही जो कृष्न को इष्ट करै, सो मती भई भ्रष्ट जो दुष्ट के लारे।
प्रतच्छ जो कृष्न ने ऐसी करी, तुलसी कहै मूरति कैसे उबारे।

॥ सवैया ३४ ॥

भागवत बूझि बिचार करौ, सो कहै सतसंग से संत हैं न्यारा।
आतम ज्ञान की बात कहै, दुतिया असकंध से बूझि बिचारा।
नेम अचार अनेकन कार, सो झूठि असार को सार निकारा।
पुनि जो धर्म अनेकन कर्म, सो जीव कौं काज न एक सँवारा।
भागवत माहिं कहै परसंग, सो नेक बिबेक से देखि निहारा।
भये नृगराइ[1] कहौं पुनि गाइ, सो गाइ के गोसठि देत अपारा।
देतहि देत जो जनम गयौ, सो भयौ गिरगट जो देहिं को धारा।
पुन्न जतन्न कियो बहु भाँति, सो कर्म के भोग टरे नहिं टारा।
पुन्न से जीव को काज नहीं, सो परे नृगराइ कुए बिच डारा।
बाम्हन पुन्न से स्वर्ग कहै, तुलसी सब बात अनीति पसारा।

॥ सवैया ३५ ॥

ऊधौ के मित्र बड़े भगवान, सो प्रीति करी जा की रीति बखानी।
भोजन साथ करैं बहु भाँति, सो ऊधौ बिना सुख नेक न मानी।
कृष्न गये तजि देह निवास, सो ऊधौ ने रोइ दियौ सोइ जानी।
बद्रिका जाइ के तप कर्यौ, सोइ रोइ कै तप कौ कीन्ह निदानी।
जो कहुँ कृष्न से मुक्ति हुती, तो करौ तप कष्ट कहौ केहि कामी।
तुलसी बिधि बूझि के बात लखौ, तुम्हरी गति मुक्ति की कैसे बखानी।

(१) राजा नृग ने जो साठ हजार गऊ रोज दान देते थे एक गऊ को धोखे में दो ब्राह्मणों को दान कर दिया, जब दोनों ब्राह्मण झगड़ते हुए राजा के निकट न्याय को आये तो राजा सोच में दोनों की बात पर सिर हिलाता रहा जिस पर एक ब्राह्मण ने सराप दिया कि तुम गिरगिट की भाँति सिर हिलाते हो सो वही योनि पाओगे। इस सराप मे राजा नृग को गिरगिट योनि मिली और एक अन्धे कुएँ में पड़े रहे जब कृष्णावतार हुआ तब श्रीकृष्ण ने अपना चरण छुआ कर उसका उद्धार किया।

॥ सवैया ३६ ॥

भागवत के मत्त की गत्ति कहौं, सो परीछित को सुकदेव सुनाई ।
ब्यास कथे जो पुरान बिधी, ता के पीछे संबाद कहौ कस गाई ।
ब्यास प्रथम्म अरम्भ कियौ, सुकदेव परीछित ग्रंथ में लाई ।
पुरान लिखे भये ब्यास मुनी, ता के पीछे परीछित को समझाई ।
पंडित या की बिधी कहौ भाई, सो तोल कहौ तुलसी को बुझाई ।

॥ सवैया ३७ ॥

जो तुम पंडित ज्वाब कहौ, सुकदेव सुनावन पीछे गयौ ।
ब्यास पुरान में पहिले कही, सो त्रिकाल के तेज से भाखि कह्यौ ।
पंडित ता कौ जुवाब सुनौ, सुकदेव चले मोह ब्यास भयौ ।
मोह भयौ सँग लारे लयौ, तबही जड़ बृच्छ ने ज्ञान दयौ ।
या की कहौ सुन भाख बिधी, सो त्रिकाल कहौ तब काँह हिरानौ ।
तुलसी तब को बिधि छान कहौ, सोइ जानि परै या की बूझ मिलावौ ।

॥ सवैया ३८ ॥

एक बिचार की और कहौं, ता की ठीक बिधी बिधि भाखि सुनावा ।
जबही रच साज बैराट भयौ, तब देव उठावन कैसे कै आवा ।
ता की बिधी को बिचार कहौ, सो पहिले जो देवन कौन बनावा ।
और पुरान जो और कहै, सोइ ब्रह्मा को कस्यपदेव बतावा ।
या की कहौ सही कौन बिधी, सो बैराट को देव उठावन आवा ।
तुलसी बिधि तोल के बात कहौ, जो ब्रह्मा के पुत्र से देव कहावा ।

॥ सवैया ३९ ॥

पंडित एक बिचार कहौं, जोइ बात सुन्यौ ता को भर्म समाई ।
कहत तुम्हीं नित बात पुनी, भागवत्त सुनी जिन मुक्ति को पाई ।
ऐसी बिधी बिधि भाखि कहौ, पुनि वाहू को भूत की जोनि बताई ।
जोई पुरान सुनै नित कान, किरिया करि वाही को भूत बनाई ।
पुरान सुनै सोइ भूत बनै, भागवत के मत्त की साखि जो जाई ।
एक बिचार कहौ तुम सार, तुलसी बिधि सहज में भाखि सुनाई ।

॥ सवैया ४० ॥

और जो एक बयान करौं, सुन पंडित प्रेम से कान लगाई ।
गऊ करन्न बरन्न कहौ, धुँधकारी कथा बिधि जाइ सुनाई ।

भागवत के मत्त की साखि सुनौ, सोइ भूत भयौ ऐसी कहत बुझाई।
उठे कथा भास फुटै तब बाँस, छुटै तब भूत से मुक्ति बताई।
ऐसी बिधो बिधि भाख कहौ, ये तौ ब्यास लिखी तब ग्रंथ बनगई।
ग्रंथ लिखे भये ब्यास मुनी, धुँधकारी सुनो जा के पीछे जो जाई।
ये तो आगेइ ब्यास ने भाखि लिखो, सो पुरान बने जा के पाछे सुनाई।
धुँध जो कारी तो पहिले लिख्यौ, सो वा की कहौ बिधि माहिं बताई।
सातहि पोरि कौ बाँस कह्यौ, सोइ बाँस को भेद बतावौ आई।
जंगल के बीच में बाँस बसै, की कहौ बाँस जो और है भाई।
या कौ बिचार करौ मन में, तुलसी कहै बूझ सो सूझ में लाई।

॥ सवैया ४१ ॥

एक प्रसंग बिधी बिधि बात, कहौं सोइ बूझि कै भेद बतावौ।
एक बयान सुनौ सोइ कान, सो गूलर फल ब्रह्मंड सुनावौ।
ब्यास कही कथ ग्रंथ सही, सोइ अंड को गूलर खोज लगावौ।
कौन ठिकाने को ठाट कह्यौ, सो बराट भयौ ता में भेद सुनावौ।
ता की बिधी भिनि भाखि कहौ, तुलसी हिये आँखि से देखि बुझावौ।

॥ सवैया ४२ ।

बेदांत कहै जग ब्रह्म मई, सो ईसुर कर्म मीमांसा ने गायौ।
कथन पातंजल जोग कह्यो, सो बिसेसिक[1] सार समय जो बतायौ।
न्याय जो गाइ करतार कहै, सोइ साख्य ने नीत अनीत सुनायौ।
तुलसी षट रीति प्रपंच करी, सो कर्यौ जिन जक्त को जानि बुझायौ।

दोहा--ज्ञानी पंडित भेष सब, परमहंस ब्रह्मचार।
ये सब भूले षट महीं, कर्म भूप की लार ॥ १ ॥
परमहंस बदांद से, ब्रह्म जो कहत लबार।
पातंजल जोगी ठगे, जक्त मिमांसा लार ॥ २ ॥
ज्ञानि बैरागी पंडिता, समया लिखैं निहार।
और कहौं का को कहौं, बहे भर्म की धार ॥ ३ ॥

(१) मुं० दे० प्र० और हमारी दोनों लिपियों में "बिसेसर" लिखा है।

पंडित भूलै बेद में, सास्तर पढ़त पुरान।
ये गति मति है काल की, बूझै संत सुजान ॥ ४ ॥

पंडित बूझौ भेद को, देखि लखौ पद सार।
लार ग्रन्थ पढ़ि कै कहौ, ये सब झूठ पसार ॥ ५ ॥

अगम निगम से भिन्न है, पंडित लखा न जाइ।
संत मिलैं कोइ महरमी, पल में देत लखाइ ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

या की पंडित कहौ बुझाई। भया बैराट नास कस भाई ॥
पाँच तत्त का रहा पसारा। नास बेद कस कहत पुकारा ॥
या को भाखि सुनावौ लेखा। अस बेदन कस कही बिबेका ॥
या की बिधी बतावौ भाई। जा में लेखा लगै बनाई ॥
या की निसा भिन्न भिन दीजै। पुनि घर गवन आपने कीजै ॥
हम परलय बिधि कही बनाई। या की बूझ समझ में लाई ॥
और अनेक भाँति कहा लेखा। ज्वाब स्वाल लखि कहौ बिबेका ॥

सोरठा--पंडित कहो बिचार, वार पार परचा लखौ।
बेद पुरान नहिं सार, अगम ज्ञान कस लखि सकै ॥

॥ चौपाई ॥

संत मता सुन अगम अपारा। ब्रह्मा बेद न पावै पारा ॥
और बैराट ठाट भगवाना। संत मता उनहूँ नहि जाना ॥
संत रीति गति सब से न्यारी। कहि कहि थाके नेति पुकारी ॥
तुम ने बेद बेद ठहरावा। बेद नेति कहि भेद न पावा ॥
साखि ताहि को करौ बखाना। बूझ नहीं हिये तिमिर समाना ॥
जल जल रहा कहौ अस भाई। अस अस बेद कहै बिधि गाई ॥
जल तत रहा बूझ अस ज्ञाना। थल बिन जल केहि बिधि ठहराना ॥

सोरठा--ऐसी बूझ बिचार, लार तत्त जल थल रहा।
जल थल तत्त मँझार, दुइ तत के जिव सब रहे ॥

॥ चौपाई ॥

नौ लख जीव जाति जल माइं । पिरथी लाख सताइस भाई ॥
ये सब जल थल जीव समाना । अछै बृच्छ कस रहे भगवाना ॥
थल बिन बृच्छ रहा कस भाई । बिन थल बृच्छ बहा जल माइं ॥
और जीव जल माहिं रहाई । अस भगवान रहे उन माइं ॥
और जीव रहे जल माइं । तस भगवान रहे तेहि ठाइं ॥
ब्रह्मा बेद कहाँ तब राखा । जल में कागद रहै न आँका ॥
पुनि आगे का कहौ बिबेका । तेहि पीछे भयो कस कस लेखा ॥
हमरे मन में संसय आई । सो नैनू तुम कहौ बुझाई ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित । चौपाई ॥

ऐसी बेद कहत गोहराई । सास्त्र पुरान कहै सब गाई ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

जल में कागद रहा न होई । परलय माहिं बचा नहिं कोई ॥
परलय ब्रह्मा बचा न भाई । ये बेदन कस कस गोहराई ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित ॥

स्वाँसा माहिं बेद तब रहिया । तिन सब यह बरतंत सुनैया ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

स्वाँसा पवन तत्त जब भयऊ । पवन तत्त जिव जग सब रहेऊ ॥
तुम तौ कहौ पवन तत नासा । जल पुनि पवन तत्त रहा बासा ॥
कस बेशट कहौ तुम नासा । पानी पवन रही पुनि स्वाँसा ॥
आई स्वाँस कस बिना अकासा । या को भाखौ भेद खुलासा ॥
बिना अकास स्वाँस नहिं आवै । या की बिधि हम प्रगट सुनावैं ॥
देखौ निरखि गगन को भाई । जहँ से स्वाँस सिमटि सब आई ॥
पिंड ब्रह्मंड बिधि एक बखाना । तन में स्वाँसा गगन समाना ॥
गगन रहै स्वाँसा भइ नासा । वेदन कस कस कहा तमासा ॥
जल पिरथी बिन केहि बिधि रहिये । नैनू या की समझ सुनैये ॥
जल रहिया तुम ऐसी भाखी । स्वाँसा पवन बतावौ साखी ॥
तो अकास होइहै पुनि सोई । जल पुनि रहै प्रिथी पुनि होई ॥

जल पवना पुनि गगन अकासा । रही अगिनि चारौं में बासा ।।
तुम कहौ पाँच तत्त कर नासा । ये बिधि पाँचो रहे निवासा ।।
तुम कहिया इक जलहि रहाई । ऐसे बेद कहै गोहराई ।।
पाँच तत्त से जग रहा सोई । कहौ या की कस परलय होई ।।
जल के रहे सभो पुनि रहिया । झूठी सकल बेद बिधि कहिया ।।
एक तत्त कधी रहत बतावौ । पाँच तत्त कधी नास सुनावौ ।।
ऐसा कस कस ज्ञान तुम्हारा । या कर कहौ भेद निरबारा ।।

।। उत्तर श्यामा पंडित ।।

पाँच तत्त पाँचो में जाई । मरना जीना ना कछु भाई ।।
जल में जल पवना में पवना । गगन में गगन अगिनि में अगिना ।।
प्रिथो प्रिथी में जाइ समानी । ऐसे पाँच तत्त अलगानी ।।

।। प्रश्न तुलसी साहिब । चौपाई ।।

ये पाँचौ पाँचौ में रहिया । पुनि पुनि नास कौन बिधि भइया ।।
अंडा नसि तत कहाँ समाना । ता का हम से कहौ ठिकाना ।।
कहिये तत्त कौन उपजाई । इन की आदि कहाँ से आई ।।
जब ही ठाट बैराट नसाना । तब तत रहि कहौ कौन ठिकाना ।।
कहौ तत पाँच पाँच में जाहीं । मरन जिवन औरै कछु नाहीं ।।
पुनि तेहि पाप पुन्य बतलावा । तुम कहौ कीन्ह दीन्ह तस पावा ।।
तीरथ ब्रत सुभ कर्म बतावौ । कहौ उन्हें पुनि कस कस पावौ ।।
पाँच तत्त पाँचौ में जाई । पाप पुन्य कहौ कौन भुगाई ।।
जज्ञ करै सो स्वर्गै जाई । पाँच तत्त ता रहे न भाई ।।
पाँच तत्त पाँचौ में जाई । स्वर्ग भोग कहौ कौन कराई ।।
नैनू स्यामा पाँडे भाई । या को बिधि बरतंत सुनाई ।।
ये सब ज्वाब बतावौ भाई । तब तुम हम से जाने पाई ।।
नैनू मन में गुनन बिचारा । या कौ कहा करौं निरबारा ।।
बुधि चित मन में कछू न आवा । बुधि चित ज्ञान बहुत दौड़ावा ।।
एकहु ज्वाब साफ नहिं दीन्हा । बुद्धि गई मानौ मतिहीना ।।
बोले न ज्वाब काँप अस आई । या को कौन बिधी समझाई ।।
जौन जौन बरतंत सुनावा । तौन तौन सुपने नहिं पावा ।।

सोरठा--तुलसी पूछै बात, खोल बुद्धि कछु कछु कहौ।
हिये माहि खिसियात, सूझ बूझ आवै नहीं॥

सम्बाद तुलसी साहिब और माना पंडित का

॥ चौपाई ॥

पंडित रहैं तीन सै साठा। देखे एक एक से भाठा॥
तिन में इक पंडित रहे माना। ता घर रहैं बहुत से दामा॥
मन में मस्त बिद्या बिधि आई। बहुत पढ़े मद कहा न जाई॥
माया मद बिद्या मद दोई। ब्राह्मन जाति पाँति मद सोई॥
चारि बरन में ऊँच बखाना। ता मद का कहौ कौन ठिकाना॥
माना पंडित का कहौं कैसा। सब भैंसिन में मानो भैंसा॥
बोले बचन मान मद मारे। काल न चीन्है साँझ सबारे॥
कासी नगर छत्र कर थापा। मान मई सूझै नहिं आपा॥
ज्ञान बिधी बिद्या बल ठाने। आदि अंत की खबर न जाने॥
माना पंडित बोले बानी। बेद बिधी इन एक न जानी॥
बेदन कही आदि चलि आई। ता को छाँड़ि अंत कहँ जाई॥
बेद से कौन बात है न्यारी। ता को ढूँढ़ै हाथ पसारी॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब। चौपाई॥

कहै तुलसी तुम सीतल होई। भाखौं भेद बेद कहै जोई॥
बाहिर भेद नहीं कछु गावा। बेद कहै हम भेद न पावा॥
नेतहि नेत बेद गोहरावा। ऐसी कौन बस्तु नहिं पावा॥
ता कर मन में करौ बिचारी। उन से कौन वस्तु रही न्यारी॥
निराकार को नेति पुकारा। जोति सरूप होत उँजियारा॥
ऐसे बेद कहै समझाई। कहै बेद हम भेद न पाई॥
ता की महिमा साखि बखाना। बेद कहै हम भेद न पाई॥

सोरठा--माना मन में रोस, तुलसी से पूछै सबै।
आदि जगत की बेद, सो तुलसी बरनन करौ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन माना बाता । बेद बिधी बिद्या बिख्याता ॥
सब पहिल संसार रचाना । ता के पीछे बेद पुराना ॥
अंडज पिंडज उषमज खाना । अस्थावर चर अचर बखाना ॥
चारि लाख चौरासी धारा । जब जग का था सकल पसारा ॥
जा के पीछे बेद रचाना । ता को परथम कीन्ह बखाना ॥

॥ प्रश्न माना पंडित । चौपाई ॥

कहै माना तुलसी सुन बानी । ये तौ तुम ने कूर बखानी ॥
जग के पीछे बेद बतावा । यह हमरे मन में नहिं आवा ॥
तुम तो कहौ जगत है पहिले । पुनि फिर रचा बेद का खेले ॥
ऐसी बात अनीति बखानी । अब सुनियौ हम से सहदानी ॥
कहौं बैराट रूप भगवाना । नाभि कँवल ब्रह्मा उतपाना ॥
तिन पुनि बेद चारि रचि लीन्हा । ऋगु औ साम जजुर को कीन्हा ॥
और अथरबन कीन्ह बनाई । ता पीछे सृष्टी उपजाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

पंडित माना सुन बिधि बाता । या की कहौं सकल बिख्याता ॥
अब में कहौं सत्त सत भाई । चित दे सुनियो कान लगाई ॥
अब कहौं अगम निगम गति भाखी । बेदन में मिलि है नहिं साखी ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस न रहिया । नहिं बैराट निरंजन भइया ॥
दस औतार नहीं थे भाई । पाँच तत्त नहिं देंही पाई ॥
आदि अंत मध कछू न होती । अकथ कथा की भाखौं पोथी ॥
अब कहौं आदि अंत की बानी । भाखौं आदि भेद सहदानी ॥
पिरथम पुरुष अनाम अकाया । रहै नहीं बैराटी माया ॥
जिन से सत्त नाम भया जाना । चौथा पद सोइ संत बखाना ॥
जहँ सोइ सत्तनाम अस्थाना । सत्त लोक की करौं बखाना ॥
सत्त लोक से निरगुन आया । आदि अंत का भेद सुनाया ॥
जा सुत सोल्हा निरगुन होई । ता की बिधि भाखौं सुन सोई ॥

चंद न सूर गगन नहिं तारा । धरति न पानी पवन अकारा ॥
सेस कुरम नहिं दस औतारा । आदि अंत नहिं कीन्ह पसारा ॥
ब्रह्मा बिस्नु बेद बिधि नाहीं । बिधि बैराट रचौ नहिं जाई ॥
तब नहिं बेद बेद का करता । रूप रेख बिन रहै अकरता ॥
निरगुन पुत्र पुरुष को सोई । ता कर नाम निरंजन होई ॥
चौथा पद सतनाम दयाला । ता कर पुत्र निरंजन काला ॥
जिन पुनि तप कीन्हा बहु ध्याना । सत्तनाम जिन निजकर जाना ॥
उन माँगा होइ दीन अधीना । तीनि लोक ता कौ पुनि दीन्हा ॥
धरती नीर पवन असमाना । ता से रचिया सकल बिधाना ॥
पाँच तत्त वाही पर आवा । पुनि तिन रचि बैराट बनावा ॥
जोती तेज पुरुष से आई । जीव अंस दै ताहि पठाई ॥
जोती निरगुन के ढिंग आई । रति कर भोग कीन्ह पुनि ताही ॥
तीनि बार रति कीन्हा जाई । ब्रह्मा बिस्नु कीन्ह उपजाई ॥
तीजे संभू छोटे भाई । येही बिधि इनकी आदि बताई ॥
ता पीछे जग कीन्ह पसारा । चारि लाख चौरासी धारा ॥
सृष्टि भई तब अगम अपारा । जोति निरंजन जाल पसारा ॥
सुषम बेद स्वाँसा से आवा । आदि भेद उनहूँ नहिं पावा ॥
सुषम बेद की छाया लीन्हा । ब्रह्मा बेद बनाइ जो कीन्हा ॥
अब या की मैं बिधी बताऊँ । चारि बेद की आदि लखाऊँ ॥
जग संसार थपा था पहिले । पुनि फिरि रचा बेद का खेलै ॥
अब या की हम बिधी बताई । माना सुनियौ चित्त लगाई ॥
धरती बैल किसानी होई । सन कर खेत भया पुनि सोई ॥
बृछ बढ़ई जब काटा होई । हल बनाइ धरती पुनि बोई ॥
डारा वीज भयौ सन साजी । रसरी कीन्ह ताहि की भाँजी ॥
भया टाट तब किया बिछाना । सड़ा टाट तब हुआ पुराना ॥
ता को जाइ कागदी लीन्हा । कूट काट कर सूधा कीन्हा ॥
नदी माहिं पुदि धोय सँवारा । तब कीन्हा ता का बिस्तारा ॥

गाय भैंस जब होइहै भाई। पुनि कागद की बिधी बताई ॥
चूने दिवाल लेप ठहराना। तब कागद पर बेद लिखाना ॥
जग में नद्दी नाला होई। टाट बनाइ कागदी धोई ॥
कागद पीछे बेद लिखाया। सो ता को तुम आदि बताया ॥
तिल्ली तेल पेल जब लीन्हा। रुई कपास की बाती कीन्हा ॥
अगिनि तत्त जब होइहै भाई। दिया बारि काजर भइ स्याही ॥
बन बरुई से कलम कर लीन्हा। ब्रह्मा बेद लिखन जब कीन्हा ॥
चारि बेद की आदि बताई। जो ब्रह्मा से उपजे भाई ॥
ता कर नाम गती गुन गाऊँ। पिरथम साम बेद तेहि नाऊँ ॥
ऋग्ग जजुर को भाखि सुनाऊँ। चौथा अर्थ अथरबन गाऊँ ॥
ऐसा चारि बेद बतलावा। ता की आदि बिधी बिधि गावा ॥
ता से सास्तर भये पुराना। करमी जीव बहुत लपटाना ॥
पूजैं पानी पत्थर देवा। तीरथ बरत बताई सेवा ॥
ऐसे जीव खानि भरमावा। आदि अंत का मर्म न पावा ॥
सोरठा--तुलसी कहे पुकार, माना पंडित सब सुनौ।
रहा जो होइ सम्बाद, कहौं बहुरि जो फिरि कहो ॥

॥ छन्द ॥

कहौं यह बिधि गाई तुमहिं सुनाई। आदि अंत सब भाख भई ॥
बेदन बिधि चारी चहौं पुकारी। सिव ब्रह्मा की आदि कही ॥
निरगुन मति गाई जोति सुनाई। जो रचना ब्रह्मंड भई ॥
सिम्रित समझाई पुरान सुनाई। अस अस सब की आदि भई ॥
दोहा--तुलसी कहै माना सुनौ, स्यामा नैनू बात।
तीनों मिलि यह बिधि कहो, पूछौं सब बिख्यात ॥
सोरठा--दसो बेद की आदि, जो तुम से मैं भाखिया।
कहा पाँच बिख्यात, रहे पाँच सो तुम कहो ॥

॥ चौपाई ॥

सुषम बेद बिधि सबहि सुनाई। साम जजुर और ऋग्गू बताई ॥
और अथरबन भाखि सुनावा। ऐसे पाँच बेद बिधि गावा ॥

रहे पाँच सो भाखि सुनावौ। तिन की आदि अंत समझावौ ॥
और सतनाम आदि हम कहिया। कहौ निरगुन ता से कम भइया ॥
और जोति की बिधी बताई। ब्रह्म बिस्नु कौन बिधि आई ॥
कौन बिधी से बेद लिखाही। जग तब कागद रहै न स्याही ॥
ऐसी भिन्न भिन्न दरसैहौ। तब तुम हम से जाने पैहौ ॥
सब जग लूटि लूटि कर खाई। अब नहिं छोड़ै तुलसी गुसाँई ॥
नैनू स्यामा माना पाँडे। ये सब कहौ बिधी बिधि माँडे ॥
बिन कहे ज्वाब न जाने पैहौ। कासी ढिंढोरा पुनि पिटवैहौ ॥
जग कौ पुन्य दान बिधि साजा। जो सब अपने पेट के काजा ॥
तीरथ थापि चलाई राही। ये सब अपने पेट के ताईं ॥
बितीपात परदोस बताई। ये सब झूठी बात चलाई ॥
एकादसि चौदस और अठमी। एतवार मंगल और नौमी ॥
तीज चतुरदसि करवाचौथी। झूठे बरत बतावै पोथी ॥
जो कोइ करै बरत से प्रीती। ये सब कर्म खानि की रीती ॥
जो कोइ बर्त राह चलै भाई। पुरखा तास नर्क में जाई ॥
गंगा जमुना चारौ धामा। ये सब जैहैं भव की खाना ॥
कातिक और बैसाख अन्हावैं। ये सब नीच जोनि में आवैं ॥
देवल देव पखान पुजावै। ये सब भौसागर भरमावै ॥
राम नाम जो जपै अघाई। जा कौ जनम अकारथ जाई ॥
सिव पूजै और देवी पूजै। नीच होइ नीचा मत सूझै ॥
कथा पुरान जो सुनै अघाई। बार बार भौ भटका खाई ॥
जो जो बाम्हन कहै बिचारा। काल खानि ये जम की जारा ॥
ऐसे पण्डित जाल बिछाई। कोई जीव बचन नहिं पाई ॥
अज्ञानी को बरत बतावा। ज्ञानी को पोथी समझावा ॥
अस अस पण्डित डारी जारा। ता से न उतरै भौ के पारा ॥
ता कौ अब बरतंत सुनाऊँ। भागवत की बिखि में अरथाऊँ ॥

पिरथम पंडित यों कर भाखै । भागवत बिना मुक्ति नहिं राखै ॥
और पुनि भाखि कहै परभावा । जिन जिन कीन्हा तिन तिन पावा ॥
ऐसी कहि कहि कै समझावै । या बिधि सकल जीव भरमावै ॥
माना स्यामा तुमहिं सुनाई । नृग राजा परसंग बताई ॥
ता को पुनि बिधि बिधि अनुसरई । प्रात दान गोसठि सो करई ॥
तिरपित बाम्हन भोजन देवै । यहि बिधि पुन्य जज्ञ सोइ सेवै ॥
ऐसे पुन्य बरत तेहि ठाना । भागवत ऐसी करत वखाना ॥
दई गऊ बाम्हन की आई । सो गोसठि में आन समाई ॥
राजा भूलि और को दीन्हा । बाम्हन बाम्हन झगरा कीन्हा ॥
पुनि तिन स्राप ताहि को दोन्हा । गिरगट देंह राइ ने लीन्हा ॥
याही पुन्य की करौ बड़ाई । अंत जनम गिरगठ कौ पाई ॥
भोजन पुन्य कीन्ह बहुतेरा । किंचित संग न चला तेहि केरा ॥
इतना पुन्य कीन्ह उन भाई । और गया पुनि अंधा चाही[1] ॥
सब गया चौथाई पावै । तौ हमरे परतीती आवै ॥
चौथाई में कछु नहिं पावै । ऐसे बाम्हन पुन्य करावै ॥
ऐसा पुन्य कीन्ह तेहि राजा । ता के आयो कछु न काजा ॥
जिन जिन को तुम पुन्य कराई । वे बपुरे कैसे करि पाई ॥
जग अंधा तुम हूँ पुनि अंधा । या से मचि गया अंधाधुंधा ॥
सूए पुन्य बतावै पावै । कोई मुए की खबर न लावै ॥
झूठहि झूठ रचा सब ठाटा । ता से जगत न पावै बाटा ॥

॥ उत्तर माना और स्यामा पंडितों का । चौपाई ॥

माना स्यामा यों करि बोले । तौ पुनि रचा झूठ का खेलै ॥
व्यास भागवत कही बखाना । सुनै मुक्ति जो होइ निदाना ॥
सुनि या की मैं साखि बताऊँ । सुकदेव कह्यौ परीछित राऊ ॥
सपता सात दिवस उन भाखा । भागवत कहै सुनौ तुम साखा ॥

(१) अन्धा या सूखा कुआ ।

॥ प्रश्न तुलसी साहिब । चौपाई ॥

भागवत तौ पिरथम्म लिखाना । परीछित सुकदेव नाम बखाना ॥
ये पिरथम कहि ग्रंथ बनावा । सुकदेव नृप दोउ ता में आवा ॥
सुकदेव राजहिं कथा सुनावा । ऐसे ब्यास भागवत गावा ॥
ब्यास भागवत लिखी बनाई । पुनि सुकदेव राय समझाई ॥
ये तौ ब्यास पहिले लिखि गयेऊ । भागवत में बरनन करि कहेऊ ॥
को सुकदेब परीछित होई । ता की मुक्ति बताई सोई ॥
पहिले ब्यास ने कथा बनाई । पीछे सुकदेव नृपहिं सुनाई ॥
सुकदेव कथा सुनावन गइया । तब प्रीछित की मुक्ती भइया ॥
ब्यास मुक्ति पहिले लिखि गाई । ता पीछे सुकदेव सुनाई ॥
कौन परीछित मुक्ती पाई । ये तौ बिधी मिली नहिं भाई ॥
ब्यास ग्रंथ में पहिले गावा । तुम ने ये सुकदेव बतावा ॥
वो नृप कौन परीछित होई । ता की ब्यास मुक्ति कहि सोई ॥
ये तौ पीछे जाइ सुनाई । ब्यास ग्रंथ लिखि पहिले गाई ॥

॥ उत्तर माना पंडित । चौपाई ॥

तब माना तुलसी से भाखी । या की बिधी कहौं सुनु साखी ॥
थे अवतार ब्यास तिरकाली । अगमन कही ध्यान ब्रत ताली ॥
या से अगमन भाखि सुनाई । येहि बिधि ब्यास भागवत गाई ॥
जो तिरकाल लखै पुनि भाई । अगम भेद सोइ भाखि सुनाई ॥

॥ बचन तुलसी साहिब । चौपाई ॥

माना यह बिधि बरनि सुनाऊँ । या की पहिली साखि बताऊँ ॥
महादेव ये मंत्र सुनावा । बीजक पारबती मन लावा ॥
सब पंछिन कौ दीन्ह उड़ाई । सुवा अंड इक रहा छिपाई ॥
बन पंछी सब जाति उड़ाई । सुवा अंड इक रहा लुकाई ॥
तब मंत्र इक भाखि सुनावा । पारबती सुनि निद्रा आवा ॥
पुनि पुनि सुवा हुँकारी दीन्हा । महादेव कोप तब कीन्हा ॥
सवा भागि ब्यास त्रिय गर्भा । गर्भ रहा बिधि भाखौ सर्बा ॥

बारा बरस गर्भ में रहिया । यह पुरान बिधि ऐसी कहिया ॥
गर्भ बढ़ा तिरिया अकुलानी । निकसै नहीं मंत्र बिधि जानी ॥
गये भगवान तीर पुनि ब्यासा । ब्याकुल तिरिया गर्भ तिरासा ॥
सींघ भाव जस राई भेवा । माया भिन्न भये सुकदेवा[1] ॥
नारि उठाइ हाथ में लीन्हा । तप को चले कहौं अस चीन्हा ॥
ब्यास मोह उपजा दुख लागा । पुत्र पुत्र कहि पीछे भागा ॥
पुत्र मोह ब्याकुल बहु क्रोधा । तब पुनि कीन्ह बृच्छ ने बोधा ॥
तब तिन का तिरकाल हिराना । गई बुद्धि मति मोह भुलाना ॥
ता कौ कहौ अगम तिन भाखा । बुद्धी गई मोह अभिलाखा ॥
सुकदेव परमहंस नहिं जाना । कस कस कीन्हा अगम बखाना ॥
तिरिया गर्भ पीर के काजा । ब्याकुल सोग मोह उपराजा ॥
तिरकाली भगवान बतावौ । चौबीसन में भखि सुनावौ ॥
सुन माना यह भेद बताई । सुनि के समझि लेउ मन माईं ॥
अब परिछित की बूझौ बाता । और सुकदेव सुनौ बिख्याता ॥
सुकदेव सभा पीछे कीन्हा । परिछित कथा सुनायौ चीन्हा ॥
कथा सुनावन पीछे गयेऊ । मुक्ती तौ पहले होइ गयेऊ ॥
ये सब झूठ झूठ सी होई । अस अस समझि परा बिधि सोई ॥
सुने सुने मुक्ती बर सोई । तौ सब जग बूड़ै नहि कोईं ॥
सुने सुने मुक्ती जो पावै । गुड़ गुड़ कहे मीठ मुख आवै ॥
ता का मैं बरतंत बखानूँ । पण्डित तुम सुनियौ दै कानूँ ॥
माल दिवासर तेजी होई । चिट्ठी में लिखि भेजा सोई ॥
चिट्ठी सुन कर माल लदावा । ता का नफा तिनै पुनि पावा ॥
पढ़े सुने कछु हाथ न आवै । ज्यों बैपारी रीता जावै ॥
सुनि कर करै सोई है गाजी । सुनि सुनि मरि गये कोटिन पाजी ॥

---

(१) जितनी देर सींघ की नोक पर राई ठहर सकती है अर्थात् तत्काल सुकदेव जी माता के गर्भ से बाहर आये ।

मुए मुक्ति की खबर बतावै। मुए जनम काग कौ पावै ॥
ये पंडित तुम्हरो ब्यौहारा। जनम जात जूवा जस हारा ॥

॥ उत्तर माना पंडित। चौपाई ॥

मुक्ती हमरे हाथ न सोई। जो भगवान करै सो होई ॥
मुक्ती तौ भगवान से पावै। जो कोइ उनके सरनै जावै ॥
हम अपंग मारग नहिं जाना। पल में मुक्ति करै भगवाना ॥

॥ श्लोक ॥

मूकं करोति बाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत् कृपालमहं बंदे परमानंद माधवः[1] ॥

हम तो हैं उनकी सहनाई। तन मन बचन परे उन पाँई ॥
हमरे नेत्र दोइ पुनि होई। प्रभु के नेत्र अनेकन सोई ॥

॥ श्लोक ॥

द्वै द्वै लोचन सर्वानां बिद्या त्रय लोचनं।
सप्त लोचन ज्ञानीनां भगवान अनंत लोचनं[1] ॥

हम तौ उन चरनन सरनाई। अरजुन ऊधौ पार लगाई ॥
जैसी ऊधौ की उन कीन्हा। हमहूँ सरना उनकी लीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

सोरठा--तुलसी कहै पुकार, ऊधौ की भइ सो सुनौ।
अरजुन सुनौ बिचार, वै लबार कैसी करी ॥

॥ चौपाई ॥

ऊधो के मित्र बड़े भगवाना। एकादस में कीन्ह बखाना ॥
जिन की मित्र भाव की करनी। प्रीति अधिक कछु जाइ न बननी ॥
जब भगवान धाम कियौ गौना। भाखा ऊधो से कहों जौना ॥
तुम तम करौ बद्रिका जोई। तब ऊधो ने दीन्हा रोई ॥
जब उन अपने प्रान गँवाये। तब ऊधो तप करने आये ॥
उन को मुक्ति न दीन्ही भाई। तुम पुनि मुक्ति कहाँ से पाई ॥
मित्र प्यार कीन्हा बहुतेरा। नहिं उन उनका कीन्ह निबेरा ॥

---

(१) यह दोनों श्लोक मु० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं हैं।

जो उनकी मुक्ती होइ जाती । तौ तप को जाते केहि भाँती ॥
उन की मुक्ति न कीन्ही भाई । तुम भूले केहि लेखे माई ॥
और अरजुन की कथा सुनाई । उनके बड़े मित्र थे भाई ॥
उन बंधुन से जुद्ध करावा । बन्धु मराइ पाप सिर लावा ॥
जज्ञ करा पुनि पाप न छूटा । जबै कृष्न की देंही टूटा ॥
उन से कहा हिवारे जावौ । ता में देंही जाइ गरावौ ॥
पुनि सो परे नर्क के माई । गीता में देखौ तुम जाई ॥
अरजुन मुक्ति न पाई भाई । माँगौ उन से केहि बिधि जाई ॥
कृष्न काल सब जग को खाई । ता कौ जपौ बहुत मन लाई ॥
ऐसी तुम्हरी मती हिरानी । काल से माँगौ मुक्ति निसानी ॥
दोहा--सुनि पंडित मन में गुनो, तुलसी कहत प्रमान ।
ये तौ दरसै यहि बिधी, गीता करत बखान ॥

॥ प्रश्न माना पंडित । चौपाई ॥

तब माना बोले कर जोरे । ये तौ फुरि आई मन मोरे ॥
ऊधो एकादस में गाये । गीता में अरजुन समझाये ॥
मुक्ति न भई तबै तप कीन्हा । येहि बिधि से मोहिं भयो यकीना ॥
माना पंडित बिनती लाई । इक संसय मोरे मन आई ॥
भागवत सुने मुक्ति होइ जाई । अस अस साख सनातन गाई ॥
सो तुलसी मोहिं समझ सुनावौ । या की समझ बूझ समझावौ ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

सुनु माना बरतंत बताऊँ । भागवत बिधि सब साखि सुनाऊँ ॥
पहिले पंडित करत बखाना । भागवत मति बिन मुक्ति न जाना ॥
सुनते सुनते जनम बिताना । मुए भूत का किया बिधाना ॥
पुनि घट साध बनायो साजा । तबहुँ न भयो मुक्ति कौ काजा ॥
किरिया करिके पिंड बनाई । तबहुँ न उन मुक्ती को पाई ॥
गंगा माहिं उड़ाई छारा । तबहुँ न भया जीव निरबारा ॥
दसवाँ करिके मूछ मुड़ावा । तबहुँ न मुक्ति गती को पावा ॥

बाम्हन भोजन पत्र खवाये। मुक्ति बाट तबहूँ नहिं पाये ॥
गया जाइ कै पिंड सँवारा। तऊ न पाया मुक्ती द्वारा ॥
मास पाख छैमासी बरसी। मुक्ति न भई खानि गति परसी ॥
ये सब झूठ मुक्ति की आसा। मुक्ति रहै संतन के पासा ॥
इतनी मुक्ति जुक्ति बतलावै। तबहुँ न प्रानी मुक्ती पावै ॥
अस बिधि कहै भागवत भाई। मुक्ति बताइ के भूत बनाई ॥
और अनेकन जतन करावै। भौ में जाइ मुक्ति नहिं पावै ॥
अस अस भाखा झूठ पसारा। मुक्ति न होइ न होइ उबारा ॥

॥ प्रश्न माना। चौपाई ॥

तुलसी स्वामी मुक्ति न पावा। ये पुरान झूठे गोहरावा ॥
सिम्रित सास्तर झूठ बनावा। ये तौ आदि अंत चलि आवा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब। चौपाई ॥

माना सुनियौ काल पसारा। वो दयाल पद इन से न्यारा ॥
ब्रह्मा बिष्नु काल की जारा। इन सब कीन्हा झूठ पसारा ॥
कर्म कराइ जगत बौरावा। ता से आदि अंत नहिं पाया ॥

॥ प्रश्न माना। चौपाई ॥

माना कहै सुनु तुलसी स्वामी। तुम तौ औरइ और बखानी ॥
मुख से बचन जोई जोइ भाखा। भिनि भिनि वा की दीन्ही साखा ॥
जो जो मुख से भाखि बखानी। ता की निसा दीन्ह सहदानी ॥
जो जो बात कही मुख गाई। सो सो दरपन सी दरसाई ॥
एक भरम मोरे मन आवा। ता को स्वामी भाखि सुनावा ॥
तीरथ धाम बरत अरु पूजा। या में मो कौं कछू न सूझा ॥
पुनि स्वामी इक पूछौं बाता। तीरथ में कछु आवै न हाथा ॥
न्हाय धोय कछु हाथ न आया। तीरथ सब बिधि झूठ बनाया ॥

॥ बचन तुलसी साहिब। चौपाई ॥

सुनु माना तोहि भाखि सुनाऊँ। या की बिधी बिधी दरसाऊँ ॥
कर्म ख्याल सब जाल पसारा। इन सँग से चौरासी धारा ॥
लोमस ऋषी एक जो भइया। भाखा उन सब बिधि बिधि कहिया ॥

उन पुनि तीर्थ बर्त बहु ठाना। तप जप पुन्य अनेक बिधाना ॥
पितु से पूछि मुक्ति की बाता। गंगा का फल कहो बिधाता ॥
गंगा का फल भाखि सुनाई। गंगा आदि मुक्ति की दाई ॥

(लोमस ऋषि) ॥ चौपाई ॥

सहस इकादस गंगा न्हाया। जा से जोनि मच्छ की पाया ॥
अनेक जीव मारि मोहिं खाया। ऐसे बहुत बहुत दुख पाया ॥
जे जे तीरथ सबै अन्हाये। जल जिव जोनि माहिं भरमाये ॥
ऐसी कौन कौन बिधि गाऊँ। जल आसा जल माहिं समाऊँ ॥
ऐसी जुक्ति मुक्ति बतलावौ। भौजल पार उतरि कै जावौं ॥

(पिता) ॥ चौपाई ॥

लोमस ऋषि यह सुनिये भाई। सेवा ठाकुर कीजे जाई ॥
चरनामृत ब्रत साधौ सोई। सहजै में मुक्ती पुनि होई ॥

(लोमस ऋषि) ॥ चौपाई ॥

सहस बरस ठाकुर को सेवा। दूजा जाना और न भेवा ॥
बिधि बिधि ध्यान बिधी से कीन्हा। फल जोनी पाहन की लीन्हा ॥
सेवा सिव कीन्ही बिधि भाँता। फूल पत्र जल अच्छत साथा ॥
येहि बिधि पूजा करी बनाई। अंत जोनि पाहन की पाई ॥
अनेक दिवस पाहन कर आसा। अंत तहाँ पुनि लीन्हौ बासा ॥
ऐसी कहाँ कहाँ की गाऊँ। जेहिं पूजौ तेहि माहिं समाऊँ ॥

(पिता) ॥ चौपाई ॥

पूजौ तुलसी प्रीति लगाई। पीपर में जल नाओ जाई ॥
ऐसी भक्ति करै मन लाई। सहजै में मुक्ती होइ जाई ॥
एक दिया तुलसी पै लावै। सो तौ कोटि जज्ञ फल पावै ॥

(लोमस ऋषि) ॥ चौपाई ॥

सहस तीन तुलसी को पूजा। बृच्छ जोनि पाई येही बूझा ॥
पीपर पूजा बरस हजारा। ता की बिधि भाखौं निरबारा ॥
कानखजूरा देंही पाई। बार बार भौ में भरमाई ॥

(पिता) ।। चौपाई ।।

एकादसी करौ तुम जाई। ता से मुक्ति सहज में पाई ।।

(लोमस ऋषि) ।। चौपाई ।।

सहस बरस एकादसि कीन्हा। अंत जनम माखी कौ लीन्हा ।।
ऐसे बर्त कीन्ह बहुतेरा। ता का सुनु बरतंत निबेरा ।।
पिरथम ऐतवार को कीन्हा। ता से जनम चील्ह कौ लीन्हा ।।
मंगल बहु बिधि बरत रहाई। ता से जनम सुवर कौ पाई ।।
अरु पुनि बरत तीज कौ कीन्हा। कूकर जनम ताहि से लीन्हा ।।
अरु परदोस नेम से कीन्हा। खर कौ जनम ताहि से लीन्हा ।।
बितीपात बिधि से बिधि कीन्हा। जनम जाइ बंदर कौ लीन्हा ।।
नौमी बरत अष्टमी कीन्हा। ता से जनम घूस कौ लीन्हा ।।
अरु अनंतचौदस पुनि कीन्हा। ता से जनम ऊँट कौ लीन्हा ।।
और चतुरथी बरत बखाना। ता से जनम भैंस कौ जाना ।।
और बरत करै झार बनाई। पुनि मुक्ती हम ने नहिं पाई ।।

(पिता) ।। चौपाई ।।

पुन्य गऊ का सब से भारी। या से मुक्ती होइ बिचारी ।।

(लोमस ऋषि) ।। चौपाई ।।

गऊ दान दीन्हा बहुतेरा। जनम मिला जो बकरी केरा ।।
बाम्हन भोजन दिये अघाई। बिच्छू जनम ताहि से पाई ।।
और अनेक पुन्य बिधि कीन्हा। जा से जोनि जोनि लीन्हा ।।
जो तुम कही सभी हम कीन्हा। मुक्ति न पाई रह्यो अधीना ।।
जो जो मुक्ति जुक्ति बतलाई। सो सो सब मैं कीन्ह बनाई ।।

(पिता) ।। चौपाई ।।

लोमस ऋषि मैं कहौं बिचारा। संत सरनि से होइ उबारा ।।
तीरथ ब्रत सब झूठ पसारा। नहिं होइहै या से निरबारा ।।

दोहा--तुलसी कहै बुझाइ, माना पंडित सुन बिधी।
लोमस ऋषि सम्बाद, तीरथ ब्रत बिधि यों कही ।।

।। तुलसी साहिब । चौपाई ।।

सुन माना स्यामा और नैनू । ये सब भाखि सुनाओं बैनू ॥
तीरथ व्रत का सुनौ बिचारा । लोमस ऋषि विधि कीन्ह सँवारा ॥
तीरथ व्रत का ऐसा लेखा । लोमस ऋषि ये सब करि देखा ॥
के सुन कर पंडित घबराना । ज्वाब न आवै मती हिराना ॥

।। माना स्यामा और नैनू । चौपाई ।।

तब तीनौ मिलि बोले बानी । ये बातैं तौ अकथ कहानी ॥
हम तौ वेद बिधी में भूला । ये सब आहि कर्म विधि मूला ॥
तुम तौ स्वामी और सुनावा । वेद बिधी को सब समझावा ॥
सब बिधि भिन्न भिन्न कर भाखी । तब सूझा हमरी निज आँखी ॥

।। तुलसी साहिब । चौपाई ।।

ये तुम्हरी कछु भूल न भाई । या की बिधी कहौं समझाई ॥
सत्तनाम इक साहिब स्वामी । सो निज रहै अगमपुर धामी ॥
तिन के पुत्र निरंजन होई । जा नें रची सकल बिधि सोई ॥
जोति अंस स्वामी से आवा । दोनों मिलि बैराट बनावा ॥
आई जोति निरंजन पासा । निराकार जोती को ग्रासा ॥
जब पुनि पुरुष दीन्ह तेहि स्त्रापा । लच्छ जीव करिहौ नित ग्रासा ॥
जाउ निरंजन होइहौ काला । जग में रचिहौ बहु जंजाला ॥
ऐसा ज्वाब पुरुष मुख डाला । भया निरंजन जग में काला ॥
तीन लोक में रहै समाई । चौथे में नहिं जाने पाई ॥
ऐसा स्त्राप पुरुष ने दीन्हा । काल निरंजन को अस चीन्हा ॥
पुरुष पुत्र जग जाग्रत नामा । ता को हुकम दीन्ह तेहि ठामा ॥
निरंजन काल जोति को ग्रासा । जाहि काटि आवौ हम पासा ॥
जग जाग्रत नख भव पर मारा । पटकि निरंजन जोति निकारा ॥
जग जाग्रत गये अपने धामा । रहिया जोति निरंजन ठामा ॥
दोनों भये एक रस राजी । तीन बार भग भोगे साजी ॥
तीन पुत्र ता ने उपजावा । ब्रह्मा बिस्नु महेस कहावा ॥

ब्रह्मा पिता ध्यान को गयऊ। पायौ न पिता चारि जुग भयऊ॥
जोती मैल काढ़ि जब लीन्हा। रच कन्या गायत्री कीन्हा॥
कन्या ब्रह्मा लेन पठाई। गायत्री ब्रह्मा पर आई॥
गायत्री कहै चलिये भाई। माता तुम कौ लेन पठाई॥
ब्रह्मा कहै कौन बिधि जाई। पिता दरस अजहूँ नहिं पाई॥
माता से ऐसी कहौ साखी। परस्यो पिता देख निज आँखी॥
येहि बिधि हमरी साखि सुनाये। तब तुम्हरे सँग हम चलि जाये॥
गायत्री अस बचन उचारी। कहिहौ झूठी साखि सम्हारी॥
चलौ बेग माता पै भाई। माता तुम को लेन पठाई॥
गायत्री अस बचन सुनइया। तब ब्रह्मा उनके सँग गइया॥
दोनों आये माता पासा। पिता भेद पूछा परकासा॥
पिता दरस माता मैं पावा। दोनों मिलि ये सब्द सुनावा॥
जोती मन में सोच बिचारा। झूठी बातैं करै लबारा॥
वे तो काल कराल कसाई। वा से बचै कौन बिधि भाई॥
जानेउ पिता दरस नहिं पावा। मिथ्या साखि भाखि गोहरावा॥
जोती झलक क्रोध तन ताषा। तब पुनि दीन्ह दोऊ को स्त्रापा॥
गायत्री को स्त्राप सुनाई। बृछ तन धरो केतकी माई॥
ब्रह्मा कुल परपंची जोई। मैला मन बुधि सुधि नहिं होई॥
माता स्त्राप यही बिधि दीन्हा। माना सुन कर करौ यकीना॥
ब्रह्मा स्त्राप जो कहूँ बिचारी। सब मिलि के सुनियौ बिधि सारी॥
तुम्हरा कुल परपंच दुखारी। मति का हीन लोभ संसारी॥
आगे होइहै साखि तुम्हारी। मिथ्या पाप करै बहु भारी॥
प्रगट नेम जो करै अचारा। अंतर मैल पाप बिस्तारा॥
राम कृष्न की भक्ति हृढ़ावै। आप करै सोइ और सिखावै॥
बिस्नु भक्ति से करै हंकारा। ता से परै नर्क को धारा॥
कथा पुरान और समझावै। चालि बेहूद आप दुख पावै॥
इन से और जो सुनिहै ज्ञाना। सो परिहै चौरासी खाना॥

झूठ बेद बिधी बिधि गावै। दछिना कारन गला कटावै ॥
जा को सिष्य करै पुनि जाई। परमारथ तेहि नाहिं लखाई ॥
अपना स्वारथ ज्ञान सुनावै। अपनी पूजा ज्ञान दृढ़ावै ॥
परमारथ के निकट न जाई। स्वारथ हेत सबै समझाई ॥
दोहा--ब्रह्मा को भयौ स्राप, तुम्हरा कुल मिथ्या परै।
झूठ चलावै चाल, उद्र काज नरकै परै ॥

॥ चौपाई ॥

जोति स्राप ब्रह्मा को दीन्हा। तुम्हरा कुल होइ है मति हीना ॥
तुलसी कही भई बिधि मूला। स्राप पाप से ब्रह्मा भूला ॥
स्राप बिधी निरगुन ने जानी। उन पुनि स्राप जोति पर ठानी ॥
द्वापर जुग आवैगा सोई। जब तुम पंच भरतारी[1] होई ॥
सोरठा--अस अस दीन्हौ स्राप, बाम्हन की मति यों गई।
ता से न मानै बात, बुद्धिहीन मानहिं मरै ॥

॥ चौपाई ॥

ता से बाम्हन की मति मैली। मन और बुद्धि पाप से फैली ॥
देवी बकरा गला कटावै। मछरी मास बहुत बिधि खावै ॥
ऐसा कर्म करै सोइ भाई। का को कहिये और कसाई ॥

॥ श्लोक ॥

कामार्त्तस्य कुतो लज्जा, निर्द्धनस्य कुतः क्रिया।
सुरापस्य कुतः शौचं, मांसाहारे कुतो दया[2] ॥

॥ चौपाई ॥

या से तुम को परै न सूझा। तुम्हरी मति अस भई अबूझा ॥

सम्बाद मानगिरी सन्यासी के साथ

॥ चौपाई ॥

सब पंडित मिलि दीन्ह बिचारा। माना स्यामा नैनू हारा ॥
सुन कर परमहंस इक आवा। मानगिरी सन्यासी नाँवाँ ॥

---

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक में "पंच औतारी" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।

(२) कामी शरम को, निर्धन क्रिया को, शराबी सफाई को और गोश्तखोर दया को नहीं जानता।

पंडित से झगरा सुनि पावा । सो बिधि सुनि हम रे पर आवा ॥
ईसुर ब्रह्म एक नहिं मानै । बेद बेदांत नहीं कछु ठानै ॥
गीता की मानैं नहिं भाई । है कोइ ऐसा तुलसी गुसाँई ॥
ये सुनि के हम रे ढिंग आये । जहँ सब पंडित बैठि रहाये ॥

॥ परमहंस उबाच ॥

मानगिरी बोले अस बाचा । जो बेदांत कहै सो साचा ॥
जो बेदन ने कही बखाना । गीता सत्त कहै परमाना ॥
एक ब्रह्म है सब के माइं । और कोई दूजा है नाहीं ॥
ये बेदांत कहै गोहराई । गीता में भगवान सुनाई ॥
मानगिरी कहै सुनो गुसाँई । मैं बेदांत कहौं समझाई ॥
आतम सब में ब्रह्म बखाना । ता को नाम निरंजन जाना ॥
सो तो ब्रह्म हमीं हैं भाई । हम को छाँड़ि अंत नहिं पाई ॥
सब जग हम हम माहिं समानौ । हम से कोई और नहिं जानौ ॥
जग भूला आँखी नहिं सूझै । केवल ब्रह्म न हम को बूझै ॥
ये संकल्प जग जीव भुलाना । यों अज्ञानी जग्त कहाना ॥
बालक रूप ब्रह्म को भाखा । त्याग सबै कोपीनै राखा ॥
ब्रह्म रूप सब जग्त बिचारै । येहि बिधि आतम ब्रह्म निहारै ॥
जाग्रत सुपन सुषोपति त्यागी । तुरियातत्त रहै अनुरागी ॥
चारौ बानी को हम जाना । परा पसंता भेद बखाना ॥
और बैखरी भाखि सुनाऊँ । सो सब जग में प्रगट दिखाऊँ ॥
पाँचौ मुद्रा कहो बखानी । चाचरि भूचरि खेचरि जानी ॥
और अगोचरि उनमुनि जाना । सब जोगिन का भेद बखाना ॥
परमहंस ऐसी बिधि बोला । तुलसी तोल स्वाल अस खोला ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

कहै तुलसी स्वामी सुन बाता । परमहंस बेदान्त सनाता ॥
अब हम तुम से पूछैं बाता । ब्रह्म कहो तुम आदि सनाता ॥
तुम तो ब्रह्म आप को जाना । रहो तत पाँच सरीर बिधाना ॥

तुम पुनि पाँच तत्त कस आया। रूप रेख बिन रहौ अकाया ॥
पिता बीर्ज माता रकतानी। तब सरीर की रचना ठानी।
माता पिता तत्त नहिं रहिया। तब कहँ हते सोई निज कहिया ॥
पाँच तत्त बैराट सरीरा। तब तत नहीं बसौ केहि तीरा ॥
पाँच तत्त में केहि बिधि आये। तत्त नहीं तब कहाँ रहाये ॥
धरनी अगिनि अकास न रहिया। पानी पवन भवन नहिं भइया ॥
तब तुम कहाँ रहे सोइ भाखी। तब की आदि बताओ साखी ॥
तुम कहो सब में हमीं समाना। जब नहिं रहे सुन्न असमाना ॥
नहिं सरीर बैराट बनाया। पाँचौ तत्त न उपजी माया ॥
जब बेदान्त हतो नहिं भाई। तब नहिं गीता कथा बनाई ॥
जब तो तुम्हीं तुम्हीं तुम रहिया। गीता साखि कौन बिधि कहिया ॥
नहिं सरीर नहिं लिखनेहारा। कागद स्याही न कलम सँवारा ॥
तब बेदांत कहाँ था भाई। सो ता की तुम साखि बताई ॥
तब तो तुम्हीं तुम्हीं निज रहिया। तब की बात बिधी बतलइया ॥
तब हमरे मन साँची आवा। बिना भेद सब झूठ कहावा ॥
अब गीता की साख सुनावो। और बेदांत बिधी बिधि गावो ॥
जो जो कही बचन बिधि भाखी। सो सो समझि लीन्ह सब साखी ॥
पाँच तत्त रचि बास बनावा। कर्म भोग फिरि भौ में आवा ॥
तुम ता को कहौ ब्रह्म बखानी। ये तो भरमै चारो खानी ॥
ये बैराट खानि भौ माहीं। ब्रह्मा बिस्नु कहौ कहँ रहहीं ॥
पाँच तत्त नहिं रहत सरीरा। तब कहँ हते कहौ केहि तीरा ॥
प्रथमहि कहौ कहाँ से आया। नहिं तब तन बैराट बनाया ॥
तब की कहो सकल बिधि गाई। तो तुलसी के मन में आई ॥

॥ परमहंस। चौपाई ॥

ये बेदांत कहे सब साखी। गीता की तुम एक न राखी ॥
गीता कहै ईश्वर सब माईं। आतम ब्रह्म बेदांत बताई ॥

ये तुम्हरे मन में नहिं आई। सब को तुम ने दीन्ह उड़ाई ॥
ब्रह्म सनातन सब में भाखा। सो तो तुमने एक न राखा ॥

॥ तुलसी साहिब। चौपाई ॥

ब्रह्म ब्रह्म सब तुमहिं बखानौ। आदि ब्रह्म की कछू न जानौ ॥
भाखौ ब्रह्म कहाँ से आया। कहौ ब्रह्म को कौन बनाया ॥
जग नहिं हता ब्रह्म कहँ रहिया। कहौ ब्रह्म को कौन बनइया ॥
ऐसा परमहंस मत गावौ। नहीं ब्रह्म की आदि बतावौ ॥
बिन सतसंग भेद नहिं जाना। करता ब्रह्म नहीं पहिचाना ॥
साखी--नर पंछी मन पींजरा, ज्ञान पंख भयो नास।
सतसंग बृछ पाये बिना, ब्रह्म अकास न पास ॥

॥ चौपाई ॥

अब गीता की साखि बताऊँ। तुम भगवान कहनि मुख गाऊँ ॥
गीता में पांडो बिधि भाखी। कौरो जुद्धि कही सब साखी ॥
अरजुन ज्ञान धनुष चढ़वावा। सब कौरो का नास करावा ॥
पुनि फिर तिनहिं हिवारे गारे। नर्क माहिं अरजुन को डारे ॥
मित्र बड़े उन के दुख पावा। और जीव की कौन चलावा ॥
साखी--कृष्न समीपी पंडवा, गरे हिवारे जाइ।
लोहे को पारस मिलै, तौ काहे काई खाइ ॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी सुन बचन हमारा। आदि अंत बेदांत बिचारा ॥
सास्तर ब्रह्मा बेद बनाई। और बैराट ब्रह्म बिधि गाई ॥
आतम और परमातम बानी। कहूँ ब्रह्म की आदि बखानी ॥
जो बेदांत ज्ञान गति गाई। सास्तर आतम अंत सुनाई ॥
नाम भेद भिनि भिनि बतलाऊँ। गुन गति ज्ञान गिरा समझाऊँ ॥
ठेका ठामी ठौर ठिकानी। पिंड ब्रह्मंड की करौं बखानी ॥
जहँ से ब्रह्म आतमा आई। सो पद द्वार सुनाऊँ गाई ॥
भिनि भिनि कर बरतंत सुनाऊँ। मानगिरी सुन ज्ञान लखाऊँ ॥

दोहा--ब्रह्म बेद बैराट की, भिनि भिनि भाखूँ आद।
आतम अंत बेदांत को, बूझैं बिरले साध ॥ १ ॥
बेद मता मत काल ने, कीन्हा झूठ पसार।
ब्रह्म बेद बेदांत से, संत मता है पार ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी सुनि कै चित लाऊँ। आदि अंत बिधि बरनि सुनाऊँ ॥
नसिहत-नामा भाखि सुनाऊँ। या की बिधि ता में दरसाऊँ ॥

नसीहत-नामा

॥ रेखता ॥

एरी अली खोज खबर धसि धाई ॥ टेक ॥
गवन भवन भिन भेद लखाऊँ, तत मत जोति नाद नहिं जाई ॥
अलख जोति बिन खलक समाना, जाना जिन जिन गाई ॥१॥
नाम निवास बास सत लोका, जेहि का कँवल तेज सुन माईं।
परमातम पद सुन परे धामा, सुन धुनि आतम आई ॥२॥
आतम बास बसै सरवर में, वहि तत बास अकास कहाई।
अली अकास चारो तत कीन्हा, तत बैराट बनाई ॥३॥
सुन नभ वार तार सुर्त स्यामा, ता में आतम मनहिं कहाई।
पँच इंद्री कर्म ज्ञान पाँच में, दस बस फाँस फँसाई ॥४॥
इंद्री कर्म असुभ बस बाँधे, सुभ करिकै गति ज्ञान गिराई।
सुभ अरु असुभ कर्म मन मारग, ये दोउ भव भुगताई ॥५॥
आसा बास बसे कर्मन में, फिरि फिरि जनम जोनि भरमाई।
यहि बिधि आवागवन भवन में, फिरि फिरि खानि समाई ॥६॥
यहि बिधि संत सभो सब गावैं, सब्द साखि सब बरनि सुनाई।
बूझै न मूढ़ चलै मन मत के, सत सत बचन उड़ाई ॥७॥
आतम ज्ञान ब्रह्म बन बैठे, कहते लाज न मन बिच आई।
द्वैत भाव भर्म मन बरतैं, अद्वैती दरसाई ॥८॥

तजि मन मूढ़ कूड़ पाखंड को, झूर झूठ सब धोखा खाई।
तन कर नास बास चौरासी, फिरि फिरि जम धरि खाई ॥ ९ ॥
या से मान मनी मति डारौ, लख गुरु गगन गवन बतलाई।
सूरति डोर लील बिच खोलौ, फोड़ि कै पछिम समाई ॥१०॥
लीला सेत स्याम सुन पारा, न्यारा द्वार दीदा दरसाई।
जहँ परमातम आतम नाहीं, खिरकी पुरुष लखाई ॥११॥
जहँ सतलोक मोष पर बेनी, मंजन करिके सहज अन्हाई।
चढ़ि कर द्वार देखि सत साहिब, सुभ और असुभ नसाई ॥१२॥
जे जे बंद फंद कर्मन के, सत्त पुरुष दरसत नसि जाई।
यहि बिधि भाँति सुरति से खेलै, सतगुरु कहत बुझाई ॥१३॥
सतसँग रंग दीन दिल पावै, मोटे मन तन बूझ न आई।
जिन मन नीच कीच सम कीन्हा, उनकी दृष्टि समाई ॥१४॥
जोगी भेष भर्म मन ज्ञानी, परमहंस बैरागी गुसाँई।
करि करि खोज रोज पचि हारे, वा की खबर न पाई ॥१५॥
सास्त्र संग बिधि साखि बिचारै, बिधि बेदांत ब्रह्म बतलाई।
बेद नेति कर कहत पुकारा, ब्रह्मा आपु हिराई ॥१६॥
बिधि बैराट कँवल नाभी में, खोजत खोजत फिर फिरि आई।
ब्रह्मा भूले बेद कहै नेता, ये दोउ भेद न पाई ॥१७॥
ये बेदांत ब्रह्म कस गावै, या को कहौ किन बूझ बताई।
या के गुरु का भेद बतावौ, बिन गुरु कहौ कस गाई ॥१८॥
पिरथम बन बैराट बनावा, ता पीछे ब्रह्मा उपजाई।
ब्रह्मा पीछे बेद बिधाना, ये सब खोज न पाई ॥१९॥
बेद बिधी से सास्तर कीन्हा, ता पीछे बेदांत बनाई।
ये तौ ब्रह्म ब्रह्म कहि गावैं, वा ने नेति सुनाई ॥२०॥
या की साखि समझ नहिं आवै, झूठ साच निरनै न बुझाई।
सोल पोल बिधि कोइ न बिचारै, टेकै टेक चलाई ॥२१॥

ब्रह्मा बाप बैराट कहावै, जा में आतम ब्रह्म समाई ।
सूर चंद दोउ नैना वा के, राहु बिमान सताई ॥२२॥
ब्रह्मा बाप आप भये रोगी, भोग रोग नित राहु सताई ।
उन का बाप आप दुख पावै, ता का दुख न छुड़ाई ॥२३॥
बेद भेद सँग जग्त उबारै अस अस पंडित कहत सुनाई ।
पीछे सास्तर नाती कहिये, आजा दुर्ग दुख पाई ॥२४॥
जग बेदान्त ब्रह्म कहै ज्ञानी, राहु बैराट ब्रह्म दुखदाई ।
पंडित बूझ सूझ समझावौ, ये कहौ समझ सुनाई ॥२५॥
तन को तेल फुलेल रसिक में, खान पान पोसाक सुहाई ।
नित नित सैल करै बागन में, तन नित माँजि अन्हाई ॥२६॥
ये सब मौज चौज सुख संगा, तन हबूब बुल्ले सम जाई ।
पल पल घट घड़ियाल पुकारै, जग जम सोंटे खाई ॥२७॥
लेत हिसाब ज्वाब नहिं आवै, आतम ज्ञान गैल गिरि जाई ।
ब्रह्म बूझि बैराट दुखारी, परलय माहिं नसाई ॥२८॥
ता के भीतर चेतन बासी, परलय तन तत कहाँ रहाई ।
ब्रह्मा नसि और बेद नसाना, जब का भेद सुनाई ॥२९॥
पिरथम पवन अकास नसाना, ब्रह्मा बेद बैराट नसाई ।
कागद स्याही न लिखनेहारा, तब की बिधि समझाई ॥३०॥
बिधि बैराट नास सब जानै, आगे भेद न कहत सुनाई ।
जेहि जेहि पूछौ सोइ अस गावै, आगे न खबर सुनाई ॥३१॥
काल जाल सब चालि बखानै, बेद नेति सास्तर समझाई ।
या में जोग ज्ञान फँसि मारे, सब को भर्म भुलाई ॥३२॥
अगम निगम पर नेक न पावै, बेद नेति आतम कहि गाई ।
सोइ सास्तर सुनि मुनि जन गावै, आगे भेद न पाई ॥३३॥
आतम ब्रह्म अबाच बतावैं, कहत दृष्टि नहिं देत दिखाई ।
बिन देखे बरनन जिन कीन्हा, नहिं परमान कहाई ॥३४॥

कहत बेद कोइ देख न पावै, पुनि अबाच कहौ कौन सुनाई।
बिन बाचा सास्तर नहिं भयऊ, अरी अबाच किन गाई ॥३५॥
वह अबाच कहौ बोलत नाहीं, बाचा बिन किन खबर सुनाई।
सुनि कहौ बेद नाद बाचा से, या को भेद बताई ॥३६॥
पूछौ जित जो अबाच बतावै, बाचां में बरतंत सुनाई।
बाचा बचन न जाने पावै, पूछौ कहौ सुनाई ॥३७॥
बाक बचन कहौ बात न मानै, बिन बाचा में कहौ समझाई।
सुनि द्वैति बिन बाच न आवै, बचन बिना दरसाई ॥३८॥
ये सब काल जाल जग बाँधा, ज्ञानी पंडित भेष भुलाई।
मान मनी मद अहं बतावै, यहि बिधि जाल जमाई ३६॥
पढ़ि पंडित रुजगार चलावै, कुटम्ब काज परपंच बसाई।
ता में ज्ञानी जगत अबूझा, सो सुनि समझि सुनाई ॥४०॥
यहि बिधि बुधि बेदन सँग बाँधी, संत मता बेदन सम गाई।
नाद बेद से संत नियारे, सो नहिं कोइ गति पाई ॥४१॥
ये अबाच पर और अबाचा, सो कोइ संत भेद बतलाई।
उन देखा सुर्त से चढ़ि चौथे, सो सब संत सुनाई ॥४२॥
पिरथम एक अनाम अबाचा, वा की गति मति संत जनाई।
सत्त लोक पर नाम अबाचा, सो पद चौथे माई ॥४३॥
परमातम पद सुन पै अबाचा, सुनि धुनि नीचे आतम आई।
मानसरोवर तेहि कर धामा, सोइ आकास समाई ॥४४॥
जड़ अकास चेतन जिन्ह कीन्हा, स्याम सेत बिच नाम गुसाँई।
सोइ निज नाम निरंजन भाखा, बेद अबाच सुनाई ॥४५॥
सहस कँवल मध धाम कहावै, ता पर तीनि अबाच रहाई।
ब्रह्मा बेद बैराट न पावै, ऋषि मुनि भ्रम मन माई ॥४६॥
सास्तर मिलि पुनि आतम गावा, काल की कला अबाच सुनाई।
पंडित पढ़ि गुनि ज्ञान गठाने, या से जग बौराई ॥४७॥

निरगुन कंज राह नहिं पावै, संत सुरति से नित नित जाई ।
जो वाहि देस भेस के भेदी, जिन जिन खबर जनाई ॥४८॥
उनको जग नास्तिक ठहरावै, बोल बचन उनके न सुहाई ।
वे पुनि चढ़ि चढ़ि अगम निहारैं, बिधि सब कहत सुनाई ॥४६॥
काल निरंजन बाच अबाचा, कहत नाद बिच बेद बनाई ।
आतम तमा अबाच कहावै, येहि बिधि काल जनाई ॥५०॥
संत मता कछु और पुकारै, आतम जीव मानसर माई ।
परमातम सुन खिरकी पारा, संतन देख जनाई ॥५१॥
आगे सत्तलोक चौथे में, सो अबाच सत पुरुष कहाई ।
जहँ नहिं निरगुन बेद बिचारा, ये सब वार रहाई ॥५२॥
चौथे पार अनाम अमाया, नाम न रूप अगम गति गाई ।
सो सब संत करैं दरबारा, ये गति बिरले पाई ॥५३॥
ये गति धाम अगमपुर ठामा, जाहि देत जो जाइ जनाई ।
या की साखि बेद नहिं जानै, संत कृपा से पाई ॥५४॥
संत सरन बिन पंथ न पावै, सतगुरु गैल खेल खुलि गाई ।
मन होय छोट मोट छल छाँड़ै, तब सत सुरति लखाई ॥५५॥
सत मत रीत जीत जब जानै, ज्ञान मान मद दूरि बहाई ।
मन और कर्म बचन बुधि[1] साँची, काँची कुबुधि उठाई ॥५६॥
संत दयाल चाल जब चीन्है, लीन दीन दिल लेत लगाई ।
सब अस भाँति जाति पक[2] परखै, तरकै तन बिच जाई ॥५७॥
वे अन्तर घट घाट बिचारैं, कर कर फैल गैल नहिं पाई ।
कूड़ कपट सब झारि निकारैं, जब रस राह लखाई ॥५८॥
सत मत सुरति निरति नित न्यारी, सारी समझ बूझ बतलाई ।
लील सिखर पट परदे माहीं, पल पल मनहिं लगाई ॥५६॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "बिधि" है जो सही नहीं मालूम पड़ता है । (२) पक्ष ।

काग भसुंड धाम धसि पावै, कँवल कंज करिया के माईं।
ता पर सेत सुरति सत द्वारा, चढ़ चढ़ सुन्न समाईं ॥६०॥
सुनि धुनि ताल तरँग आतम जिव, पछिम दिसा दिस देत दिखाई।
खिरकी खोल अबोल अबाचा, सो रचि जीव जनाई ॥६१॥
ताल निहार पार चलि आगे, सुन्न सिखर फाटक में जाई।
तहँ कहुँ ताक भाख दोउ द्वारा, पारब्रह्म पद पाई ॥६२॥
सुरति सैल जहँ खेल निहारी, लख लख गगन अंड अरथाई।
जा बिच सुरति सिरोमनि पेली, ज्यों चींटी सम जाई ॥६३॥
अस भसुण्ड भिन अंड निहारा, राम रमा मुख जाइ समाई।
रामायन लखि साखि सुनाऊँ, हिये हग देत दिखाई ॥६४॥
चर और अचर खानि सब सारी, भिन भिन भेद भसुंड सुनाई।
काग भसुंड काया के माहीं, लखि जिन जानि जनाई ॥६५॥
या से परखि पार पद न्यारा, पारै चढ़ि चल चस्म चिन्हाई।
सुनि धुनि आतम पद परमातम, इनके पार लखाई ॥६६॥
ये दोउ वार पार सतलोका, परदा तीनि फोड़ जोइ जाई।
सूरति सब्द पुरुष पद पारा, जब घर अपने आई ॥६७॥
ता पर धाम नाम नहिं न्यारा, तारा चन्द न सुरज रहाई।
धरती न गगन गिरा नहिं बानी, जानी जिन जिन गाई ॥६८॥
पिंड ब्रह्मंड न अंड अकारा, न्यारा अली अलोक कहाई।
जहँ सब संत पंथ पद माहीं, नित नित सैल समाई ॥६९॥
सतगुरु साथ हाथ हित पावै, संत सरन स्रुत सार लखाई।
सतसँग संत बिना नहिं पावै, फिर फिर कर्मन माईं ॥७०॥
आगे सुन गुन ज्ञान बताऊँ, जीव कर्म बस ब्रह्म बँधाई।
ब्रह्म जीव बस कर्म बिचारै, जड़ सँग ज्ञान गिनाई ॥७१॥
अब या की सुन साखि सुनाऊँ, भागवत मत बिधि ब्यास बताई।
जब बैराट ठाट ब्रह्म भइया, देवन जाइ उठाई ॥७२॥

नहिं बैराट उठा बिन आतम, पुरुष अंस आतम जब आई ।
मध बैराट जीव आतम अस, तब तन सुरत उठाई ॥७३॥
अंस जीव आतम कहौ कहँ से, आया सो बिधि खोज कराई ।
सो स्वामी का कहो कहँ बासा, जिन से अंस जो आई ॥७४॥
अंस बुन्द आतम तन बासा, सिंध खोज कहुँ अंत रहाई ।
यहि बिन संत पंथ नहिं पावै, फिरि फिरि जड़ तन माई ॥७५॥
बिन साखी संध फंद न टूटै, छूटै न ज्ञान जो कोटि कराई ।
बिन बिधि सुरति सिंध नहिं पावै, बिन सिंध बुन्द बहाई ॥७६॥
चेतन जड़ तन गाँठि बँधानी, छूटे बिन बस ब्रह्म न भाई ।
छूटै गाँठि गगन चढ़ चीन्है, तब बिधि ब्रह्म कहाई ॥७७॥
जैसे गगन रबी रहै बासा, किरनि भास भूमी पर आई ।
जब सब सिमटि भास गति रबि में, बुन्दा सिंध कहाई ॥७८॥
नास अकास सूर सब बिनसै, तब रबि रहै कहौ कहँ जाई ।
सो ठेके का खोज लगावौ, वो पद कौने ठाई ॥७९॥
सास्तर ने गति गैल भुलाई, ब्रह्म बाँधि जड़ जीव रहाई ।
यहि बिधि भूल फूल मन मारग, या से गति नहिं पाई ॥८०॥
ज्ञान ठान दृढ़ सास्तर भाखा, परमहंस ज्ञानी उरझाई ।
चारि अवस्था भाखि बताई, सो सब कहत सुनाई ॥८१॥
सब ज्ञानी तुरिया गति गावैं, पूछौ भेद सो मन मुख माई ।
जाग्रत सुपन सुषोपति तुरिया, तुरियातीत सुनाई ॥८२॥
जाग्रत सुपन का भेद न बूझै, सुषोपति तुरिया मुख से गाई ।
तुरियातीत रीत मन मारग, आगे भेद न पाई ॥८३॥
बानी चार लार कर बोलै, परा पसंता मधिमा भाई ।
बैखरी बिधि बोलै सुन बोली, कँवल पेट के माईं ॥८४॥
यहँ से बानी उठत बतावैं, बिष्ठा बास बतावत आई ।
जहँ से बानी उठत अबाचा, वहँ का खोज न पाई ॥८५॥

ज्ञान तीन गति गाइ सुनावैं, रेचक पूरक कुम्भ कहाई ।
ये सब ज्ञानी बानी बूझैं, मन सँग बुद्धि बहाई ॥८६॥
मन बिधि ज्ञान बुद्धि बस देखै, ब्रह्म ब्रह्म कर कहत सुनाई ।
आतम को अद्वैत बतावै, या से बूझ न आई ॥८७॥
आतम कुबुध बंध कर्मन में, ब्रह्मज्ञान गति कहत बुझाई ।
रहै अज्ञान बास जड़ देंही, ता बिच गाँठि बँधाई ॥८८॥
ठट कर ठाट ठट जब सूरति, अंडा फोड़ अगम गति पाई ।
सब्द सिंध सूरति चढ़ जावै, जब पावै पद आई ॥८६॥
तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिं जानै, संत सत्त कहि कहत सुनाई ।
मैं मति नीच कीच सम किंकर, सतसँग समझ सुनाई ॥६०॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी बूझौ बिधि सारी । संत अंत गति सब से न्यारी ॥
गीता ज्ञान ब्रह्म समझावा । अरजुन छले नर्क बिच नावा ॥

॥ प्रश्न परमहंस । चौपाई ॥

सुन कर परमहंस अस बोला । ये बरनन गीता में खोला ॥
पुनि अस भेद सबै सब गावा । सास्तर सुध आतम समझावा ॥
सब ने सब में ब्रह्म बताई । और बेदांत साखि समझाई ॥
या को मरन जिवन कछु नाईं । आवै नहीं नहीं कहुँ जाई ॥
सोई सनातन सत्त समाना । आतम आवागवन न जाना ॥
ऐसे सास्तर साखि बतावै । सबहि महातम अस अस गावै ॥
दोहा--परमहंस अस भाखेउ, सब में ब्रह्म समान ।
सब सास्तर अस अस कहै और स्रुति कहत पुरान ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

सास्तर सब में ब्रह्म बखाना । पाँच तत्त जड़ चेतन जाना ॥
जीवत पाँच तत्त से छूटै । गगन चढ़ै असमान जो फूटै ॥
वहँ से अधर और है धामा । जीवत चढ़ै जाइ वोहि ठामा ॥
पाँच तत्त जड़ चेतन छूटै । ऐसे छढ़ै अधर तब टूटै ॥

वोही धाम धसि जाइ समाना । अस चढ़ि चलै ब्रह्म जेहि माना ॥
ज्ञान दृष्टि से बूझै कोई । सो नहिं ब्रह्म ब्रह्म गति होई ॥
जो जो सास्तर करत बखानी । उनने सब सास्तर की जानी ॥
स्वाँस उपर का भेद न जाना । ता की कहा करै परमाना ॥
सास्तर में इस लोक बखाता । वे उस लोक का मरम न जाना ॥
पढ़ि पढ़ि सुनि सुनि साखि बतावैं । ब्रह्म अदेख देख बतलावैं ॥
तब तो हमरे मन में आवै । और बात मन नाहिं समावै ॥

॥ प्रश्न परमहंस । चौपाई ॥

परमहंस पंडित से बोले । तुलसी और और बिधि खोले ॥
परमहंस मन में सकुचाना । ये तो भेद हमहुँ नहिं जाना ॥
पंडित परमहंस भये एका । तुलसी भाखा अगम अलेखा ॥
हमरी बुद्धि न पहुँचै ताहीं । ये तो अकथ कथा गति गाई ॥
परमहंस कहै ब्रह्म समाना । सुन पंडित ये और बिधाना ॥
मन में पंडित करत बिचारा । परमहंस अंतर मन हारा ॥
तुलसी स्वामी अगम बखानी । सब पंडित मिलि ऐसा जानी ॥
परमहंस पंडित भये दीना । तब हमसे पूछन इक कीन्हा ॥
तुलसी स्वामी मन को रहिया । पूछौं ब्रह्म कहाँ से भइया ॥
पवना कहौ कहाँ से आई । हम को यह बिधि कहौ बुझाई ॥
या के परे और कछु भाखा । जा की संध बतावौ साखा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

पंडित परमहंस सुन ज्ञानी । अब या का हम भेद बखानी ॥
सत्त पुरुष इक साहिब स्वामी । ता सुत भया निरंजन जानी ॥
मन का नाम निरंजन होई । आतम ब्रह्म कहै सब कोई ॥
मन से पवन भई उतपानी । तब मन बँधा देह में आनी ॥

॥ प्रश्न पंडित और परमहंस और उत्तर तुलसी साहिब ॥

(१)

स्वामी जी—(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द, (४) ब्रह्म, (५) जीव, (६) सीव कौन हैं ?

(१) मन चकोर है, (२) पवन घोर, (३) शब्द अडोल, (४) ब्रह्म निरंजन काल, (५) जीव काल कर्म बंध, (६) सीव कर्ममुक्ता।

(२)

स्वामी जी—(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द, (४) ब्रह्म निरंजन, (५) जीव, (६) सीव, (७) प्रान, (८) हंस, (९) काल, (१०) सुन्न का कहाँ बासा है ?

(१) मन और (२) पवन का नभ गगन में बासा है, (३) शब्द का हृदय अधर में, (४) ब्रह्म निरंजन का सुषमना में, (५) जीव का काया में, (६) सीव का मन में, (७) प्रान का निरंतर में, (८) हंस का गगन पार, (९) काल का कलह में, (१०) सुन्न का अनूप में।

(३)

स्वामी जी—(१) जब गगन नहीं था तब मन कहाँ रहता था, (२) जब नभ नहीं था तब पवन कहाँ रहता था, (३) जब हृदय नहीं था तब शब्द कहाँ रहता था, (४) जब निरन्तर नहीं था तब प्रान कहाँ रहता था, (५) जब ब्रह्मंड नहीं था तब ब्रह्म कहाँ था, (६) जब गगन नहीं था तब हंस कहाँ रहते थे, (७) जब कलह नहीं था तब काल कहाँ था, (८) जब अनूप नहीं थी तब सुन्न कहाँ था, (९) जब काया नहीं थी तब जीव कहाँ था, (१०) जब जीव नहीं था तब सीव कहाँ था ?

तब (१) मन ज्योति सरूप में रहता था, (२) पवन निराकार में, (३) शब्द ओंकार में और ओंकार की उत्पत्ति के पहिले सुन्न में रहता था, (४) प्रान निरजन में और निरंजन की उत्पत्ति के पहिले अविगत में रहता था, (५) ब्रह्म सत्तनाम में, (६) हंस सहज में, (७) काल सुन्न में, (८) सुन्न ररंकार में, (९) जीव सीव में, (१०) सीव निरंजन में।

(४)

स्वामी जी--(१) निरंजन, (२) मन, (३) सीव, (४) जीव, (५) हंस, (६) काल, (७) शब्द, (८) पवन, इनकी उत्पत्ति कहाँ से हुई ?

(१) अक्षर से उत्पत्ति निरंजन की हुई, (२) निरंजन से मन की, (३) मन से सीव की, (४) सीव से जीव की, (५) हंस और (६) काल की सत्तनाम से, (७) शब्द की नाम से, और (८) पवन की सुन्न से।

(५)

स्वामी जी--ये सब कहाँ कहाँ समाते हैं—(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द अनाहद, (४) प्रान, (५) ब्रह्म, (६) हंस, (७) जीव, (८) सीव, (६) निरंजन, (१०) जोति ?

(१) मन जोति सरूप में समाया, (२) पवन निराकार में, (३) शब्द अनाहद ओंकार में, (४) प्रान अविगत में, (५) ब्रह्म हंस में, (६) हंस सत्त नाम में, (७) जीव सीव में, (८) सीव निरंजन अथवा ब्रह्मांडी मन में, (६) निरंजन जोति में, (१०) जोति अलख में, अलख अबिनाशी में, अबिनाशी अगम में, अगम सत्तपुरुष में।

सत्तनाम चौथे पद स्थान, आवै न जाय, मरै न जन्मै।

शेष तीन लोक बैराट स्थान ब्रह्म, बैराट, आतमा, भगवान मन, औतार, बेद, ब्रह्मा, बिस्नु, शिव, जक्त उदर में रहे, ब्रह्म नाश, बैराट नाश, आतमा नाश, जोति नाश, निराकार नाश, आकार नाश, ब्रह्मा बिष्नु शिव नाश, ओंकार शब्द नाश, बेद शब्द नाश, अंडा तीन लोक सीव नाश।

(६)

स्वामी जी--तीन लोक बैराट नाश होकर कहाँ समाते हैं ?

ब्रह्म निराकार जोति तीन लोक बेराट नाश होकर सुन्न में समाता है। सुन्न नाश होकर महासुन्न में समाता है। महा सुन्न के परे सत्तलोक है जहाँ सत्त साहिब रहता है, यहाँ प्रलय और महाप्रलय की गम नहीं।

सत्त साहिब की लहर से महासुन्न होता है, महासुन्न से सुन्न, सुन्न से शब्द, शब्द से ब्रह्म, ब्रह्म से जोति निराकार, निराकार जोति से मन, मन से जक्त, ब्रह्मा बिष्नु शिव बेद सब उत्पन्न होते हैं।

॥ प्रश्न परमहंस । चौपाई ॥

स्वामी तुलसी पूछौं बाता। औतारी नसि कहाँ समाता ॥
तीनि लोक जस नास कहाई। ब्रह्मा नसि कहौ कहाँ समाई ॥
सिव बिस्नू और बेद नसाना। ये सब नसि कहो कहाँ समाना ॥
पारब्रह्म और जोति नसाना। निराकार नसि कहाँ समाना ॥
सुन्न नसी पुनि कहाँ समानी। मन भया नास कहौ कहँ को जानी ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

दस औतार नास जो भइया। सो ये सब मन माहिं समइया ॥
और सब जगत नास जब होई। सो सब मन के माहिं समोई ॥
ब्रह्मा बिस्नु और महादेवा। नास भये मन मत के भेवा ॥
मन को नास सुनौ पुनि भाई। मन-नसि गया निरंजन माईं ॥
नास निरंजन ब्रह्म समाना। ब्रह्म जो नसा सब्द में जाना ॥
सब्द नास जो सुन्न समाना। सुन्न नास महासुन्न में जाना ॥
यहँ से उतपति परलय होई। आगे भेद न जानै कोई ॥
वहँ से आवै यहँ लै जावै। आगे भेद न कोई पावै ॥
सत्तलोक महासुन्न कहाई। तीनि लोक सब सुन्न में जाई ॥
तीनि लोक करता नहिं जावै। वा पद को कोइ संत समावै ॥
वो पद है संतन कर सारा। वहँ कोइ संत करै दरबारा ॥
निराकार जोती नहिं जावै। जम और काल गम्म नहिं पावै ॥
दस औतार न पहुँचै भाई। ब्रह्मा बिस्नु की कौन चलाई ॥
सत्तलोक सत साहिब साँई। मिलै कोइ संत अंत जब पाई ॥
संत दयाल दया जो करई। लख लख भेद जीव निस्तरई ॥
संत अगम कोइ बिरले पावा। होइ दीन जब भेद लखावा ॥

अपना ज्ञान मान मत डारै। नीच होइ सोइ सहज निहारै ॥
दीनदयाल नाम उन केरा। दीन होइ जब होय निबेरा ॥
मोट उँचाई अपनी मानै। अपना ज्ञान ऊँच कर ठानै ॥
ता से संत नजर नहिं आवैं। नीचा होइ ताहि दरसावै ॥
संत दयाल बड़े सुखदाई। निमिख एक में देत लखाई ॥
नीचा होय होय निरबारा। ज्ञान मान बस फिरै लबारा ॥
ज्ञानी मान खानि की रीती। संत कृपा से भौजल जीती ॥
संत कृपा जेहि हेत निहारैं। कोटिन कर्म काटि कै डारैं ॥
संतन की गति अगम अपारा। ब्रह्म राम दोउ लखैं न पारा ॥
ब्रह्म राम से नाम नियारा। सो घर है संतन कर प्यारा ॥
सत्त नाम सतलोक दुहेला। जहँवाँ संत करैं नित केला ॥
जा को सतगुरु संत लखावैं। एक पलक में लोक दिखावैं ॥
उन की कृपा दृष्टि जब होई। दीन होय पद पावै सोई ॥
परमहंस सुनि कै भय माना। तुलसी तो कछु और बखाना ॥
ये तो भेद पार पद न्यारा। ऐसा मन में किया बिचारा ॥
तुलसी संत भेद बिधि गाई। संत भेद सब अगम लखाई ॥
बिना संत नहिं होइहै न्यारा। संत सरन से उतरै पारा ॥
परमहंस ये मन में जानी। ये तो अकथ अगाध बखानी ॥
ये बेदांत वेद में नाईं। गीता सास्तर भेद न पाईं ॥
संत मता कछु इनसे न्यारा। सो तुलसी ने कही बिचारा ॥
हम अपने मन त्याग बिचारा। ये सब आहि कर्म भौ जारा ॥
त्यागै जोइ जोई पुनि पैहै। बार बार भौसागर ऐहै ॥
बिन को पीन बस्त्र बिन रहिया। अपने कर भोजन नहिं खइया ॥
मुखहिं न बोला मौनि बिचारा। ये सब झूठ फैल[1] पसारा ॥
ऐसी बूझ बात मम लावा। तब चरनन पर हाथ चलावा ॥
तुलसी पकरि हाथ तेहि लीन्हा। परमहंस पूछै इक चीन्हा।

(१) फल।

॥ प्रश्न परमहंस । चौपाई ॥

परमहंस पूछत सकुचाया । परमहंस मत कब से आया ॥
सो तुलसी मुख भाखि सुनाई । या की आदि अंत बतलाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

मानगिरी सुन बात हमारी । काल रचा बैराट सँवारी ॥
पाँच तत्त से पिंड बनाया । पुरुष अंस चेतन जब आया ॥
जड़ चेतन दोउ गाँठि बँधानी । सोइ निज ज्ञान जानि मन मानी ॥
मौन रहे मुख बोलत नाईं । करि कपड़ा कोपीन बनाई ॥
बालक रूप ब्रह्म मन जानै । दुइत भाव और नहिं आनै ॥
निराकार ने बेद उपाया । ज्ञान ब्रह्म बिधि भाखि सुनाया ॥
मन से ब्रह्म आप को माना । जड़ चेतन की गाँठि न जाना ॥
करि करि कर्म रहे भौ खाना । ता को कहौ ब्रह्म कस माना ॥
ये मत काल जाल परचावा । ब्रह्म ज्ञान जड़ गाँठि बँधावा ॥
ता से आदि अंत नहिं जाना । बोलै सब में हमीं समाना ॥
भौजल काल जाल उरझाया । परमहंस मत यहि बिधि आया ॥
आदि मते का खोज न पावै । बिना संत कहौ को दरसावै ॥
मानगिरी कहै सरना लीजे । आद अरु अंत भेद मोहिं दीजे ॥
चरन सरन में राखौ स्वामी । हमरी भूल भेद हम जानी ॥
परमहंस गति दीन बिचारी । दीन्हा उन आपा सब डारी ॥
कपड़ा फारि कोपीन बनाई । परमहंस को ले पहिराई ॥
सूरति संध पंथ दरसावा । चौथे पद की राह बतावा ॥
भेद भाव और ताला कूँची । दीन्ही परमहंस को सूची ॥
चरन सीस धरि पंथ सिधारे । बिधी देख पंडित सब हारे ॥
परमहंस गति दीन निहारे । तब पंडित मन माहि बिचारे ॥
अपनी गती गती गति धारी । दीन होय मग भवन सिधारी ॥
नैनू स्यामा माना भाई । पंडित तीन रहे ठहराई ॥
कुटी राति रह कीन्ह बसेरा । राति रहे दिन भया सबेरा ॥

भोर भये तेहि संध लखाई । तीनों गिरे चरन पर आई ॥
भेद भाव बिधि सब दरसावा । सीस टेकि कै भयन सिधावा ॥
कासी नगर पहूँचे जाई । जहँ कबीर चौरा नियराई ॥
पहुचे पहर दिवस भयो भ्याना । गये कबीर चौरा अस्थाना ॥
चौरा ऊपर पहुँचे आई । फूलदास महंत गोहराई ॥

सम्बाद फूलदास कबीर पंथी के साथ

॥ फूलदास उवाच । चौपाई ॥

फूलदास पंडित से बोलेउ । तुलसी बचन बिधी बिधि खोलेउ ॥

॥ पंडित उवाच । चौपाई ।

माना महंत से कहै बुझाई । फूलदास सुनियो चित लाई ॥
तुलसी गत मत कहौं बिचारी । उन सम मता नहीं संसारी ॥
साध संत मत भये अनेका । तुलसी सम हम एक न देखा ॥
मत तुम्हरा हमहूँ पुनि जाना । तुलसी मता अगाध बखाना ॥
सुनि महंत तन तमक समानी । को कबीर सम करत बखानी ॥
खुद कबीर अविगति से आया । पुरइन पात वो भया अकाया ॥
सत्त पुरुष की आयस लाये । जग में जीव नेग मुक्ताये ॥
उन सम मता न जानो भाई । होइहै यह कोई साध गुसाँईं ॥
हम पूछैं सोइ भेद बतावै । फूलदास के मन जब आवै ॥
जो कबीर मुख अपने भाखा । सो बिधि देखौं अपनी आँखा ॥
सत्त लोक की करै बखाना । पूरा साध ताहि हम जाना ॥
सत्त सत्त जो सत्त कबीरा । उन भाखा अदबुद मत हीरा ॥
आदि अंत उन भाखि सुनावा । सो तुलसी पै कहँ से आवा ॥
तुम पंडित जानौ नहिं भाई । तुम को ज्ञान दीन्ह समझाई ॥
हमरे सममुख बात न आवै । एक सब्द में देह धुजावै ॥
अब हम उनको देखब जाई । केहि बिधि ज्ञान कहै समझाई ॥
पंडित कहै भोर तुम जइये । हम अपने घर से पुनि अइये ॥
पंडित उठि मारग को लीन्हा । घर को गवन आपने कीन्हा ॥

पुनि घर पहुँचे अपने आई । करी जुगति तुलसी जो बताई ॥
निसि दिन सुरति निसाना लावै । निरखि परै तुलसी पै आवै ॥
फूलदास भोरहि चलि आई । पूछत कुटिया तुलसी गोसाँई ॥
पूछत पूछत हिरदे पाई । उन पुनि कुटी दीन्ह बतलाई ॥
हम पुनि जानि साध कोइ आवा । आदर भाव करन मन लावा ॥
तब सुखपाल पास नियरानी । तुलसी गति मति दीन बखानी ॥
लारै भीर भार बहु भारी । चौर ढुरै सुखपाल सवारी ॥
जब निज चालि कुटी पर आवा । उठे चरन पर सीस चढ़ावा ॥
आदर भाव चरन लिये दोनो । साल प्याल को कियो बिछौनो ॥
आदर भाव दीन गति गाई । मैं मति नीच साध सरनाई ॥
बड़े भाग साधू के सरना । कुटी पुनीत भई तुम चरना ॥
स्वामी गवन कहाँ से कीन्हा । भाखौ नाम कहौ अस चीन्हा ॥

॥ प्रश्न फूलदास । चौपाई ॥

फूलदास तब बचन बखाना । सत्त कबीर पंथ अस जाना ॥
फूलदास महंत अस नामा । कासी कबीरचौरा अस्थाना ॥
महिमा सुनि पुनि हमहूँ आये । दरस कीन्ह सुख मन उपजाये ॥
फूलदास तब बचन उचारा । गुरू पंथ बिधि कहौ बिचारा ॥
को है गुरू पंथ को कहिये । कौन मते के साध कहइये ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

संत गुरू और पंथ न जाना । येही संत पंथ हित माना ॥
दूजा इष्ट न जानौ कोई । संत सरनि नित सुरति समोई ॥

॥ प्रश्न फूलदास । चौपाई ॥

संत गुरू बिन पंथ न होई । अपना गुरुमत भाखौ सोई ॥
सतगुरु बिना ज्ञान नहिं आवै । सतगुरु बिना भेद नहिं पावै ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब । चौपाइ ।

कहौ कैसे गुरु भेद लखावै । कौन राह से पंथ बतावै ॥
ता की बिधी कहौ तुम साखी । सो किरपाल दया करि भाखौ ॥

हम अजान कछु मरम न जाना। तुम हो साधू परम निधाना ॥
तुम को कस सतगुरु दरसावा। भाखि भेद सोइ मोहि सुनावा ॥
मैं अति दीन दया कर कीजे। होउ दयाल भेद पुनि दीजै ॥

॥ उत्तर फूलदास। चौपाई ॥

तुलसीदास सुनो चित लाई। पंथ भेद मैं कहौं सुनाई ॥
सत्तपुरुष रहै पुहप मँझारा। संपुट कँवल खुले तेहि बारा ॥
सत्तपुरुष तेहि बचन उचारा। ज्ञानी बेगि जाउ संसारा ॥
काल देत जीवन को त्रासा। सत कबीर काटो जम फाँसा ॥
पिरथम चले जीव के काजा। सतजुग चले पास धर्मराजा ॥
धर्म देखि अस बोले बानी। जोगजीत कित कीन्ह पयानी ॥
तब कबीर अस कही पुकारी। जीव काज मैं जगत सिधारी ॥
सत्त पुरुष अस कहा बुझाई। जग में जाइ जीव मुकताई ॥
धर्मराइ अस बचन सुनाई। तुम भौसिंधु बिगारन चाही ॥
तब कबीर बोले अस बाता। तुम्हरी करहुँ प्रान को घाता ॥
पुरुष बचन अब देहौ टारी। तौ हम तुम को देहिं निकारी ॥
मन में सोचि धरम सकेचाना। तब कबीर जग कीन्ह पयाना ॥
सतजुग नाम मुनिंद्र धरावा। चौका करि जिव लोक पठावा ॥
चौका करि परवाना पावै। छूटै जीव मुक्ति को जावै ॥
और त्रेता जुग कीन्हा चौका। जीव मिले बहु किये बिसोका ॥
द्वापर जुग की कहौं बखानी। धुंधल सुपच खेवसरी जानी ॥
मुक्ति लोक जिव किये पयाना। अस अस जीव मुक्ति को जाना ॥
चौका करि परवाना पावा। नरियर मोड़ि तिनुका तुरवावा ॥
कलजुग नाम कबीर कहाये। पुरइनि सेत पान पर आये ॥
कासी नगर कीन्ह कर काया। नूरा नीमा के घर आया ॥
बालक जानि चीन्ह नहिं पाये। कई दिवस अस बीति सिराये ॥
एक दिवस धर्मदास चितावा। चौका करि परवाना पावा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब । चौपाई ॥

भर्म एक मो रे उपजाई । चौका बिधी कहौ समझाई ॥
चौका कीन्ह दीन्ह परवाना । सो बिधि मो से कहौ बखाना ॥
धर्नदास जस चौका कीन्हा । जस कबीर वा को कहि दीन्हा ॥
सो बिधि मो को बरनि सुनावौ । दया भाव यह बिधि दरसावौ ॥

॥ उत्तर फूलदास । चौपाई ॥

तुलसीदास सुनो तुम काना । चौके का मैं कहौं बिधाना ॥

॥ छन्द ॥

निज भाव आरति सुनो खेवसरि, तोहि कहौं समझाइ कै ॥१॥
मिष्ठान पान कपूर केरा, अष्ट मेवा लाइ कै ॥२॥
पाँच बासन सेत बस्तर, कदली पत्र अछेदना ॥३॥
नारियर और पुहप सेतहि, सेत चौका चंदना ॥४॥

सोरठा--और आरति अनुमान, सब बिधि आनो साज तुम ।
पुंगीफल परमान, सब्द अंग चौका करौ ॥

॥ चौपाई ॥

और बस्तु आनो सुठि पावन । गऊ घिर्त और सेत सुहावन ॥
ऐसे सिष्य सिखापन मानै । ततखन सब बिस्तार जो आनै ॥
सेत चदरवा दीन्हेउ तानी । आरति कीन्ह जुगति बिधि ठानी ॥
चौका पर बैठक जब लयऊ । भजन अखण्ड सब्द धुनि भयऊ ॥
पाँच सब्द का दल जब फेरा । पुरुष नाम लीन्हो तेहि बेरा ॥
नरियर मोड़त बास उड़ाई । सत्त पुरुष को जाइ जनाई ॥
छिन में पुरुष परस पद आये । सकल सभा उठि आरति लाये ॥
पुनि आरति बिधि दीन्ह मड़ाई । तिनुका तो रे जल अचवाई ॥
सोइ सिष हाथ दीन्ह जब पाना । पावै पान सोइ लोक पयाना ॥
सब्द अंग दीन्हो समझाई । सिष्य बूझि कै सुरति लगाई ॥
पहुँचे लोक अगम के द्वारा । चौका बिधी कबीर पुकारा ॥
येहि बिधि जीव करै जो चौका । जा का मिटि गया संसय सोका ॥

॥ तुलसी साहिब । चौपाई ॥

तुलसिदास मन में मुसिकानी । मौन रहे कछु कही न बानी ॥

॥ प्रश्न फूलदास । चौपाई ॥

फूलदास बिधि कहै सुनाई । कहो तुलसी कछु मन में आई ॥
कहै तुलसी नहिं बूझ बयाना । फूलदास मन में रसियाना ॥
तुलसी रीस ताहि पहिचानी । दीन होइ जोरे जुग पानी[1] ॥
फूलदास अस कहै बिचारी । तुलसी कैसे मौन सम्हारी ॥
चौका कबीर भाखि बतलावा । तुम्हारे मन कछु एक न आवा ॥
सत्त कबीर जो बिधी बताई । सो हम तुमको भाखि सुनाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

कहि कबीर जो चौका गावै । सो बिधि कहो तो मन में आवै ॥
दासकबीर जो कही बखाना । सो बिधि चौका है परमाना ॥
वा का भेद बिधी बिधि गावै । तब तुलसी के मन में आवै ॥
उन पुनि चौका कौन बताया । तुम ने कौन बिधी ठहराया ॥
नरियर उन पुनि कौन बतावा । मोड़ि तास जो बास उड़ावा ॥
तुम बजार से नरियर लावा । ता की बिधि तुम हमें सुनावा ॥
जो कबीर नरियर फरमावा । सो तो तुम्हरी बूझ न आवा ॥
सिलिपिलि दीप से नरियर लाये । ता के पाँच फूल बतलाये ॥
पाँच फूल का नरियर होई । ता को भेद बतावो सोई ॥
सिलिपिलि दीप से नरियर आया । ता के पाँच फूल बतलावा ॥
वोही दीप जलखंडी राजा । ता से आना नरियर साजा ॥
सो नरियर का भेद बतावै । तब तुलसी के मन में आवै ॥
नरियर बास उड़ावत जानो । ता की बिधि तन भीतर मानो ॥
जो जो मुख से संतन भाखा । सो काया के भीतर राखा ॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ हैं एका । होइहै नरियर पिंड बिबेका ॥
ता की बिधी भेद दरसावो । सो बिधि हमको भाखि सुनावो ॥

(१) दोनों हाथ ।

पान प्रवाना भाखा लेखा । ता का मन में उठै बिसेखा ॥
बेचै बरई पान बतावा । सो परवाना मन नहिं आवा ॥
अंबू सागर देखौ जाई । नरियर पान की बिधी बताई ॥
चौथा हाथ पान बतलावा । सो कबीर अपने मुख गावा ॥
चौथा हाथ पान बतलावौ । सो परवाना भाखि सुनावौ ॥
वो भी काया में कहुँ होई । संत कृपा से पावै सोई ॥
अठ मेवा तुम भाखि सुनावा । छुवारा दाख बदाम मँगावा ॥
ये हमरे मन में नहिं आवै । कही कबीर सो भाखि सुनावै ॥
कबीर बिधी अठ मेवा भाखो । पुरुष आठ मेवा कहौ साखी ॥
और कपूर उन भाखि सुनावा । तुम दुकान बनिये से लावा ॥
वो कपूर काया के माई । ता की बिधि कोइ संत बताई ॥
गऊ घिर्त जो भाखि बतावा । सो तुम दही दूध मथि लावा ॥
सो कबीर बिधि और बतावा । गो इन्द्री का घिर्त कहावा ॥
कदली पत्र कहा उन गाई । काया में साद्दष्ट दिखाई ॥
कदली पत्र छेदन बतलावा । काटि पेड़ तुम खंभ गड़ावा ॥
कदली छेदन कौन बखाना । तुम ता की बिधि नहिं पहिचाना ॥
बासन पाँच कबीर बतावा । तुम ताँबा पीतर मँगवावा ॥
पाँचौ बासन काया माई । करता ठठेरे आपु बनाई ॥
सो बासन का कहौ बिचारा । तब जिव उतरै भौजल पारा ॥
तुम जो बस्तर सेत सुनावा । धोया कपरा आनि मँगावा ॥
बस्तर सेत कबीर बखाना । सो बिधि तुमने नहिं पहिचाना ॥
संत सरन सेवा चित लइहो । कोई साध बिरले से पइहो ॥
पुंगीफल उन भाखि सुपारी । ता का मरम न जानि बिचारी ॥
निकरै पवन सुपारी माहीं । सो फल पुंगी चौका गाई ॥
पवन सुपारी सन्तन पासा । दीन होय पावै निज दासा ॥
पाँच सब्द चौका उन भाखा । भिनि भिनि भेद बतावौ ता का ॥

एक सब्द काया के माईं। और चारि का भेद बताई ॥
चारि चारि बिधि कौन ठिकाना। न्यारा न्यारा कहा मकाना ॥
न्यारी न्यारी बिधि बतलइया। पाँचौ सब्द कबीर सुनइया ॥
चौका कीन्ह सब्द धुनि गाजा। कहौ सब्द केहि ठाम बिराजा ॥
और चार की बिधी बतावै। तब तुलसी के मन में आवै ॥
सेत चदरवा दीन्ह तनाई। सो कबीर ने कहा बताई ॥
कपड़ा तानि चदरवा कीन्हा। कही कबीर सो बिधि नहिं चीन्हा ॥
आरति करन साज बतलाई। सूरत रित रति मरम न पाई ॥
आवै सुरति सब्द रित माहीं। सो कबीर ने भाखि सुनाई ॥
चौका कौन ठिकाने कीन्हा। ता की राह रीति नहिं चीन्हा ॥
कही कबीर चौका सोइ साजा। जहँवाँ सब्द अखंडित गाजा ॥
चौका माहिं सब्द तुम गाई। स्वाँस थकै खंडित होइ जाई ॥
आठ पहर चौसठ घड़ि गाजा। या बिधि सब्द अखंडित साजा ॥
ता चौके का करौ बयाना। सो कबीर मुख आप बखाना ॥
कही कबीर सोई बिधि हेरै। पाँच सब्द के दल को फेरै ॥
सो दल सब्द कौन केहि ठामा। या की बिधि भिनि भाखि बखाना ॥
कौन ठिकान पाँच दल फेरा। पुरुष नाम केहि ठीके हेरा ॥
नरियर मोड़त बास उड़ाई। सो नरियर मोड़ा केहि ठाईं ॥
नरियर बनिये हाट मँगावा। सो नरियर मन में नहिं आवा ॥
नरियर मोड़त बास उड़ानी। सो कहो बातैं ठीक ठिकानी ॥
नरियर मोड़त बास उड़ाई। तुरत पुरुष के दरसन पाई ॥
सो ततवर कहौ पुरुष दिखाना। सो ठीके का करौ बयाना ॥
नरियर ऐसे कबीर बतावै। मोड़त छिन पद पुरुष दिखावै ॥
तुम तो नरियर मोड़े अनेका। उमर गई पुनि पुरुष न देखा ॥
चौका करि परवाना लीन्हा। तन बीता पुनि पुरुष न चीन्हा ॥
मिलन कबीर आज बतलावा। पूछै कोइ नहिं भेद बतावा ॥
कहा कबीर जीवत कर लेखा। तन बीता सुपने नहिं देखा ॥

परवाना सत लोक पठावै । जिवत मिलै न मुए कोइ पावै ॥
कह कबीर छिन लोकै जाई । सो परवाना भेद न पाई ॥
सत कबीर परवाना भाखी । सो तुम्हरी सूझा नहिं आँखी ॥
तिनुका तोरि के जल अचवाई । ये बिधि तुमन भेद बतलाई ॥
तिनुका तुरत कबीर न गावा । तिनुका कौन मरम बतलावा ॥
सिष के हाथ पान पुनि दीन्हा । कौन पान भाखा उन चीन्हा ॥
चौधा हाथ पान बतलावा । तुम बरई की हाट मँगावा ॥
पावै पान सो लोक पयाना । ये कबीर ने करी बखाना ॥
तुमहूँ पान लिये हैं हाथा । देखा कहौ लोक बिख्याता ॥
जोइ जोइ कहौ देखि दृग अपना । हाल मिला कहौ कहौ न सुपना ॥
जाना बिधि बिधि पाइ न होई । पाये कहैं कबीर बिलोई ॥
सब्दै अंग कबीर बुझाई । सिष्य बूझि के सुरति लगाई ॥
पहुचे सिष्य अगम के द्वारा । चौका सुरति कबीर पुकारा ॥
निरत कबीर द्वार दृग भाखा । सूरति सब्द मिलै सिख साखा ॥
सूरति सब्द मिलै चढ़ि चाँपा । घर लिपाय चौका तुम थापा ॥
नौतम चौका द्वार लिपाई । ये कबीर चौका नहिं गाई ॥
चौका नौतम भेद बतावौ । तब कबीर का गाना गावौ ॥
जो कबीर बिधि भाखा चौका । सो मेटै जिव संसय सोका ॥
देखो तुम अपने मन माहीं । संसय सोक अनेक सताई ॥
चौका करै सोक नहिं आवै । ये तौ सोक अनेक सतावै ॥
चौका कहौ कौन है भाई । ता से संसय सोक नसाई ॥
करि करि चौका लोक सुनावै । छिन छिन संसय सोक मिटावै ॥
ये चौका परतीत दृढ़ाया । सो तुलसी के मन नहिं आया ॥
चौका करि पावै परवाना । एक पलक में लोक पयाना ॥
लोक बिधी सिष आइ बखानै । सो चौका मोरे मन मानै ॥
चौका पान अनेकन खाया । बपुरे कोई लोक नहिं पाया ॥

चौका करिके साख बतावै । जीवत कोई लोक नहिं पावै ॥
चौका करिके जन्म सिराना । अब मरने का भया ठिकाना ॥
मूए पर मुक्ती नहिं पावै । ये कहौ लोक कौन बिधि जावै ॥
जो कबीर ने चौका गाया । सो चलि आज लोक निज पाया ॥
जो कछु पंथ कबीर चलाया । पंथ भेद कोइ मरम न पाया ॥
पंथ कबीर जौन बिधि भाखी । सो ता की बिधि सूझि न आँखी ॥
पंथ कबीर कौन बिधि गावा । गये कबीर सोइ मारग पावा ॥
पंथ नाम मारग कौ होई । मारग मिलै पंथ है सोई ॥
बिन मारग जो पंथ कहावा । सो उन नहीं पंथ को पावा ॥
पंथ कबीर सोई है भाई । गये कबीर जेहि मारग जाई ॥
ये नहिं पंथ कहावै भाई । चेला करि सिष राह चलाई ॥
ये सब जाति पाँति कर लेखा । या से गुरु सिष तरत न देखा ॥
अब कबीर की साख सुनाई । जो कबीर अपने मुख गाई ॥
पुरइनि सेत पान कियौ चौका । चीन्हो पुरइनि छाँड़ो धोका ॥
पुरइनि सेत का खोल लगावौ । ढूँढ़ि ताहि पर चौका लावौ ॥
तुम धरती पर चौका ठाना । पुरइनि सेत कबीर बखाना ॥
ये तौ बिधी मिली नहिं भाई । कही और तुम और चलाई ॥
ये तुम बनिया हाट लगावा । कहा कबीर सो मरम न पावा ॥
जो कबीर ने बिधी बताई । सब्द राह मारग समझाई ॥
सब्द चीन्ह कर बूझि बिचारा । केहि बिधि सब्द कहै निरबारा ॥
जा को कहिये साधु सुजाना । सब्द चीन्ह सोइ बूझै ज्ञाना ॥
सोई साध बिबेकी होई । कहा कबीर पद बूझै सोई ॥
सब्द पंथ सब राह बतावै । भिन्न भिन्न बिधि बिधि दरसावै ॥
कोऊ न बूझै सुरति लगाई । चौका पट्टा औरहि गाई ॥
सब कहि भिन्न भिन्न दरसाई । सो पथिन की दृष्टि न आई ॥
पंथ और मग औरै जाई । कही कबीर सो राह न पाई ॥
अब कबीर मुख साखि सुनाऊँ । फूलदास सुनि मन में लाऊँ ॥

चौका राह पंथ दरसाऊँ। कहि कबीर मुख सब्द सुनाऊँ॥
तुलसी सब्द कबीर सुनाई। फूलदास सुनि सुरति लगाई॥

॥ मंगल १ ॥

खोजो साध सुजान, सो मारग पीउ का।
परख सब्द गहो सरन, मूल जहँ जीव का॥ १॥
भौजल अगम अपार, लहर बिकरार है।
कठिन ये पाँचा मगर, बीच जम जार है॥ २॥
इंद्रादिक ब्रह्मादिक, पार न पावहीं।
गुरु बहियाँ कड़िहार, जो पार लगावही॥ ३॥
निरखि पकरि कड़िहार, तो घर पहुँचावही।
देत नाम की डोरि, तो दुख बिसरावही॥ ४॥
बैठि के आनँद महल, परम गुन गावही।
सुखमन सेज जगाइ, तो पिया रिझावही॥ ५॥
बिन जल लहर अनूप, तो मोती झिलमिलै।
देखि छत्र उँजियार, तो हंसा हँस मिलै॥ ६॥
अग्र जोति उँजियार, तो पंथ सिधावही।
कोटिन भान निछावर, आरति साजही॥ ७॥
का लिखि दीन्हे पान, तो तिनुका तोरई।
का नरियर के मोरे, जो जम धरि बोरई॥ ८॥
सत लिखि दीन्हे पान, सो तिरगुन तोरई।
सुरति फल बरमूल, सो नरियर मोरई॥ ९॥
नरियर भेद अगम्म, संत जन मोरई।
कहै कबीर तेहि जाचौ,[1] तो बंदी छोरई॥१०॥

॥ मंगल २* ॥

तेरो संगी निकरि गयो दूरि। सोहागिल आइ मिलौ ॥टेक॥
आया सँदेसा आदि घरै का। लिये सब्द टकसार॥ १॥

(१) माँगो। (*) यह शब्द मु० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है।

सतगुरु घाट अगम तोहि चढ़ना । चढ़न के पंथ सिधार ॥ २ ॥
नवएँ धाम खोलिये कुंजी । दसएँ गुरु परताप ॥ ३ ॥
चौका चार गुप्त हम कीन्हा । ता का सकल पसार ॥ ४ ॥
कह कबीर धर्मदास से । ये चौका है निरधार ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

ये कबीर चौका अस भाखा । मूल बृच्छ तजि पकरौ साखा ॥
पंथ राह चौका अस जाना । सोइ कबीर-पंथी को माना ॥
कही कबीर सो राह उठाई । अपनी मन मत राह चलाई ॥
झूठा पंथ जगत सब लूटा । कहा कबीर सो मारग छूटा ॥
कहा कबीर जीवत निरवारा । तुम लै उलटी फाँसी डारा ॥

॥ प्रश्न फूलदास । चौपाई ॥

सुनकर फूलदास सकुचाना । तुलसी बचन सत्त कर माना ॥
तुम कबीर बिधि भाखी रीती । या में एक न कही अनीती ॥
जो कबीर ने पंथ चलाई । सोही तुमने राह बताई ॥
साहिब ने एक बानी भाखा । धरमदास कुल दीन्ही साखा ॥
बंस बयालिस तुम्हरे होई । अटल राज भाखा पुनि सोई ॥
ऐसी सब्द साखि सब गावैं । और ग्रंथ ये भेद बतावैं ॥
अस कबीर अपने मुख भाखा । अटल बयालिस बंसी साखा ॥
या की तुलसी कस कस भइया । कहौ बुझाइ कैसी बिधि कहिया ॥
कहि कबीर ने बंस बखाना । सो कहो तुलसी केहि बिधि जाना ॥
बंस बयालिस अटल बतावा । कस कस धरमदास सोइ गावा ॥
या की बिधि बिधि भेद बतइये । सो तुलसी बरतंत सुनइये ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

बंस बयालिस भाखि सुनाऊँ । मुख कबीर बिधि में समझाऊँ ॥
जो कबीर मुख भाखे बैना । ता की बिधी सुनाऊँ सैना ॥
काया बीर कबीर कहाई । सब्द रूप है घट के माईं ॥
ता को नाम कबीर कहाई । सो कबीर है जग के माईं ॥

चौथे पद से सब्द जो आवै। सत कबीर सोइ नाम कहावै ॥
निज निज पद से सब्द जो आवै। धरमदास तेहि नाम कहावै ॥
काया बीर कबीर कहाई। धरमदास ये मन है भाई ॥
एक सब्द और एक कबीरा। धरमदास मन भया अनीरा ॥
धरमदास को पंथ पतावा। धरमदास मन सब्द समावा ॥
ता की पंथ राह बतलाई। ये कबीर मुख अपने गाई ॥
काया बीर कबीर कहावा। धरमदास मन को दरसावा ॥
बंस बयालिस मन के भाई। ता की बिधी कहूँ समझाई ॥
चालिस बंस बास मन केरा। इकतालिस स्रुत सार बसेरा ॥
बिधी बयालिस सब्द बखाना। ऐसे बयालिस अटल कहाना ॥
ये कबीर मुख भाखि सुनावा। तुम कछु और और ठहराया ॥
मन और सुरति सब्द में जावै। अस अस ब्यालिस अटल कहावै ॥
मन और सुरति सब्द भया मेला। अस कबीर भाखा निज खेला ॥
ग्रंथ माहिं पुनि देखो साखी। ये कबीर मुख अपने भाखी ॥
अब आगे का कहूँ बखाना। फूलदास सुनियो दे काना ॥
भिनि भिनि भाखूँ भेद बुझाई। आदि अंत सुन गुन मन माइँ ॥
अगम निगम भिनि भिनि कर भाखी। कह कबीर स्रुति समझो वाकी ॥
औरौ और संत सब गाये। जोइ जोइ अगम पंथ पद पाये ॥
जिनकी सुरति अगमपुर धाई। तिन तिन की पुनि साखि सुनाई ॥
कही कबीर सोई पिरथम भाखा। छूटै तिमिर होय अभिलाखा ॥
सुन और महासुन के पारा। जहँ सो सार सब्द बिस्तारा ॥
येहि अलोक कब्बीर लखावा। ता पीछे सतलोक बतावा ॥
सुन और महासुन्न उन गावा। हम अनाम निःनाम सुनावा ॥
सत्त पुरुष सतलोक कहाये। ता को हम सतनाम सुनाये ॥
सोला सुत[1] कब्बीर बखाना। हम ने सोला निरगुन ठाना ॥

---

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक में "सुत" की जगह "सुनि" है लेकिन आगे की कड़ी से "सुत" ही शुद्ध जान पड़ता है।

सोला माहिं निरंजन पूता। हम भाखा निरगुन मजबूता ॥
सोई निरंजन मन भया भाई। जा ने जग रचना उपजाई ॥
हम निरगुन से सरगुन भाखा। मन को सरगुन कहि कर राखा ॥
मन सरगुन सब जग उपजाई। कही कबीर तुलसी पुनि गाई ॥
मनहिं कबीर निरंजन गावा। ब्रह्मा बिस्नु सिव पुत्र बतावा ॥
निरगुन से सरगुन मन भाखा। हम पुनि तीनि गुनन में राखा ॥
तीनों गुन मन से उपजाई। ब्रह्मा बिस्नु सिव गुन के नाईं ॥
सरगुन मनहिं निरंजन कहिया। मनहिं निरंजन निरगुन भइया ॥
ये कबीर बिधि तुलसी कहिया। सोइ कबीर निज मुखहि सुनइया ॥
संत मता बिधि एकहि जाना। नाम कही बिधि आनहि आना ॥
ता स तुम को बूझ न आवै। अनि अनि नाम ध रे बिधि गावै ॥
सत साहिब सतनाम सुनावा। सार सो सब्द अनाम कहावा ॥
निरगुन नाम निरंजन जाना। राम कहा सोइ मनहिं बखाना ॥
कहि कहि संतन भाखि सुनाई। सोइ कबीर अपने मुख गाई ॥
और संत और बिधि समझाई। येहि कबीर और बिधि गाई ॥
मत पहुँचे पहुँचे पर एका। जो अबूझ सो बाँधे टेका ॥
जिन जिन अनुभौ भाखि सुनावा। अगम पंथ बिधि एकहि गावा ॥
पुरइनि पात कबीर सुनाये। पुरइनि सोई संत सब आये ॥
पुरइनि सेत कबीर सुनावा। सोइ सब सेत संत बतलावा ॥
सुरति सब्द कबीरहि खेला। सार सब्द मत अगम अकेला ॥
सुरति सत्त नाम कियौ सैला। सुरति सार सब्द करै मेला ॥
निःअच्छर सोइ आदि अमेला। कहिये सार सब्द तेहि खेला ॥
जो जो संतन कही अगारा। सो सो दास कबीर पुकारा ॥
या में भर्म न कीजे भाई। संत द्रोह नीच ऊँच न गाई ॥
संत को नीच ऊँच बतलावै। आद अरु अंत नर्क गति पावै ॥
संत देस गति अगम बखाना। फूलदास तुम राह न जाना ॥

चौका पंथ ये हाट बजारा । चौका संत पंथ गति न्यारा ॥
फूलदास सुनि सीतल भइया । तुलसी स्वामी अगम सुनइया ॥
हम तो पंथ भेष में भूला । तुम कहा सार भेद पद मूला ॥
फूलदास ऐसी बिधि बोला । तब हम अपनि दीन गति खोला ॥
तुलसि निकाम संतन कर चेरा । संत कृपा से अगम पद हेरा ॥
संत चरन परसादी पाई । ता से सब कहै तुलसि गुसाँईं ॥
सब मिलि कै पुनि कहै गुसाँईं । मैला मन मत बुद्धि न पाई ॥
मैं किंकर संतन कर दासा । संत चरन बिन और न आसा ॥
दास कबीर संत है स्वामी । उन सम फूलदास को जानी ॥
तुम साधू हो चतुर सुजाना । तुलसी जानौ दास समाना ॥
मैं साधन कर दास बिचारा । संत चरन की लागौ लारा ॥
दीन जानि किरपा करि हेरा । वे दयाल सब कीन्ह निबेरा ॥
तुमहूँ साध दया के स्वामी । फूलदास तुम चरन नमामी ॥
भूल न मोरी अचरज मानौ । मैं तुम्हरे चरनन लपटानौ ॥

॥ फूलदास । चौपाई ॥

फूलदास कहै स्वामी सूझा । है कबीर तुलसी नहिं दूजा ॥
मैं महंत मन मान निकामा । मैं मति नीच न तुमको जाना ॥
हाथ चरन पर तुरत चलावा । दीन होय सिर चरन गिरावा ॥

॥ तुलसी साहिब । चौपाई ॥

तुलसी धाइ पाँइ को लीन्हा । चरन सीस तेहि आपन दीन्हा ॥
तुलसी कहै ऐसी नहिं कीजे । कृपा चरन अपना मोहिं दीजै ॥
फूलदास बिधि कैसी भाखी । दीन साधना क्या कहुँ जा की ॥

॥ प्रश्न फूलदास । चौपाई ।

फूलदास कहे अंध अचेता । तुलसी स्वामी दीन्ही चेता ॥
मोरा मन मैला अति नीचा । ये महंत मत मन सम कीचा ॥
मोरी मति पर दृष्टि न दीजे । फूलदास अपना करि लीजे ॥
तुम्हरे चरन माहिं निरबारा । बिना चरन नहिं होइ उबारा ॥

जो कबीर खो तुम ही स्वामी । दया करहु मोहिं अंतरजामी ॥
मैं अपनी गति कस कस गाऊँ । सुरति न छाँड़ै तुम्हरा पाऊँ ॥
एक बात मोरे मन आई । भाखौ स्वामी तुलसि गुसाँई ॥
है सरीर में बीर कबीरा । सात दीप नौ खंड अमीरा ॥
एसी साखि कबीर पुकारा । बूझौ यह बिधि कौन बिचारा ॥
या को भेद भर्म मोहिं आवा । भाखौ स्वामी भर्म नसावा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब । चौपाई ॥

फूकदास सुनिये दै काना । या का भाकूँ सकल बिधाना ॥
धरमदास मनहीं को जानौ । काया बीर कबीर बखानौ ॥
धिधि कबीर संबाद बखाना । धरमदास मन तुलसी जाना ॥
काना बीर मन कहि संबादू । ये कबीर मुख भाखी आदू ॥
सातौ दीप कबीर समाना । सो कबीर मन माहिं भुलाना ॥
मन भूला इंद्री सँग साथा । काया बीर देंह में राता ॥
सात दीप नो खंड समाई । रहत कबीर भर्म उपजाई ॥
तन सँग कर्म माहिं किया बासा । उपजै बिनसै पुनि पुनि नासा ॥
तन सँग पाइ हिये रहै सोगा । उपजै बिनसै दुख सुख भोगा ॥
मन से इंद्री बास उड़ाई । सो मन धर्मदास है भाई ॥
काया बीर जो धर्म न जानै । होइ कबीर आदि पहिचानै ॥
सुरति सैल जो चढ़ै अकासा । फोड़ि अकास अमर पद बासा ॥
सत्त गहै सतगुरु पद पासा । सत्त लोक सत पुरुष निवासा
ता के परे अगमपुर धामा । देखै लोक अलोक अनामा ॥
सत कबीर होइ वहँ को जाई । और कबीर भौ भटका खाई ॥
सत कबीर जाहि कर नामा । चढ़ै सुरति सतलोक समाना ॥
सतगुरु सत्त पुरुष है स्वामी । सो गुरु करै चला परमानी ॥
सतगुरु सत्त पुरुष है सैला । वो कबीर सतगुरु का चेला ॥
वो कबीर जेहि राह बतावै । सुरति सैल सोइ अगम लखावै ॥
वो कबीर भौ पार लगावै । और कबीर भौ भटका खावै ॥

और गुरु चेला झूठ पसारा। दोनों बूड़े भौजल धारा ॥
सतगुरु सत्तपुरुष की बाटा। चेला चढ़ै सुरति से घाटा ॥
सोइ चेला है पद परवाना। और सगरा जग निगुरा जाना ॥
कनफूका से काज न होई। दोनों जाहिं नर्क में सोई ॥
सत्त सोई गुरु गगन प्रकासा। जा से मिटै काल की त्रासा ॥
गगन चढ़ै सोइ सतगुरु पाई। नहिं तो चेला निगुरा भाई ॥
गगन चढ़ै गुरु परसै आई। चेला से पुनि गुरु कहाई ॥
सत्त कबीर ताहि कर नाईं। काया कबीर को राह बताई ॥
कनफूका गुरु जग ब्यौहारा। उनसे न उतरै भौजल पारा ॥
सतगुरु सत्त कबीरहि पावै। चौका की बिधि बिधी बतावै ॥
सुरति सब्द की डोर लखावै। चौके से चौथा पद पावै ॥
सब्द सोर जो उठै अखंडा। सुरति राह से चढ़ि गई डंडा ॥
होवै सत्त पुरुष पद मेला। सो कबीर सतगुरु का चेला ॥
सो कबीर चौका बिधि जानै। चौथे पद की राह बखानै ॥
चौका बिधि भिनि भिनि बतलावै। पंथ राह सतगुरु दरसावै ॥
सूरत चढ़ै पंथ जब पावै। चौका पंथ राह सोइ आवै ॥
ये चौका कब्बीर बतावा। चौका राह रीति समझावा ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

दोहा--फूलदास बिनती करै, तुलसी स्वामी साथ।
चौका बिधि बतलायऊ, कस कस बिधि बिख्यात ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

दोहा--फूलदास बिधि बिधि सुनो, चौका बिधि सब सार।
जो कबीर मुख भाखिया, सो बिधि हम निरबार ॥

॥ चौपाई ॥

चौका बिधि काया में गाई। जो कबीर ने कही लखाई ॥
सिलिपिलि दीप जलखंडी राजा। ये सब बिधि काया में साजा ॥
पाँच फूल नरियर के गावा। सो सब काया माहिं लखावा ॥

सतगुरु मिलै तो भेद लखावै। नरियर मोड़त बास उड़ावै॥
बहुतक नरियर मोड़ेव भाई। पत्थर पर फोड़ेव तुम जाई॥
नरियर मोड़ेत बास उड़ाई। तुम ने गंध बास ठहराई॥
या से भेद मिल नहिं भाई। ढूँढ़ौ बनिये हाट बिकाई॥
अब वो पान का भाखौं लेखा। पान परे पर आवै न पेखा॥
तुम बरई का पान मँगावा। बीरा करि करि ताहि खवावा॥
बीरा पान कबीर लखावा। सोई पान घट माहिं बतावा॥
सतगुरु मिलै पान पर आना। बिन सतगुरु कोइ राह न जाना॥
मेवा आठ बखाने जोई। वह अठमेवा पुरुषै होई॥
सत कबीर ऐसी बिधि भाखा। मेवा फल लीन्हे सिष साखा॥
काया पूर जोति है ताई। तुम कपूर बनिये से लाई॥
इंद्री पाँच बासना नासा। पाँचौं बासन तन में बासा॥
तुम लीन्हा ताँबा और काँसा। या से भूले अगम तमासा॥
पुङ्गीफल सुपारी गाई। स्वाँसा पवन चले तेहि माईं॥
सो पारी पारी पद जाई। तुम बनिये की हाट मँगाई॥
सेते बस्तर बास बतावा। तुम बजार से कपरा लावा॥
उन चंदा दर तानि बतावा। तुम घर कपरा बाँधि तनावा॥
उन तन्दुल सेर सवा बतावा। तुम चौके चाँवल मँगवावा॥
कदली पत्र छेदन उन कहिया। तुम केले के खंभ गड़इया॥
सेत मिठाई उन बतलाई। तुम गुड़ मीठा खाँड़ मँगाई॥
नौ के तम चौका चिन्हवावा। तुम सगरा घर जाइ लिपावा॥
आवै रति उन साज बतावा। तुम दीपक की आरति लावा॥
पाँचौ सब्द अखंडित कहिया। तुम कँजरी पर सब्द सुनइया॥
पाँच सब्द का कहौं बिधाना। न्यारा न्यारा ठाम ठिकाना॥
सत्त सब्द पहिले परवाना। सो कोइ साधू बिरले जाना॥
सत्त सब्द सतलोक निवासा। जहँवाँ सत्तपुरुष कर बासा॥

दूजा सब्द सुन्न के माईं । तीजा अच्छर सब्द कहाई ॥
चौथा ओंकार बिधि गाई । पंचम सब्द निरंजन राई ॥
चढ़ि ब्रह्मंड फोड़ असमाना । सुरति सब्द में लगै निसाना ॥
ताहि पार सतलोक बिराजा । अखंड सब्द ता ऊपर गाजा ॥
मिलै संत कोइ भेद बतावै । तब वोहि पंथ संत से पावै ॥
दीन होइ गरुवाई डारै । संत कृपा से उतरै पारै ॥
पंथी भेष टेक नहिं राखै । सुरति चीन्ह कै द्वारा ताकै ॥
चौका काया कबीर बतावा । बोली चीन्ह भेद जिन पावा ॥
जो समान चौका कर साजा । सो समान तन माहिं बिराजा ॥
जो जो बस्तु चौका में गाई । भिनि भिनि घट भीतर दरसाई ॥
अंतर घट जो चौका कीन्हा । मरम सत्तलोक सोइ चीन्हा ॥

॥ छन्द ॥

चौका बिधि गाई भाखि सुनाई, जो कबीर मुख आप कही ।
तुलसी सब भाखी देखा आँखी, जब कबीर की साखि दई ॥१॥
घट भीतर जाना भेद बखाना, फोड़ि निसाना पार गई ।
अंतर गति गाई भेद सुनाई, तन भीतर बिधि बात कही ॥२॥
देखा सतलोका अगम अलोका, चौका चौथे पार गई ।
येहि बिधि हम भाखा नैनन ताका, सेत पुरइन तन तार लई ॥३॥
तोरा तन ताला खोलि किवारा, अगम निगम का भेद कही ।
तुलसी कहै साँची यह बिधि बाँची, सब्द सुरति गुरु गैल गई ॥४॥

॥ मंगल ॥

सतगुरु मारग चीन्ह दीन दिल लाइ कै ।
बूझै अगम की राह पाइ पद जाइ कै ॥१॥
दृग पर चौका पान जानि जब पाइये ।
नरियर सीस सँवारि सार समझाइये ॥२॥

तत मत गुन हैं तीनि सो तिनुका तोरिया ।
सुरत निरत निज नैन नारियर मोरिया ॥३॥
सूरति चढ़ै असमान पोढ़ि[1] सुर्त डोरि है ।
दीन्हा दीनदयाल काल सिर फोड़िहैं ॥४॥
इंद्री बासन पाँच बासना जाइया ।
अठमेवा है पुरुष बाट तब पाइया ॥५॥
काया मद्धे पूर कपूर जनाइया ।
पाँच तत्त तन अगिनि जोति दरसाइया ॥६॥
होत जोति उँजियार पार स्रुत से लखौ ।
सार सब्द सत द्वार लार स्रुत से पकौ ॥७॥
मन बैठक है बास स्वाँस सुन से भई ।
पान सुपारी सेत सोई चौका कही ॥८॥
गगन चढ़ै असमान चदरवा तानिया ।
सेत माहिं है स्याम पान सोइ आनिया ॥९॥
नातम द्वार लिपाइ सोई नौ द्वार है ।
अष्ट कँवल दल फूल मूल सोइ सार है ॥१०॥
येहि बिधि चौका चार सार सोइ भाखिया ।
और चौका जग रीति चित्त नहिं राखिया ॥११॥
येहि बिधि चौका चाह थाह जब पाइया ।
अगम चढ़े सोइ संत पंथ दरसाइया ॥१२॥
धरमदास धरि ध्यान सुरति समझाइया ।
सुरति फोड़ असमान सब्द जब पाइया ॥१३॥
अटल बयालिस बंस राज अस गाइया ।
या को भाखूँ भेद भाव दरसाइया ॥१४॥

---

(१) मु० दे० प्र० के पाठ में "फोड़ि" अशुद्ध है ।

चालिस सेर मन फेर इकतालिस स्रुत भई।
बिधी बयालिस सब्द अटल ऐसे कही ॥१५॥
जो कोइ मिलिहै संत भेद अस भाखिया।
मन चढ़ि सुरति सँवारि सब्द में राखिया ॥१६॥
सुरति सब्द मन मेल सैल समझाइया।
अटल बयालिस बंस राज अस गाइया ॥१७॥
तुलसी भाखा भेद भाव दरसाइया।
चौका कीन्ह कबीर हंस मुकताइया ॥१८॥

सोरठा--तुलसी कहै पुकार, फूलदास चौका बिधी।
ये गति तनहिं बिचार, जो कबीर चौका कहा ॥ १ ॥
चौका चार चिताव, सुरति सब्द तुलसी कहै।
दीन लीन मन भाव, भेद संत दरसावही ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

अस चौका कब्बीर पुकारा। पुरइनि पात पर साज सँवारा ॥
जो जल पुरइनि बूझ न लावौ। तन में पुरइनि खोज लगावौ ॥
ता पर बैठि करौ चित चौका। सूरति चढ़ै मिटै मन धोका ॥
जब कोइ संत सुरति लखवावै। पुरइनि सेत सत चौका पावै ॥
पुरइनि पात नभ गगन अकासा। पावै सोइ सतगुरु का दासा ॥
ता कर भेद लखावै संती। पावै सोई कबीरा पंथी ॥
पान फोड़ि कै सुरति चढ़ावै। सहस कँवल दल अंदर पावै ॥
दोइ दल कँवल द्वार में ताकै। सुन की धुन्न सुरति से राखै ॥
धरती ऊपर तरे अकासा। ता के चारि कँवल मधि बासा ॥
वा के बीच नाल नल जानी। धधकै जोर गगन से पानी ॥
ता नाली चढ़ि सुरति सँवारा। निरखै पिंड ब्रह्मंड पसारा ॥
ता के परे अगमगढ़ घाटी। हिये दृग नैन निरखिये बाटी ॥

जोड़ा कँवल दोइ दल चारी । तिरबेनी सोइ संत पुकारी ॥
सुरति अन्हाइ सुन्न के पारा । ता के परे अगम का द्वारा ॥
पुनि सुन महासुन्न के पारा । सत्त लोक सत पुरुष अपारा ॥
सूरति सतगुरु मिलै ठिकाना । तुलसी चौका भाखि बखाना ॥
सूरति सिष्य सब्द गुरु पावै । चौथा पद सतगुरु गति गावै ॥
सोरठा--तुलसी समझ बिचार, फूलदास चौका बिधी ।
ये गति मति है सार, जो कबीर चौका कहा ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास चौका बिधि जाना । ये कबीर तन माहिं बखाना ॥
चौका तन के माहिं सँवारा । ये कबीर बिधि माहिं पुकारा ॥

॥ प्रश्न फूलदास । चौपाई ॥

तुलसी राह पंथ बिधि गाई । सो सब समझ परा मन माईं ॥
बिन सतसंगति राह न पावै । सत्त सत्त तुलसी गोहरावै ॥
मन महंत कछु कान न आवै । अंत बाद नरकै लै जावै ॥
ये सब भूल भाव हम चीन्हा । चौका पट्टा जगत अधीना ॥
चौका से कछु काज न होई । वे चौका औरै बिधि जोई ॥
तुलसी स्वामी चौका भाखी । बिधि बिधान बिधी कहि जा की ॥
काया माहिं रीति बतलाई । सोइ चौका सत सत्त चिन्हाई ॥
ये सब और पखंड पसारा । भौजल खलक खानि की धारा ॥
जो कबीर चौका बिधि गाई । सो स्वामी तुम समझ सुनाई ॥
चौका काया माहिं पुकारा । जस कबीर कहि तुलसी सारा ॥
खूब खूब मन में ठहरानी । तुलसी बचन सत्त कर मानी ॥
तुलसी कबीर भेद नहिं दूजा । हमरी बुधि नैनन अस सूझा ॥
जग अजान कछु मरम न जाना । डिंभि पखंडि भेष भरमाना ॥
ये जग रीति जीति नहिं पावै । भेष पंथ सब पोल चलावै ॥
माला कंठी सेली माहीं । भूले पंथ भेष यहि राही ॥

जो कोइ मंत्र जंत्र को जानै । उन को बड़े संत करि मानै ॥
जो रथ गाड़ी बैल चलावै । जग सोइ बड़े साध ठहरावै ॥
गाय भैंस और खेती होई । चेला गाँव महंती सोई ॥
माया मोह बँधा संसारा । जिन को साधू कहै लबारा ॥
जग अंधा अंधा भया भेषा । ये दोउ पंथ इष्ट की टेका ॥
जग में इष्ट टेक लौ लावै । भेष टेक पंथी गोहरावै ॥
जग अंधा पुनि भेष भुलानो । ये सब काल राह रस जानो ॥
जहँ लग अंत पंथ जग माईं । भूले फिरैं राह नहिं पाई ॥
चेला करैं द्रब्य के काजा । भोजन खान पान कर साजा ॥
येहि आसा बस फिरैं अयाना । बंधन जीव काल नहिं जाना ॥
जिनसे मुक्ति जगत सब माँगै । आपा सँग रह भोग न त्यागै ॥
जस जस रीति जगत की होई । तस तस साधू समझि बिलोई ॥
अस अस साध जगत में लेखा । जो कथि कही सो नैनन देखा ॥
संत रीति रस जगत न जाना । डिंभ करै तेहि संत बखाना ॥
संत दयाल दरस नहिं चीन्हा । उन बिन फिरै कर्म लौलीना ॥
वे दयाल के दरसन पावै । मुक्ति राह और अगम लखावै ॥
जिनके बड़े भाग जग माईं । नित प्रति संत चरन लौ लाई ॥
काल जाल और जम की फाँसी । दरसन संत कर्म भये नासी ॥
वे साधू बिरले जग माईं । जग जल में जस कँवल रहाई ॥
वे सज्जन सत साध कहावैं । उन की गति मति बिरले पावैं ॥
संत भेद भिनि कोउ कोउ जाना । भेष डिंभ सब भर्म भुलाना ॥
ये सब जग में कीन्ह दुकाना । या में जगत भेष लपटाना ॥
जीव लोक की राह नियारी । कृपा संत बिन पावै न पारी ॥
हम तो जनम बादि सब खोवा । समझि परी तब सिर धुनि रोवा ॥
बार बार नर देंह न पावै । ये तन दुरलभ सब गोहरावै ॥
जोगी ऋषी मुनी अरु देवा । तप जप जोग ज्ञान बहु सेवा ॥

पुनि निज नर देंही नहिं पाया । हम अबूझ तन बादि गँवाया ॥
अब ये समझि परा सब लेखा । भेष पंथ में कछू न देखा ॥
भेष पंथ मद राह अबूझा । सब अबूझ बस काहु न सूझा ॥
मान बड़ाई दोजख काजा । जिभ्या इन्द्री सब सुख साजा ॥
ये कबीर ने कहा पसारा । उन सब कीन्ह जीव निरबारा ॥
ना कोइ बूझी समझ बिचारा । इन सब कीन्ह दुकान बजारा ॥
ये दुकान से लोक जो जावै । तो सब जगत रहन नहिं पावै ॥
साँच झूठ सब परा निबेरा । चित्त चीन्ह नैनन से हेरा ॥
तुलसी बिधि बिधि सत्त बखानी । मन में ठीक ठीक पहिचानी ॥
तुलसी स्वामी संत सुजाना । अस अस बूझ सुनाई काना ॥
तन और प्रान छूटि सब जाता । ये पुनि भेद हाथ नहिं आता ॥
साखी सब्द अनेकन देखा । ग्रंथ कबीर अनेक बिबेका ॥
सो सब देखि देखि पचि हारी । बस्तु न पाई रहे अनारी ॥
सार भेद संतन ने जाना । सो ग्रंथन में नाहिं बखाना ॥
साखी सब्द पढ़ै जो कोई । बस्तु न पइहै सिर धुनि रोई ॥
कह्यो कबीर सार पद गुप्ता । परगट माहिं लखो सब थोथा ॥
ये तो संत गुप्त मत भाखी । ता की नकल ग्रंथ में राखी ॥
ढूँढ़ै अब या में अज्ञाना । पचि पचि मूरख भये हैराना ॥
ये सब ग्रंथ देखि हम भूला । साखी सब्द माहिं बहु भूला ॥
आँखी फार फार हम जोवा । जनम अकारथ बादहि खोवा ॥
सब्द साखि जो पढ़ि पढ़ि चलिहै । संत दृष्टि बिन कछू न मिलिहै ॥
जो कबीर मुख कहि कर भाखी । संत दृष्टि बिन परै न आँखी ॥
ता से संत चरन सिर दीजै । कारज और बात में छीजै ॥
जो कबीर ग्रथन में कहिया । सो तो भेद संत पै रहिया ॥
हम जूझे ग्रंथन के माईं । केहि बिधि हमरे हाथे आई ॥
संत सुरति चढ़ि गये जो पारा । पावै तिन से भेद नियारा ॥

जगत भेष नहिं भेद बिचारै। ये कहा समझै सार असारै॥
दीन होइ सतसंगति तौला। जा से सूझै बस्तु अमोला॥
तौलै दीन होइ निज दासा। सो स्रुति सार मिलै उन पासा॥
हम तो सरन संत कर लीन्हा। और बात नहिं आइ यकीना॥
जो कोइ लाख लाख समझावै। हमरे मन में एक न आवै॥
कहो को खोज सार कर दीन्हा। हम तो स्वामी तुलसी चीन्हा॥
संत कही और दास कबीरा। जो जो अगम पंथ पद धीरा॥
जिन जिन स्वाद पाइ पद हेरा। होइ हौं उन चरनन को चेरा॥
चरन लाग तुलसी के तीरा। उनहिं लखाया अद्भुद हीरा॥
अब कहुँ चित्त लगै नहिं भाई। तुलसी बस्तु अमोल लखाई॥
बार बार चरनन सिर नाई। करिहैं तुलसी मोर सहाई॥
अब तो पोढ़ पोढ़ कर पकड़ा। तुलसी चरनन में मन जकड़ा॥
और कहूँ मोहिं बोध न आवै। जो कोइ कोटि कोटि समझावै॥
समझि परा सब बात बिधाना। तुलसी बिन सूझै नहिं आना॥

दोहा--फूलदास बिनती करै, पुनि पुनि सरन तुम्हार।
मैं अचेत चेतन कियौ, तुलसि उतारयो पार॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

दोहा--फूलदास सज्जन बड़े, तुम चित मति बुधि सार।
संत चरन अब मन बस्यौ, पैहौ सतसंग सार॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास तुम साध सुजाना। तुम्हरी बुधि निरमल परमाना॥
दिन दोपहर भयौ मध्याना। अब परसादी करौ समाना॥
आटा चून चना कर होई। करौ प्रसाद भाजी सँग सोई॥
घीव न पास न पैसा होई। नोन मिरच चटनी सँग सोई॥
किरपा कर परसाद बनाई। पुनि वा को सब भोग लगाई॥

॥ फूलदास उवाच । चौपाई ॥

हम नहिं अपने हाथ बनैहैं । सीत उचिष्ट चरनामृत पैहैं ॥
तुलसी उठि परसाद बनावा । भया प्रसाद साध सब आवा ॥
सब साधू मिलि भोग लगाई । भोजन करि आसन पर आई ॥
फूलदास बंदगी सिर नाई । सीस टेक कर परसे पाँई ॥
हाथ जोड़ कर बिनती लाई । स्वामी मोहिं भव पार लगाई ॥
हमहूँ दीन दंडवत कीन्हा । सीस नवाइ चरन पुनि लीन्हा ॥

॥ राधास्वामी ॥

संतबानी की संपूर्ण पुस्तकों का संशोधित सूचीपत्र, १६८

पुस्तक	मूल्य
गुरु नानक की प्राण संगली भाग १	८)
गुरु नानक की प्राण संगली भाग २	८)
संत महात्माओं का जीवन चरित्र संग्रह	४)
कबीर साहिब का अनुराग सागर	६)
कबीर साहिब का बीजक	६)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	१०)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग १	५)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग २	५)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग ३	३)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग ४	२)
कबीर सा० की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते, झूलने	३)
कबीर साहिब की अखरावती	२)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	५)
तुलसी सा० हाथ० की शब्दावली भाग १	८)
तुलसी सा० भाग २ पद्मसागर सहित	८)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	८)
तुलसी साहिब का घटरामायण भाग १	१०)
तुलसी साहिब का घटरामायण भाग २	१०)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	१३)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	८)
सुन्दर बिलास	८)
पलटू साहिब भाग १—कुण्डलियां	५)
पलटू सा० भाग २—रेखते, झूलने आदि	५)
पलटू सा० भाग ३—भजन, साखियां	५)
जगजीवन साहिब की बानी भाग १	६)
जगजीवन साहिब की बानी भाग २	६)
दूलनदास जी की बानी	२)
चरनदास जी की बानी, पहला भाग	५)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	५)
गरीबदास जी की बानी	८)

- रैदास जी की बानी
- दरिया साहिब बिहार (दरिया सागर)
- दरिया साहिब के चुने पद और साखी
- दरिया साहब मारवाड़ वाले की बानी
- भीखा साहिब की शब्दावली
- गुलाल साहिब की बानी
- बाबा मलूकदास जी की बानी
- गुसाइं तुलसीदास जी की बारहमासी
- यारी साहिब की रत्नावली
- बुल्ला साहिब का शब्दसार
- केशवदास जी की अमीघूंट
- धरनीदास जी की बानी
- मीराबाई की शब्दावली
- सहजोबाई का सहज-प्रकाश
- दयाबाई की बानी
- संतबानी संग्रह, भाग १ साखी [प्रत्येक महात्माओं के जीवन-चरित्र सहित]
- संतबानी संग्रह भाग २ शब्द [ऐसे महात्माओं के जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]
- लोक परलोक हितकारी

संत महात्माओं के चित्र

- तुलसीदास
- कबीर साहब
- दादू दयाल
- मीराबाई
- दरिया साहब
- मलूकदास
- तुलसी साहब हाथरस वाले
- गुरु नानक

नोट :—पुस्तकों के दाम में डाक-महसूल, रजिस्ट्री, पेकिङ्ग और मनीआर्डर फीस शामिल नहीं वह अलग से लिया जायेगा। पुस्तकों के आर्डर के साथ आधी रकम पेशगी मनीआर्डर से भे अति आवश्यक है। मनीआर्डर कूपन पर पूरा नाम, पता, डाकखाना, मुकाम व जिला साफ़- हरफों में लिखें तथा जो पुस्तक मंगाना हो उसका नाम व संख्या भी अवश्य लिखें। यदि अ पुस्तकें मंगवाना हो तो अपने पास के रेलवे स्टेशन का नाम अवश्य लिखें।

पता :— **मैनेजर, बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स**

१३, मोतीलाल नेहरू रोड, प्रयाग

फोन नं० ५४०